RNI : UPHIN/2009/30450 ISSN : 2319-2178 (P) ISSN : 2582-6603 (O)

अगस्त, 2022

वर्ष : 14, अंक : 03, पूर्णांक : 37

पीयर रिव्यूड जर्नल

मधुराक्षर

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण का उपक्रम

संपादक

डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री

RNI : UPHIN/2009/30450 ISSN : 2319-2178 (P) ISSN : 2582-6603 (O)

संरक्षक परिषद

श्रीमती चित्रा मुद्गल
प्रो. गिरीश्वर मिश्र
प्रो. अशोक सिंह
प्रो. हितेंद्र मिश्र
डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय
डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

संपादक परिषद

डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री (संपादक)
श्री पंकज पाण्डेय (उप-संपादक)
श्रीमती शालिनी सिंह (उप-संपादक)
डॉ. चुकी भूटिया (उप-संपादक)
डॉ. ऋचा द्विवेदी (उप-संपादक)
डॉ. आरती वर्मा (उप-संपादक)

परामर्श-विशेषज्ञ परिषद

डॉ. दमयंती सैनी
डॉ. दीपक त्रिपाठी
श्री मनस्वी तिवारी
श्री राम सुभाष
श्री जयकेश पाण्डेय
श्री महेशचंद्र त्रिपाठी
डॉ. शैलेष गुप्त 'वीर'
श्री मृत्यंजय पाण्डेय
श्री जयेन्द्र वर्मा

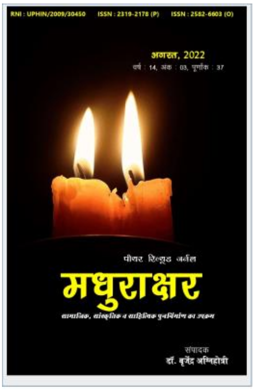

आवरण : **अनामदास**

संपादक
डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री
सहायक प्रोफेसर (हिंदी)
सामाजिक विज्ञान एवं भाषा संकाय
लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, पंजाब

मधुराक्षर

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण का उपक्रम

अगस्त, 2022
वर्ष : 14, अंक : 03, पूर्णांक : 37

पूर्णतः अव्यावसायिक एवं अवैतनिक प्रकाशन
पूर्णतः अव्यावसायिक एवं अवैतनिक प्रकाशन

ई-संस्करण

सहयोग

एक प्रति : 30 रुपये

व्यक्तियों के लिए

वार्षिक : 110 रुपये
त्रैवार्षिक : 300 रुपये
आजीवन : 2500 रुपये

संस्थाओं के लिए

वार्षिक : 150 रुपये
त्रैवार्षिक : 450 रुपये
आजीवन : 5000 रुपये

विदेशों के लिए (हवाई डाक)

एक अंक : 6 $
वार्षिक : 24 $
आजीवन : 300 $

सदस्यता शुल्क का भुगतान भारतीय स्टेट बैंक की किसी शाखा में खाता क्रमांक- **10946443013** (IFS Code-SBIN0000076, MICR Code - 212002002) या 'मधुराक्षर' के बैंक खाता क्रमांक **31807644508** (IFS Code- SBIN0005396, MICR Code- 212002004) में करें।

मधुराक्षर में प्रकाशित सभी लेखों पर संपादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री की सत्यता व मौलिकता हेतु लेखक स्वयं जिम्मेदार है। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके विरुद्ध कार्यवाही केवल फतेहपुर न्यायालय में होगी।

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामी
बृजेन्द्र अग्निहोत्री द्वारा स्विफ्ट प्रिन्टर्स, 259, कटरा अब्दुलगनी, चौक, फतेहपुर से मुद्रित कराकर जिला कारागार, मनोहर नगर फतेहपुर (उ.प्र.) 212601 से प्रकाशित।

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण की पत्रिका

मधुराक्षर

अगस्त, 2022

संपादक
डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

संपादकीय कार्यालय
जिला कारागार के पीछे, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212 601

E-Mail :
madhurakshar@gmail.com

Visit us :
www.madhurakshar.com
www.madhurakshar.blogspot.com

www.facebook.com/agniakshar

चलित वार्ता
+91 9918695656

एक नज़र में...

संपादकीय

अपनी बात	**बृजेन्द्र अग्निहोत्री**	05

कथा–साहित्य

रिश्तों का गोलगप्पा!	**श्यामल बिहारी महतो**	08
कर्ज़ा	**महेश शर्मा**	19
कटी पतंग	**सविता शर्मा 'अक्षजा'**	28
समझौता एक्सप्रेस	**समीर उपाध्याय 'ललित'**	33
सौदा	**महेश कुमार केशरी**	36
धूप का टुकड़ा	**भावना ठाकर 'भावु'**	39

कथेतर गद्य

राजनीतिक संचार में फेसबुक और ट्वीटर : राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों की विचारधारा और लोकप्रियता
पूनम, प्रो. विक्रम कौशिक 42

सत्ता के विकासात्मक आईने में मातृसत्ता का रूप
डॉ. अंकित अभिषेक 56

हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथा लेखन
डॉ. अहिल्या मिश्रा 62

कृति–चर्चा

आगे से फटा जूता (कहानी–संग्रह), राम नगीना मौर्य
अंजनी श्रीवास्तव 79

काव्य सुरसरि

विजय कनौजिया	83
कैलाश मनहर	84
नवीन माथुर	87

PROJECT REPORT

SLUMS AND MALNUTRITION IN INDIA
Ashima, Abhishek Soni, Bontha Evangelin, Dr. Brijendra Kumar Agnihotri 88

संपादकीय

अपनी बात

परिवार सामाजिक जीवन की प्रारंभिक व महत्वपूर्ण इकाई है। परिवार ही व्यक्ति को सामाजिक प्राणी बनता है, क्योंकि परिवार से ही व्यक्ति को समाज व संस्कृति का ज्ञान होता है। संस्कारों को परिवार द्वारा ही व्यक्ति में संचारित किया जाता है, जिनके प्रभाव से उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। परिवार व्यक्ति की मनः सामाजिक इच्छाओं का केंद्र तथा उसकी प्रारंभिक पाठशाला होता है, यहाँ वह जो भी सीखता है, उसका प्रभाव स्थाई और अमिट होता है। व्यक्ति को परिवार के माध्यम से ही समाज द्वारा बनाये गए नियमों, परम्पराओं तथा प्रथाओं का बोध होता है। इन सबके बाद ही व्यक्ति को समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का बोध होता है और वह सामाजिक प्राणी का चोला धारण करता है।

परिवार एवं विवाह को अगर एक सिक्के के दो पहलू कहें तो गलत नहीं होगा, क्योंकि इन दोनों का अस्तित्व एक–दूसरे पर निर्भर करता है। विवाह एक ऐसा सम्बन्ध है जिसके उपरांत ही परिवार की नींव पड़ती है। हिन्दू परिवार में विवाह एक धार्मिक कृत्य माना जाता है। हिन्दू संस्कृति के अनुसार विवाह दो आत्माओं का ऐसा पवित्र बंधन है जो जन्म–जन्मान्तर तक चलता है। इसके विपरीत मुस्लिम परिवार में विवाह या निकाह एक विशेष प्रकार का सामाजिक समझौता होता है। इसका उद्देश्य घर बसाना व संतानोत्पत्ति आदि होता है।

भारतीय परिवेश में विवाह व परिवार आदर्श रहे हैं। विवाह दो व्यक्तियों को तो जोड़ते ही थे, इनकी भूमिका परिवार को जोड़ने व समाज को संतुलित–संयमित रखने में अहम रही है। वास्तव में विवाह सम्बन्ध के कारण ही भारतीय समाज उच्छृंखलता से बचता रहा है, ऐसा मानना है। भूमंडलीकरण और आधुनिकता की लहर का प्रभाव भारतीय परिवारों एवं वैवाहिक संबंधों में भी स्पष्ट देखा जा सकता है।

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण परिवार का आकार परिवर्तित होता जा रहा है। परिवार के अधिकांश सदस्य आजीविका की तलाश में नगरों–शहरों की ओर आते हैं और यहीं के होकर रह जाते हैं। परिवार एवं विवाह में अनेक बदलाव आये हैं, इनमें से कुछ सकारात्मक हैं तो कुछ नकारात्मक। पहले परिवार अपने कार्यों के लिए किसी पर निर्भर नहीं था। परिवार के सदस्य सामाजिक नियमों, परम्पराओं व संस्कार के आधार पर सभी पारिवारिक–कार्य संपन्न करते रहे हैं। आज परिवार अपना मुख्य कार्य अर्थात संतानोत्पत्ति भी अस्पताल या सहयोग के बिना नहीं कर पाता। परिवार के सदस्य पहले विभिन्न संस्कार तथा विवाह का निर्धारण करते थे। केवल अपवादस्वरूप ही व्यक्ति अपने संस्कारों (वैवाहिक) का चयन कर पाता था। अब स्थितियां पलट रही हैं। आज के समय अपवादस्वरूप ही पारिवारिक सहमति से विवाह हो पा रहे हैं। महानगरों में तो पाश्चात्य सभ्यता ही हावी है। 'लिव इन रिलेशनशिप' और 'कान्ट्रेक्ट मैरिज' की परम्परा भी हमारे समाज में छाती जा रही है।

पहले परिवार का संचालन घर या परिवार का बड़ा सदस्य करता था और पारिवारिक सदस्य उसकी सभी बातों को स्वीकारते थे। लेकिन आज परिवार अर्थार्जन करने वाले व्यक्ति की इच्छा द्वारा संचालित होता है। संविधान द्वारा विवाह–विच्छेद को मान्यता मिलने के बाद परिवार की स्थिरता में भी कमी देखी जा सकती है। प्रेमचंद की प्रेमा, निर्मला परिवार को संयोजित करते देखी जा सकती हैं, लेकिन यह परिवर्तन साहित्य में भी हम स्पष्ट देख सकते हैं। मोहन राकेश की सावित्री (आधे–अधूरे) पूर्ण व्यक्ति की तलाश करती हर जगह दिख जाती है और यह कहते हुए भी कि 'सब एक जैसे हैं'।

परिवार एवं विवाह में पहले प्रेम और स्नेह का सर्वाधिक महत्व होता था। अब इसका स्थान स्वार्थता ने ले लिया है। जन्म–जन्मान्तर का सम्बन्ध अब जरा–सी बात में तोड़ दिया जाता है। पहले परिवार की स्थिरता और एकजुटता आत्मीयता और स्नेहवश होती थी, अब केवल मतलब (स्वार्थ) ही दो सदस्यों को जोड़ सकता है। परिवार एवं विवाह में आ रहे यह परिवर्तन पश्चात्य सभ्यता के प्रभाव व विलासिता की ओर आकर्षण के कारण भी हो रहे हैं। आज का व्यक्ति आरामतलब

हो गया है। जिम्मेदारियां वह वहन नहीं करना चाहता या वहन कर पाना उसके वश में ही नहीं है। आज के व्यक्ति की मानसिकता को प्रो. होडार्ड के शब्दों से स्पष्ट समझा जा सकता है– ''आज के माता–पिता एक बेबी की अपेक्षा एक बेबी आस्टिन को लेना अधिक पसंद करते हैं, क्योंकि बेबी आस्टिन एक कार है, वह आरामदायक होती है। जबकि बेबी अर्थात बच्चा अनेक उत्तरदायित्वों को बढ़ा देता है।''

तात्पर्य यह है कि आज का व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों से बचना चाहता है। वह जीवन का उपभोग केवल अपने लिए करना चाहता है। अधिकांश व्यक्तियों के लिए परिवार भी संतुष्टि का साधन बनता जा रहा है। यह संतुष्टि शारीरिक भी हो सकती है और मानसिक भी। परिवार में पहले जो प्रेम, सद्भावना व स्नेह आदि पाया जाता था, वह धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि परिवार एवं विवाह संबंधों में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं और एकाकी परिवारों की प्रकृति में तेजी से बदलाव आता जा रहा है, जिससे सामाजिक संरचना में परिवर्तन दृष्टिगत होने लगे हैं।

-डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कहानी

रिश्तों का गोलगप्पा!

श्यामल बिहारी महतो

देश के इतिहास में ऐसा पहली बार हो रहा था जब कोई थाना परिसर-पंचायत में तब्दील हो गया था। और ऐतिहासिक बनने जा रही इस महा पंचायत में जनता के चुने हुए जन-प्रतिनिधि की जगह न्याय की कुर्सी पर कानून का दारोगा थानेदार समीर मलिक पंच परमेश्वर का अलगू चौधरी के रूप में विराजमान थे। पूरा थाना परिसर शादी की मंडप की तरह सजा हुआ था और जमीन पर घास के ऊपर दरी बिछा दी गई थी। कौतूहल-कोलाहल से थाना परिसर गुंजायमान था। देखने-जानने वालों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। सोशल मीडिया पर लाइव टेलीकास्ट होने की बात ने मामले को रोचक और गंभीर बना दिया था। दूर से ही थाना परिसर मेला सा लग रहा था। देखना था वक्त किसके साथ खड़ा होता है और कौन ठिसुआ कर जाता है। वक्त ने बहुत बड़ा खेल रचा था। इसके साथ ही कई जिंदगियों का भविष्य दांव पर लग गई थीं।

प्रेम की कोख से जन्मे इस अनोखे और ऐतिहासिक फैसले का गवाह, गांव से लेकर शहर तक के लोग होने जा रहे थे। किसी थाने में इस तरह की पंचायत होते आज से पहले न किसी ने देखा और न सुना था। लोगों की उत्सुकता अपने चरम पर थी। हर कोई फैसले को लेकर उत्सुक थे।

इन सबसे रूबरू होता शेखर राजन अपने दोनों मासूम बच्चों के साथ थाने के बड़ा बाबू के ठीक सामने दरी पर कुछ सोचता कुछ याद

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

करता बैठा हुआ था। वहीं उसके बांयी तरफ शेखर की बूढ़ी मां तारा देवी जाने किस दुविधा में डूबी नजर आ रही थी।

उससे चार कदम दूरी पर रेणु राजन तनाव की चादर ओढ़े आत्ममंथन में डूबी हुई नजर आ रही थी।

रेणु जब से आई थी एक बार भी शेखर और बच्चों की तरफ नजरें उठा कर नहीं देखी थी। बच्चों ने भी जैसे मां को भूला दिया था। अभी तक एक बार भी उन्होंने मां की ओर हुलका-हुलकी नहीं किए थे। कल तक एक घर में और एक छत के नीचे रहते थे। आज सभी एक दूसरे के लिए अजनबी बने हुए थे। घटनाक्रम ने सबको चक्कर में डाल दिया था।

शेखर की बांहों में दोनों बच्चे दूबके से बैठे थे और खुद शेखर जीवन के सात सालों को याद करने बैठ गया था जो उसने रेणु के साथ बिताए। एक सप्तरंगी जीव! जिसमें जीने का जुनून सवार था! ढेरों सपने थे। एक दम सिनेमाई जैसा ...! वो पल और वो मुलाकात! जिसे मरते दम तक भुलाया नहीं जा सकता। ऐसा जान पड़ता जैसे सब कुछ कल की ही बात हो...!

कपड़ों की खरीदारी के बीच, अचानक से मॉल में रेणु और राजन का टकराना, फिर दोनों का एक दूसरे को 'सॉरी' बोलना, मुलाकात का सिलसिला शुरू होना! फोन नंबरों का आदान-प्रदान! फिर देर रात तक

श्यामल बिहारी महतो

तारमी कोलियरी सीसीएल में कार्मिक विभाग में वरीय लिपिक स्पेशल ग्रेड पद पर कार्यरत और मजदूर यूनियन में सक्रिय श्यामल बिहारी महतो भावप्रवण कथा–साहित्य के प्रणयन और सशक्त व्यंग लेखन के लिए जाने जाते हैं।

संपर्क : मुंगो, बोकारो, झारखंड
मो. : 6204131994
ईमेल : shyamalwriter@gmail.com

फोन पर बातें करना! कॉफी शॉप में शाम को दोनों का चाय पीना। फिर "कल मिलते हैं" कह अपने अपने घर जाना और फिर एक दिन "चलो कहीं बाहर घूमने चलते हैं" शेखर राजन का प्रस्ताव आना।

"कहाँ चलोगे..?" रेणु साहू का जिज्ञासा भरा सवाल उठना।

"जहाँ तुम्हें पसंद हो, पार्क.. हॉल फॉल..!"

"एक एक दिन सभी जगह चल..!" और रेणु खिलखिला उठी थी।

और अगली रविवारीय छुट्टी में बिरसा जैविक उद्यान ओरमांझी पार्क पहुंच जाना! घंटों बाहों में बाहें डाल दोनों का पार्क में मस्ती करना। हिरणों सी रेणु का कुलांचे भरना कितना रोमांचक और कितना हसीन पल था। लौटने पर-

"अच्छा तो हम चलते हैं!"

"फिर कब मिलोगे...!"

“अगली वीकेंड में हुंडरू फॉल" की घोषणा कर शाम होने के पूर्व अपने अपने घर पहुंच जाना! सब कुछ पवित्र और मिठास से भर जाना।

हुंडरू फॉल! प्रकृति का अद्भुत नजारा! मचलते जवां दिलों को जहाँ मिलता है सहारा! वीडियो ग्राफी! फोटो ग्राफी कर युवक-युवतियां अपनी भावनाओं को कैद कर लौटते हैं। एक यादगार पल लिए।

"हम शादी कब करेंगे-अब रहा नहीं जाता है यार...!" हुंडरू फॉल से निकलने के पूर्व युवाओं की भीड़ में ही रेणु साहू शेखर की गर्दन पर बाहें डाल झूल गई थी।

"जब तुम कहोगी ..!" शेखर ने रेणु को ऊपर उठा लिया था

" हिप! हिप! हुर्रे!" उपस्थित भीड़ ने नारे बुलंद किया।

"आज ..! अभी ..! यहीं !"

"और तुम्हारे माता-पिता! भाई बहन!”

जब मै राजी तो क्या करे मां-पिताजी!"

"कर लो यार ..! गोल्डन चांस मिस मत करो..!" भीड़ ने फिर आवाज दी।

"पर किसी को तो साक्षी होना चाहिए..!"

"ऊपर देखो..!" रेणु सीढीयों की ओर देखते हुए कहा।

"शिव मंदिर....!"

"शिव बाबा को साक्षी मानकर कहता हूँ। जब तक मेरी सांसे चलेगी। कभी एक पल भी तुम्हें अपने से दूर नहीं रखूंगा। कभी निराश होने नहीं दूंगा...!" और शेखर राजन ने रेणु साहू के गले माला डाल दिया।

" बाबा भोलेनाथ हमें माफ करें, माता पिता के अनुमति बिना हम दोनों शादी बंधन में बंध रहें हैं। भगवान के बिना भक्त रह सकते हैं लेकिन मोबाइल के बिना आदमी आज एक पल भी नहीं रह सकता है आज मैं इसी मोबाइल की कसम खाकर कहती हूँ। तुम्हारे बिना मैं जी नहीं सकूंगी...!" और रेणु ने दूसरी माला शेखर के गले में डाल। खुद उससे लिपट गई!

शिव मंदिर से बाहर दोनों ने कदम रखे तो रेणु की मांग सिन्दूर की लालिमा से जगमगा रही थी..!

"अब ...!" शेखर ने पूछा।

"सीधे मां की चरणों में...!"

शेखर ने सीधे मां को फोन कर,सारी बातें बता दी। मां ने इसकी सूचना बगल गांव में बिहायी बेटी को दे दी थी।

शाम को मां बेटी ने शेखर-रेणु का स्वागत बड़ी सादगी और सलीके से किया। रेणु को लगा नहीं कि वह ससुराल आई है। लगा मॉल से काम कर घर आई है।

तारा देवी ने तब कही थी- "इसकी हर तरह की हरकतें आज तक मैंने सहा अब तुम आ गयी, मुझे छुट्टी दो!" और तारा देवी उन दोनों के सिर सहलाने लगी थी।

रेणु तारा देवी की चरणों में झुक गई- "आप जैसी मां पाकर मैं धन्य हो गई!"

"भाभी मैं बगल के गांव में ही हूँ। भूल न जाना ...!" कह बबीता रेणु से लिपट गई थी।

रविवार को शेखर ने मित्र भोज का आयोजन रखा। सगे रिश्तेदारों के अलावे हार्डवेयर कंपनी में शेखर के साथ काम करने वाले और मॉल में रेणु के साथ काम करने वाली उनकी कई सहेलियां शामिल हुए। सबों ने एक स्वर में नव प्रेमी जोड़े को ढेरों शुभकामनाएं दी और खुशी खुशी चलते बने। रेणु के माता-पिता अनुपस्थित रहे ! पर रेणु मायूस नहीं हुई।

सप्ताह दिन बाद दोनों ने काम ज्वाइन कर लिए। दोनों एक ही शहर में जॉब कर रहे थे। सो आने-जाने का भी कोई प्रोब्लम नहीं ! शेखर

रेणु को सुबह मॉल में छोड़ जाता और शाम को लौटते समय पिकअप कर लेता। दोनों की जिंदगी चल पड़ी। दोनों खुश! दोनों मस्त! साल बाद एक प्यारा-सा बेटा हुआ। नाम रखा दीपक! घर में उजियारा छा गया। तारा देवी को एक खिलौना मिल गया। दिन भर दीपक को लौरी सुनाती रहती थी। चलती का नाम गाड़ी। दौड़ती का नाम जिंदगी ! आज के युवाओं का फिलिंग्स! शादी के चौथे साल में रेणु ने एक बेटी को जन्म दी। नाम रूपा रखा गया।

रेणु का प्रमोशन हो गया। सेल्स गर्ल से 'सेल्स मैनेजर' बन गई थी। उस दिन घर में एक पार्टी रखी गई थी। खाने-पीने की चीजें मौजूद थीं। दोस्तों ने खूब लुत्फ उठाये और चलते बने। देर रात शेखर ने रेणु से कहा- " रेणु तुम मुझे न मिलती तो पता नहीं मेरे जीवन का ठौर ठिकाना कैसा रहता। मेरी जिंदगी का रंग रूप किस हालत में होती! तुमने मेरे घर को स्वर्ग बना दिया है! आई एम वेरी हैप्पी रेणु ...!"

"तुमसे मिलकर ही मैंने जीना सीखा शेखर! आई लव यू शेखू !"

और फिर अनचाहे गर्भ की तरह वो मनहूस घड़ी आई। जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की होगी! जिसने मानव जीवन में एक जलजला-सा ला दिया। मानव निर्मित उस विपदा के आगे बड़े बड़े भगवान बौने साबित हुए और अपने-अपने घरों में छिप गए या फिर छिपा दिए गए- दरवाजे में ताले डाल दिए गए थे। परीक्षा की इस घड़ी में हताशा में डूबे मानुष्यों ने हिम्मत से अपने अपने कुनबे को बचाने वास्ते हाथ पैर मारना शुरू कर दिया था। कई मानव-महामानव के रूप में भी नजर आए। किसी ने सोचा न था कि अचानक से दुनिया में ऐसी आफत आ जाएगी। देखते देखते कोरोना के एक छोटे-से वायरस ने पूरी दुनिया को अपने चपेट में ले लिया। कोरोना ने विश्व में हाहाकार मचा दिया। इससे भारत भी अछूता न रहा और जब भारत अछूता न रह सका तो पटेल नगर का भेडमुका चौक कैसे अछूता रह पाता।

कोरोना की बढ़ती लहर देख केन्द्रीय सरकार ने आनन-फानन में 'लाक डाउन' की घोषणा कर दी। जो जहाँ थे वहीं फंस गए। कल कारखानों में ताले डाल दिए गए और मजदूर कर्मचारियों को सड़क पर छोड़ दिया। हॉल मॉल फॉल सब बंद कारखाने बंद और मजदूर सड़क पर नौकरियां गयी और पाबंदियां बढ़ गई सड़क के मजदूर पैदल घर की ओर निकल

पड़े। बस में जगह न मिले तो बस की छत पर चढ़ने लगे। रेल बंद तो लोग रेल की पटरियों पर चलने लगे-कुचले जाने लगे जैसे कीड़े मकोड़े केंचुए कुचले जाते हैं। बेकार लोग घर में बैठे बैठे बीमार पड़ने लगे। पति-पत्नी में तकरार बढ़ गया। हर घर के राशन दाल में कंकड़ बढ़ गया और चूल्हे हिलने लगे थे।

शेखर राजन की नौकरी गई और रेणु का मॉल बंद हो गया। घर में तनाव-घुटन का माहौल! खिच-खिच की शुरुआत! सब घरों की एक ही हालात! सब एक दूसरे को बोझ समझने लगे थे। शेखर के घर में भी छिन-भिन्न शुरू हो गया था। प्यार सिसकने लगा था- दूरियां बढ़ने लगी थी और बच्चे दुलार को तरसने लगे थे। छः माह में ही मन में छः हजार छेदें हो चुकी थीं । भात पेट की भूख मिटा देता पर तन की भूख! वो स्रोत वो तालाब ही जैसे सूख गया था। जो कभी दोनों के लिए समंदर हुआ करता था।

दिन महीने बीते। जीवन पटरी पर लौटी। फिर लोग रोटी रोजगार में निकल पड़े। दुकान मॉल खुल गया परंतु शेखर को नौकरी वापस न मिली। सुबह शेखर रेणु को मॉल तक छोड़ जाता और खुद जॉब की तलाश में निकल जाता पर बंद के छः माह में ही बहुत कुछ छिन्न-भिन्न हो चुका था। जॉब मिलना आसान न था। प्राइवेट जॉब और प्राइवेट लाइफ पार्टनर कभी टिकाऊ नहीं होते। शाम को घर लौटता तो चेहरे पर थकान और हताशा का सीमेंट-गारा का लेप चढ़ा सा होता। कभी खाता कभी बिना खाए चुपचाप सो जाता !

इसी बीच, सुहागिनों का वो पर्व आ गया। कहा जाता है कि इसे करने से पतियों के प्राण आयु लम्बी हो जाती है- पति सत्यवान बन जाता है ! अरे वही सावित्री वट वृक्ष पूजा ! शादी के बाद हर साल इस दिन शेखर रेणु को साड़ी लाकर देता था। इस वर्ष रेणु साड़ी खुद लेती आई थी। दूसरे दिन शाम को रेणु पूजा कर लौटी तो शेखर घर में नहीं था। जॉब को लेकर वह किसी दोस्त से मिलने चला गया था। देर रात को घर लौटा तो दरवाजे पर मां खड़ी थी। रेणु सो चुकी थी।

और अगले ही दिन शेखर के जीवन में विस्फोट हो गया था। बहुत शातिर दिमाग की घटना घटी थी। जिस कारण थाना परिसर आज महापंचायत में तब्दील हो गई थी। शेखर सुबह रेणु को छोड़ने मॉल गया

था । तभी रेणु बोली- "मैं आधार कार्ड लाना भूल गयी। उसकी जरूरत है! प्लीज़ ला दो...!"

शेखर वापस घर लौटा। परन्तु उसे ओरीजनल आधार कार्ड घर में नहीं मिला। जिरोक्स लेकर जब वह दूबारा मॉल पहुंचा तो रेणु मॉल में नहीं मिली। पूछताछ से भी कुछ पता नहीं चला। उसे किसी अनहोनी की आशंका सताने लगी थी। किडनैपिंग, बलात्कार और हत्याएं! आजकल हर अखबार भरा रहता है। नजदीकी थाने में मामला दर्ज करा दिया गया। मॉल के सारे सीसीटीवी कैमरों को खंगाल कर पुलिस चली गई। रेणु कहाँ गयी, किसके साथ गयी किसी को कुछ पता नहीं। सप्ताह दिन तक पुलिस को कोई सुराग हाथ नहीं लगा। रामायण-गीता की कसमें खाकर लोग झूठ बोलते हैं। रेणु ने शिव बूढ़ा बाबा के मंदिर में मोबाइल की कसम खाकर शेखर को पति स्वीकार किया था। एक दिन उसी मोबाइल ने पुलिस को सुराग दे दिया। उस दिन रात को दस बजे शेखर के मोबाइल पर रेणु का मैसेज घूसा- “मुझे ढूंढने की कोशिश मत करना। मैं तुम्हारे साथ खुश नहीं थी। इसीलिए साथ छोड़ा। बच्चों का ख्याल रखना...!"

शेखर ने तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दे दी ।

भोर मुहूर्त में ‘मन मयूर होटल’ में छापा मारा गया। रेणु एक युवक के साथ बरामद कर ली गई। जब उन दोनों को पुलिस जीप में डाला जा रहा था तो रेणु ने कहा था- "सर! चाहें तो आप मुझे सीधे जेल भेज दीजिए या फिर थाने ले चलिए। लेकिन भगवान के लिए मुझे उस घर में मत भेजिए जिसे मैं छोड़ आई हूँ।"

पुलिस उन दोनों को सीधे थाने ले आई और शेखर को भी थाने में आने को कह दिया गया था। सूचना अखबार-मीडिया को भी दे दी गई थी। इस वक्त मीडिया वाले लाइव टेलीकास्ट करने की तैयारी में था। आज की इस महापंचायत के मुखिया थानेदार समीर मलिक ने एक बार थाने के चारों ओर नजरें दौड़ाई फिर सामने की भीड़ से मुखातिब होते हुए कहा- "आज थाना परिसर में इस तरह की पंचायत क्यों बैठी है यह सब आप सबों को मालूम हो चुका होगा! रेणु राजन जो शेखर राजन की पत्नी है,सप्ताह दिन पहले शेखर को छोड़कर फरार हो गयी थी। ऐसा उसने क्यों किया सुनिएगा उसी के मुंह से। तो हम सीधे चलते है रेणु के पास..।"

"आपका नाम..?" रेणु से पूछा गया।

"रेणु राजन..!"

"बपौती नाम..!'

"रेणु साहू...!"

"आपने तो शेखर राजन के साथ प्रेम विवाह किया था, फिर साथ क्यों छोड़ दिया आपने ?"

"मैं उसके साथ खुश नहीं थी ...!"

"क्यों ? उसमें अब क्या खराबी आ गई ? क्या शराब पीने लगा है? मार पीट करने लगा है या फिर....!"

"ऐसा कोई ऐब नहीं है उनमें। बस मेरे लिए उसके पास समय नहीं था...!"

"मतलब सेक्स को आपने जीवन का परम सुख मान लिया और छः साल के प्यार भरा दाम्पत्य जीवन को ठोकर मार चल दी। दोनों मासूम बच्चों पर इसका क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा इस पर जरा भी नहीं सोचा- कैसी मां है आप ? " चुभती नजरों से देखा रेणु राजन को और आगे कहा - "अभी आप क्या चाहती है..? शेखर के साथ रहेगी या नये दोस्त रोहित शर्मा के साथ जायेंगी...?"

रेणु का मुंह न खुल सका!

"बोलिए। आज की यह पंचायत आप पर कोई जोर-जबरदस्ती नहीं करेगी। आप अपनी राय दीजिए आज की यह महापंचायत आपको आगे अपनी जिंदगी चुनने का पूरा हक देती है...!"

रेणु रोहित शर्मा की ओर देखने लगी थी। समीर मलिक ने इस बार सीधा हमला कर दिया- "उसे मत देखिए। वो आपकी नई पसंद हो सकता है लेकिन वो आपके जीवन के लिए एक सुन्दर धोखा है। आप इस शख्स के बारे में क्या जानती है ? दो माह पूर्व ही इसकी पुरानी गर्लफ्रेंड इसे लात मारकर चली गई। स्त्री बिना मर्द और गाय बिना सांड ज्यादा दिन अकेले नहीं रह सकता है। रोहित शर्मा भी सांड की तरह अकेला छटपटाने लगा था और तब आपके पीछे पड़ गया। और आपने बहुत जल्द उसे अपने करीब आने का मौका दे दिया-कॉफी हाउस में! रेणु जी आपने इसकी जॉब की पूरी जानकारी कर लेने के बाद ही इससे मित्रता बढ़ाई होगी। पर मेरी भी एक बात सुन लीजिए आप जिसे रोहित शर्मा का प्यार समझ रही

है वह प्यार नहीं, सिर्फ टाइम पास है। हाँ, रोहित शर्मा बैंक कर्मचारी है- सही है और अच्छी बात है, पर घर में इसकी शादी की बात चल रही है पता है आपको...!"

"सर आप मुझे बदनाम कर रहे है...!" रोहित शर्मा ने एतराज जताया।

"चुप रहो वरना सीधे अंदर डाल दूंगा। मैं थोड़ा दूजे किस्म का थानेदार हूँ। इसके पहले जहाँ था वहाँ भी मैंने दो पंचैती की थी ...!"

"हाँ तो मुहतरमा, आप कुछ कहना चाहेंगी या अब भी इसके साथ जाना पसंद करेंगी....! फैसला आपके हाथ में है....!”

"हाँ तो शेखर राजन! यही नाम है न आपका ?"

"जी हाँ सर..!" शेखर उठ कर खड़ा हो गया।

"आपकी पत्नी आपसे खुश नहीं हैं। आप पहले की भांति पत्नी को समय और शारीरिक सुख नहीं दे पा रहे थे। इसीलिए आपको छोड़कर चली गई। इस पर आपका क्या कहना है?"

"सर, मै जैसा पहले था आज भी वैसा ही हूँ। कोरोना की वजह से मेरा जॉब चला गया। इस कारण मैं थोड़ा अपसेट रहा। भाग-दौड़ में लगा रहा। परिवार को पूरा समय नहीं दे पा रहा था यह सच है! रेणु को मैंने कभी अपने से अलग नहीं समझा। अब जब वह मुझसे खुश नहीं है कि बात कही है तो यह जहाँ जिसके साथ जाना चाहे- जा सकती है। सदा खुश रहे- यही कामना करता हूँ...!" और शेखर शांत हो गया था, जैसे दौड़ता हुआ घोड़ा सहसा बैठ जाता है!

रेणु अंतर्द्वंद्व में घिर चुकी थी! उसका मन दो हिस्सों में बंट चुका था। एक छोर से आवाज आ रही थी- "रेणु मैदान साफ हो चुका है, लपक ले रोहित शर्मा को, जैसे कभी शेखर को लपकी थी। बैंक नौकरी है, लाखों डिपोजिट होगा । रूपए पैसों की तंगी न होगा कभी। आगे बढ़ो आगे और कह दे जमाने से" रोहित शर्मा आज से मेरा पति है " यही मेरा वर्तमान है। बाकी गुजरा हुआ जमाना है। " लेकिन मन के दूसरे हिस्से ने लताड़ा था- "तुम कैसी मां हो, एक बार भी बच्चों के वर्तमान और भविष्य के बारे नहीं सोचा। शेखर से तुम्हें शिकायत हो सकती है लेकिन बच्चों के प्रति कैसे निष्ठुर हो गई तू। जिसे तुमने अपनी कोख में रखा, जन्म दिया, दुध पिलाया और आज एक दम से पराई हो गई हो ! केवल अपनी शरीर की भूख को

मिटाने के खातिर ही न यह सब किया। सुना नहीं, समीर साहब ने क्या कहा- दो महीने पहले तक रोहित शर्मा किसी ओर की बांहों में समाता था! घर में शादी किसी ओर के साथ करने की बात हो रही है, ऐसे लोगों से तुम प्यार की उम्मीद लगाए बैठी हो- इससे तो अच्छा शेखर है जिसका पास्ड भी तुम हो और फ्यूचर भी तुम ही रहोगी! शेखर हीरा है तो रोहित शर्मा कांच है कांच! ..संभल जाओ, पैर में कुल्हाड़ी मत मार लो....!"

तभी रेणु राजन चिहुंक उठी थी।

"मैं रेणु के साथ अभी, यहीं शादी करने को तैयार हूँ!" रोहित शर्मा अचानक से उठ खड़ा हो गया था। उसने रेणु की ओर देखते हुए कहा- "मेरे घर में मेरी शादी की सिर्फ बात चल रही है- शादी हुई नहीं है.. मेरी.!" रोहित शर्मा ने जैसे सफाई दी थी।

थोड़ी देर तक शोरगुल हुआ।

"दो मर्दों के बीच एक औरत को जलील किया जा रहा है !" भीड़ में कहीं से आवाज आई।

इससे पहले कि समीर साहब इस पर कुछ बोलते। शेखर राजन उठ खड़ा हो गया था! नजर भर सभी ओर देखा फिर छोटी बेटी को गोद में उठाया, बेटे की बांयी बांह को पकड़ा और मां तारा देवी से कहा- "चलो मां, अब हमारा यहाँ कोई काम नहीं रह गया। दीपू-रूपू को भूख लगी होगी- चलता हूँ थानेदार साहब! आपका बहुत बहुत धन्यवाद! रेणु को नये पति के साथ विदा कर दीजिए...!"और शेखर चल पड़ा ....!

रेणु को लगा। सीना चीर उसके जिगर-कलेजों को एक आदमी लिए जा रहा है और दूसरा उसके शरीर को खींचने में लगा हुआ है। और वह चीख रही है पर उसकी आवाज कोई नही सुन पा रहा है। मन का हिस्सा पुनः जाग उठा- "रेणु रोहित के साथ निकल जाओ। गोल्डेन चांस है! शेखर ने तुम्हें आजाद कर दिया....!"

"मूर्ख औरत! क्षण भंगुर खुशियों के लिए, सम्पूर्ण खुशियों के खजाने को लुटाने की सोच रही है। शेखर राजन जैसा पति बहुत कम को नसीब होता है..." अंतरात्मा ने धिक्कारा था। सोये से जैसे जाग उठी थी रेणु ! खड़े खड़े जोर से चिल्लाई- "शेखर.. शेखर .. शेखर ..!" इसके साथ ही वह बेहोश होकर वहीं गिर पड़ी थी।

लोग उसकी ओर लपके। समीर साहब ने सबको बरज दिया- "रुक जाओ! कोई उसके करीब नहीं जायेगा!"

समीर साहब ने सिपाही से पानी लाने को कहा। चेहरे पर पानी के छींटें पड़ते ही रेणु हड़बड़ा कर उठ खड़ी हो गई। उसने सीधे सामने की ओर देखा। नाक की सीध में!

उधर शेखर जो स्कूटी स्टार्ट कर रहा था। आवाज सुनकर रुक गया था।

और रेणु दौड़ पड़ी थी.....! सीधे शेखर के पास जाकर रुकी। अब केवल उसकी सांसें दौड़ रही थी। हाँफते हुए कही थी उसने- "शेखर मुझे माफ़ कर दो! मर जाऊंगी पर अब तुम्हे छोड़ कहीं नहीं जाऊंगी ...!"

“रख लो यार! ठोकर खा चुकी है!” किसी ने कहा

"हाँ हाँ रख लो, घर ले जाकर गंगा जल छिड़क देना! शुद्ध हो जाएगी !" भीड़ ने आवाज लगाई।

उधर थाना परिसर गूंज उठा- " समीर साहब जिंदाबाद..! महापंचायत जिंदाबाद...!"

विकास का आधार

मानवाधिकार

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

आईएसबीएन : 978-93-90548-82-8 संस्करण : 2020, मूल्य : 225/-

कहानी

कर्ज़

महेश शर्मा

तहसीलदार की वसूली जीप फर्राटे से चली जा रही थी। अन्दर बैठे तहसीलदार, बैंक मैनेजर गुप्ता, वसूली अधिकारी जोशी और अन्य तीन चार, गाँव में पहुँचते ही की जाने वाली कार्यवाही पर विचार कर रहे थे। बैंक का चपरासी रमेश, तहसील का जमादार बनवारी और साथ में दो पुलिस जवान और बचा जीप का ड्राइवर जो कई बार गाँव के लोगों को हड्काने में खुद को पुलिस से कम नहीं समझता था। ऐसे कुल आठ लोगों का ये काफिला झाबुआ जिले के बचे खुचे जंगल के बिच लहराती सड़क छोड़कर गांव की तरफ जाने वाली कच्ची सड़क पर चले जा रहा था।

आज इनका टारगेट था सुदूर पहाडियों के बिच बसा गांव साल खेडा, जोबट कस्बे से 20 किलोमीटर दूर आदिवासियों की बस्ती।

जोशी जी को वो दिन याद आये जब वे इसी शाखा के मैनेजर थे, शाखा नई नई खुली थी। शाखा के वित्त पोषण को बढ़ाने और शासकीय योजनाके अंतर्गत अनुदान युक्त फाइनेंस करने के लिए पहली बार मोटरसाइकल लेकर ग्राम सेवक मेडा जी के साथ टूर पर आये थे।

बड़ा मुश्किल रास्ता था कच्ची सड़क भी नहीं थी तब पगडण्डीनुमा रास्ते पर मोटरसाइकल चलाते हुए पहाड़ी के पीछे सरपंच फलिए में पहुंचे। वहाँ पहुँचते ही लगा 20 किलोमीटर लम्बी उबड़खाबड़ रास्ते की दूरी और तेज धुप गर्मी के बाद एक दम ठन्डे शीतल प्रदेश में पहुँच गए हो बड़ा सुहावना और सकुन भरा वातावरण था। सामने ही एक हरा भरा खेत था जिसमें कुए पर चलती रहट से पानी की सिंचाई हो रही थी कई हरे भरे पेड़ थे, एक तरफ कुछ बच्चे धुल में खेल रहे थे, आदिवासी युवतिया खेत में काम कर रही थी और कुछ युवक लकड़ी फाड़ रहे थे।

सरपंच ने खाट बिछा कर बिठाया ठंडा पानी पिलाया और छाछ बुलवाई, नमक मिली छाछ पीकर आत्मा तृप्त हो गई।

महेश शर्मा

सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी महेश शर्मा हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में साहित्य सृजन करते हैं। इनकी रचनाएँ देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। 'हरिद्वार के हरी' इंका चर्चित कहानी-संग्रह है।
संपर्क : 244, सिल्वर हिल कालोनी, धार, मध्य प्रदेश 454001
मो. 9340198976
Email- mahesh.k111555@gmail.com

'कितनी भैंस हैं सरपंच तेरे पास ?' ग्रामसेवक ने सरपंच से पूछा।

'भैंस कहां बाबूजी दो गाय हैं। दूध देती है, कुछ घर में खा जाते है, कुछ फलिए वालों को बेच देता हूँ। चिंता मत करो अब बैंक वाले बाबूजी आ गए है घर घर भैंस बांध देंगे तेरे फलिए में दूध ही दूध ढेर हो जायेगा।'

'सच बाबूजी ?'

'अरे बिलकुल शासन की स्कीम है, जो चाहिए वो मिलेगा। भैंस ले लो, बैल ले लो, कुआं पम्प, बिजली की मोटर, दुकान, मशीन... सबका लोन मिलेगा।'

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

'कर्जा... वाह बाबूजी ये तो जब्बर बात हुई।' सरपंच खुश हो गया, 'पर बाबूजी देखभाल के लोन देना नी तो वो सोसायटी वालों ने रामलाल को खाद बीज का लोन दिया था, नी भराया तो उसको जीप में बिठा के ले गए और सोयाबीन भी जप्त कर ली।'

'अरे ऐसा कुछ नहीं होगा, चल तू चल तू अब सारे फलिए वालों को भेला कर। और देख क्या बैंक वाले बाबूजी को दाल पानीये नई खिलायेगा।'

'खिलाऊंगा बाबूजी, पर घी थोड़ा कम है।'

अरे सब चलेगा, कीसी और से बुला लेंगे। और देख दो तीन कुपल्या ताड़ी भी बुलवा ले, अच्छी ताज़ी वाली। '

सरपंच जुगाड़ में लग गया। बैंक मैनेजर जोशी जी ग्रामसेवक की हर गतिविधि देख रहे थे।

चारो तरफ का वातावरण बड़ा शांत लग रहा था। तीन-चार आदिवासी वहां आ कर बेठ गए थे। जोशी जी ने उनसे उनकी आजीविका के बारे में पूछा। एक आदिवासी जो कुछ चतुर लग रहा था, रामसिंग नाम था उसका, बोला- 'साब थोड़ी बहुत खेती पाक जाती है, साल में चार महीने मजदूरी मिल जाती है, जीवन चल जाता है। कोई कर्जा नहीं कोई टेंशन नहीं , खूब मजे तो नी पर काम चल जाता है।'

तभी दूसरा बोला- 'साब किसी के पास बैल नहीं है, किसी के पास सिंचाई की मोटर नहीं है, एसे को शासन सहायता दे तो उसका भी उद्धार हो जाये।'

'खेती के अलावा और क्या साधन है तुम्हारे कमाई के ?'

'घर के कुछ लोग मजदूरी के लिए बाहर भी जाते है जो तीज त्योहारों पे वापस आ जाते हैं, वेसे हमारे गाँव में कोई गलत माहोल नहीं है। दारू-वारु भी कोई ज्यादा नहीं पिते, बाज़ार जाने का भी ज्यादा शोक नहीं है (बाज़ार से उसका आशय नजदीकी क़स्बा जोबट के मार्किट से था) लोगों के पास ज्यादा पैसा ही नहीं है तो कहाँ जाये ?'

तब तक सरपंच 8-10 लोगों को लेकर वहां आ गया आते ही बोला, 'रामसिंग फिकर मत कर, बैंक वाले सारे गाँव में पैसा ही पैसा कर देंगे।'

इसी बीच ताड़ी (ताड़ के पेड़ से निकलने वाला रस जो नशा देता है। आदिवासी क्षेत्रो में भरपूर पिया जाता है) की तीन-चार मटकिया जिन्हें

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कुप्लिया कहते हैं, आ चुकी थी और ग्रामसेवक और बैंक वाले ने चुस्कियां लेना शुरू कर दिया था। एक तरफ खाना बनना भी शुरू हो चुका था।

ग्राम सेवक ने सब्सिडी के और लोन के फार्म निकालकर पूछताछ शुरू कर दी।

'बोलो सरपंच किसको क्या चाहिए ?'

सरपंच बोला, 'साब सबसे पहले मेरा नाम लिखो। ये कुआं गहरा करके पक्का बाँधना है और मोटर लगानी है।'

'पर सरपंच कुआं गहरा तो है, और मोटर भी लगी है... फिर क्यों फालतू लोन लेता है।' जोशी ने समझाया।

'नी साब कुआं तो पक्का बाँधना पड़ेगा और मोटर भी नई लानी है, तुम फार्म तो भरो।' सरपंच ने एक अर्थपूर्ण मुस्कराहट से बैंक मैनेजर की और देखा।

उपस्थित 15-20 लोगों में से 4-5 लोग ही वास्तव में लोन लेने के इच्छुक थे, बाकि 7-8 को ग्रामसेवक ने जबरदस्ती सोमला का दो भैंस का प्रकरण, दित्या का बैल जोड़ी का प्रकरण और अन्य 4-5 के बकरी पालन के प्रकरण बना दिए। रामसिंग का किराना दूकान का प्रकरण भी जबरदस्ती बना दिया, जबकि रामसिंग इनकार करता रहा- 'साब गाँव में दो किराना दूकान पहले से है।'

जोशी जी ने ग्रामसेवक को रोका, 'मेडा जी ज्यादा जबरदस्ती मत करो, बाद में वसूली में परेशानी आएगी।'

'अरे सर, आज 20 तारीख है 26 तारीख को मीटिंग है, उसके पहले मुझे 40 प्रकरण बना के बैंक में लगाना है। वरना मेरी तनख्वा रुक जायेगी। और ये तो अछा गाँव है, आपकी वसूली भी अच्छी रहेगी। क्यों रामसिंग ?'

रामसिंग बोला, 'साब आज तक तो ये अच्छा गाँव है। लोगबाग सब लाइन से है, अब तुम्हारे पाँव पड़े हैं, गाँव का उद्धार हो जाये तो ठीक... वरना तो भगवान् मालिक है।'

सरपंच ने और भी जानकारी दी, गाँव के 4-5 लोग जिन्होंने कोपरेटिव सोसायटी से लोन लिया है वो डिफाल्टर हो गए हैं, बाकी सब ठीक है सब सरकारी कर्जे से डरते हैं।'

'पर हमारा लोन तो सब्सिडी वाला है, आधा कर्जा तो माफ़ है आधा ही भरना पड़ेगा।' ग्रामसेवक ने समझाया।

'पर आधा तो भरना पडेगा नी साब, मेरी दूकान नी चली तो कहाँ से भरूँगा।' रामसिंग ने एक बार फिर लोन के प्रति अरुचि दिखाई।

'अरे सब चलेगी दूकान, क्यों चिंता करता है प्यारे!' ग्रामसेवक नशे में टुन्न हो चुका था।

इतने में सरपंच अपने बेटे को और घरवाली को भी ले आया था।

'साब ये दो प्रकरण और बनाना पड़ेगा। मेरी घरवाली को दो भैंस और ये छोटा नाना को आटा चक्की... ये तो करना पडेगा।'

ग्राम सेवक ने उन दोनों के भी फार्म भर लिए। इस तरह तीन घंटे की विजिट में 15 केस तैयार कर दाल पानीये का आनंद लेते हुए ग्राम्य विकास के ये प्रहरी वापस अपने घर को लौट चले। जोशी जी को याद था कि दो सप्ताह में उन्होंने सभी 15 प्रकरणों का निपटारा कर उनमें ऋण राशि बाँट दी थी। पूरे गाँव में ख़ुशी का माहौल था। ग्राम में 10-12 भैंसे आ गई थी। दो नई किराना दुकाने और खुल गई थी। मोटर रिवाइंडिंग, सायकल दूकान भी खुल गई थी। बकरी पालन और सिंचाई आदि की भी सुविधा हो गई थी। सबके हाथ में पैसा आ गया था। 15 -20 लोन लेने वालों के अलावा इनके रिश्तेदारों पर भी पैसे की इफरादी का प्रभाव पड़ा था। ऐसा लग रहा था, मानो इन सब का जीवन स्तर उंचा उठ गया है।
लोन लेने की प्रक्रिया में उन 15-20 परिवारों के मेंबर हर तीसरे, चौथे दिन शहर जाते। शहर का चाय कचोरी का नाश्ता बड़ा अच्छा लगता। ये तो ठीक जब पैसा हाथ में आया, तो देशी दारू के शौकीन लोगों को अंग्रेजी का शौक चढ़ा। जो सप्ताह में दो-तीन बार पीते थे, अब रोज पीने की जुगाड़ करने लगे।

सरपंच का परिवार तो चकाचक था। तीन अलग अलग नामो से लगभग एक लाख का लोन उठाकर सरपंच ने घरवाली की रकम बना ली। पुराना कर्जा चुका दिया। दूसरे वाले लड़के की शादी खूब धूमधाम से कर दी। सबको मजा आ गया। सब बैंक वाले की और शासन की जयजयकार कर रहे थे।

जो दो-दो भैंस लाये थे, उनसे गाँव में तीन-चार महीने तक दूध की खूब इफरादी रही। खुद भी खाते, बेचने की कोशिश भी करते। गाँव में खरीददार नहीं मिले तो शहर जाकर बेचने की कोशिश की। शहर दूर

था,साधन का अभाव था। बात बनी नहीं तो दही, घी और छाछ निकालने लगे।

किराना दुकान जो पहले दो थी, अब चार हो गई। पहले वाली दो दुकाने अच्छी चलती थी, अब चारो दुकाने कमजोर हो गई, क्योकि गाँव का बिजनेस तो वही था वो अब बंट गया। रामसिंग जरुर चिंता में था कि सब काम ठीक से नहीं चला तो इन सब का क्या होगा। अब तक तो गाँव खुशहाल था कोई सरकारी कार्यवाही की स्थिति ही नहीं बनती थी। पुलिस या तहसीलदार की गाड़ी कभी गाँव में नहीं आती थी। कोई जप्ती कुर्की जैसा माहोल नहीं था। अब भी ऐसा ही बना रहे तो अच्छा है।

लेकिन विकास की आंधी अपने साथ कुछ खतरे भी लेके आइ थी जो गुपचुप धीरे-धीरे गाँव के शांत व सोहाद्र्रपूर्ण वातावरण में घुस कर अशांति पैदा करने लग गए थे। भैंसो के मालिक दूध दही तो खाते रहे पर उन्होंने बैंक किश्त की चिंता नहीं की। उन्हें दूध का मार्केट भी नहीं मिला, जहां दूध बेचते।

भैंसों की अच्छी खिलाई पर पैसा ज्यादा खर्च होने लगा और खिलाई में कटौती करें तो दूध की मात्र कम होने लगी। बैंक की किश्त चुकने लगी। तीन चार महीने बाद गर्मी का मोसम आते ही गाँव में हरियाली और पानी की कमी जैसे ही हुई उनको पालना महंगा होता गया। अब खुद का परिवार पालो कि बैंक की भैंसों को पालो ? नतीजा ये हुआ की भैंसे कमजोर होके घास चारे की तलाश में भूखी मरती आवारा जैसी फिरने लगी।

किराना दुकाने, मोटर रिवाइंडिंग और अन्य व्यवसाय भी गाँव में ज्यादा स्कोप ना होने से कमजोर पड़ते गए। आवश्यकता से अधिक दिया गया ऋण भारी पड़ने लगा। जब पैसा मिला था तब बहुत अच्छा लगा था, पर अब बैंक किश्त और ब्याज दिन रात बढ़ता जा रहा था। बकरी वालों के भी यही हाल थे। बकरिया मरती बहुत जल्दी थी। टाइम पर बैंक खबर ना करने से बीमा पास होने में रूकावटे आती रही। रामसिंग चिंतित था। तीन महीने से उसने किश्ते नहीं भरी थी। बैंक वाले 15-15 दिन में आ आ के परेशान करते थे, बाकि लोग तो छिप जाते या भाग जाते। कोई-कोई बैंक वालों से लड़ाई-झगडे भी कर लेता। रामसिंग सज्जन आदमी था। हाथ-पैर जोड़कर बैंक वालों से मोहलत माँगता। सरपंच के लड़के की चक्की बंद हो गई थी। उसकी इनकम से बिजली का बिल भरना भी मुश्किल हो

गया। इस बीच बैंक मैनेजर जोशी जी का ट्रांसफर हो गया था। जाने के पहले जोशी जी ने गाँव के बार-बार चक्कर लगाकर इन खातों में वसूली करने की कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली। अब नया मैनेजर वसूली के लिए गाँव आता और किसानो के साथ साथ पुराने मैनेजर यानि जोशी जी को भी भली-बुरी सुनाता। गाँव के नये लड़के और फुरसती लोग रोजाना शहर के चक्कर लगाते, किसी भी तरह से लोन लेने और सब्सिडी की जुगाड़ की कोशिश करते।

जोशी जी अपना सिर पकडे चिंता में डूबे ये सब बातें सोच सच कर परेशान हो रहे थे, तभी वो चौंके। अचानक एक झटके से जीप सरपंच के घर के सामने रुकी। जोशी जी की विचार तन्द्रा भंग हुई। यहाँ से जाने के बाद जोशी जी का प्रमोशन होकर वे वसूली अधिकारी बन गए थे। पुरानी यादो के हिसाब से उन्हें एक शांत उन्नत और प्राकृतिक सुन्दरता से पूर्ण सज्जन लोगों के गाँव जैसे वातावरण की अपेक्षा थी। लेकिन वहाँ जाकर जोशी जी ने जो देखा तो सन्न रह गए।

सरपंच के घर के बाहर 5-7 मिनिट खड़े रहने और बार बार आवाजे लगाने के बाद अनमना-सा सरपंच बाहर आया। सबके बैठने के लिए खटिया लगाके खड़ा हो गया। बैंक चपरासी ने डांट लगाईं, 'जा साब लोगों के लिए चाय पानी का इंतजाम कर।'

'हो साब पानी तो अबी लाऊ, पण चाय वास्ते दूध मिले की नी मिले देखू।' सरपंच ने लड़के को आवाज लगाईं।

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

'अरे इतनी भैंसे है गाँव में और दूध नहीं है ? क्या बोलता है सरपंच ?' जोशीजी ने आश्चर्य से पूछा।

सरपंच ने पुराने साब को अब पहचाना, 'अरे साब आप, आधी भैंसे तो मर गई और जो ज़िंदा हैं वो दूध नहीं देती हैं, बड़ी आफत है।'

'अरे तो जो मर गई उनका बीमा तो आया होगा ?'

'साब एक तो हमने टेम पे खबर नी करी उनके मरने की, फिर बैंक में अब कोई हमारी सुनता भी नी! कहते है पहले बकाया किश्ते भरो, फिर बीमे की बात करो।'

'अच्छा चलो, ये सब छोड़ो! बकाया किश्त के पैसे लाओ।' जोशी जी ने साल्खेडा का रजिस्टर खोला। सरपंच के तीन खातो में कुल बकाया एक लाख चालीस हजार हो गए थे। जिसमें नब्बे हजार रुपये ओवरड्यू थे, जो तत्काल जमा होने थे।

'साब इस फसल बहुत कमजोर है।' सरपंच ने हाथ जोड़े।

आटा चक्की कहाँ है ? उसकी कमाई का क्या करते हो ?'

'साब वो तो बिजली का बिल नहीं भरने से कनेक्शन कट गया।'

'और भेंसे कहाँ हैं ?'

वो साब एक भैंस तो मर गई और दूसरी दूध नहीं देती।'

'फिर अब क्या करना बताओ ?' तहसीलदार ने गुस्से से पूछा

'अब अगले साल सब भर दूंगा साब!' सरपंच ने हाथ जोड़कर जवाब दिया।

तहसीलदार साहब गरजे, 'नहीं इसके घर पे ताला लगाओ और चक्की का सामान जब्त करो। आज पूरी कार्यवाही करेंगे।'

सरपंच हाथ जोड़ता रहा। जब्ती की कार्यवाही शुरू हुई। बैंक का चपरासी, तहसील का चपरासी और गाँव का चौकीदार तीनो गाँव में जा-जा के एक-एक को पकड़-पकड़ कर लाते रहे तथा तहसीलदार और जोशी जी सबको धमकाते रहे। कुछ लोगों के घर पर ताले लगे। कुछ का सामान जब्त किया कुछ को बहुत डांटा-डपटा, बल्कि सभ्य किस्म की गालियां भी दी गई। एक-दो को तहसीलदार की जीप में बिठा लिया गया। पूरे गाँव में धमा-चौकड़ी मची हुई थी। कई लोन लेने वाले तो भागकर छिप गए थे। जोशी जी ने ग्राम का वसूली रजिस्टर देखा। जिन लोगों ने 5 वर्ष पहले

20000–20000 लोन लिया था, आज उनके खातो में 35-40 हजार हो चके थे। नाममात्र की वसूली हुई थी।

शाम होते होते 12000 रुपये मात्र की वसूली हुई। इतने डराने-धमकाने का भी असर नहीं हुआ। रामसिंग हाथ जोड़ता हुआ आया। गिड़गिड़ाता हुआ बोला, 'साब मैंने कहा था लोन देने में जबरदस्ती मत करो, जरूरतमंद को दो,उसकी हैसियत देख के दो। पर आप लोगों ने एक भी नहीं सुनी। सब्सिडी का लालच दिया। शासन का आदेश बताया और आँख बंद करके सबको रेवड़ी जेसा लोन बांटा। आज सब परेशान हैं और जिन्होंने लोन नहीं लिया वे आज भी लोन लेने के लालच में भटक रहे हैं। सब्सिडी का लालच सबको ललचा रहा है। आपने पूरे गाँव को बिगड़ दिया साब, ये कैसा विकास है ?'

'चल चुप स्साले। नेतागिरी बता रहा है ? लोन लेते टाइम क्यों नहीं सोचा।' अधिकारियों ने उसे झिड़का।

गाँव वालों द्वारा बनाये दाल पानीये खाकर 7-8 घरो में ताले लगाकर, 5-7 दुकानों को सील करके और कुछ बिजली की मोटरे आइल इंजन आदि जब्त करके यह काफिला वापस शहर की ओर चल पडा। सभी चुप थे। शासकीय योजनाओं से ग्राम के विकास का यह स्वरूप किसी की समझ में नहीं आया था। तहसीलदार ने पूछा, 'जोशी जी जब इन लोगों की इतना पैसा भरने की ताकत नहीं थी तो इनको इतना लोन क्यों दिया ?'

जोशी जी और बैंक मैनेजर चुप थे। उनके पास कोई जवाब नहीं था। शासन की टारगेट को लेकर की जाने वाली जबरदस्ती और दबाव का भी वे जिक्र नहीं कर पाए। उदास मन से सोचते रहे आज से पांच वर्ष पहले का शांत सुखद और व्यवस्थित ग्राम कैसे अशांत बिगड़ा हुआ और कर्जे में डूबा बुरे व्यसनों से अरुचिकर बन चुका था। आर्थिक लालच की भाग-दौड़ में लगा छल-प्रपंच में कुशल हुआ ये गाँव अपना पुराना स्वरूप खो चुका था। शासन के टारगेट के दबाव में, कुछ अतिरिक्त आय के लालच में अपात्रो को भी बेहिसाब कर्जा बांटने से एक अच्छा-भला गाँव विकास के बदले कर्ज के पहाड़ तले आह भर रहा था।

कहानी

कटी पतंग

सविता शर्मा 'अक्षजा'

एक एहसास लिए मोनू से मिलने गई थी मैं, लेकिन जब वापस जाने के लिए निकली तो अपने आप को कटी पतंग सी महसूस कर रही थी। अपने ही बोझ से ढह रही थी में क्योंकि प्यार की पतंग को मिलता हवा का सहारा आज खत्म हो चुका था। गिरते-गिरते कहाँ पहुंचाया था प्यार के इस खेल, हाँ खेल ही तो था जो मोनू ने मेरे साथ खेला था।

जब पहली बार मिले थे, तब मैं उसकी दुकान पर अपने अंतर्वस्त्र की खरीदारी करने गई थी और जिस खास तरीके से वह मुझे एक के बाद एक नई डिजाइन दिखाकर उससे मिलने वाली सहूलियत के बारे में बता रहा था, तब एक कवि सा लग रहा था मुझे। अनायास ही उसकी मीठी बातों ने मेरे मन में उसके लिए कुछ कोमल भावना, जो एक नवयुवती के मन में आना स्वाभाविक था,उसे जन्म दे ही दिया। मेंरी खरीदारी तो खत्म हो ही गई थी और कम से कम छह महीने तक मोनू की दुकान पर जाने का अवसर प्राप्त नहीं होना था। लेकिन उसकी दुकान के सामने से निकल भी जाऊं तो भी दिल की धड़कनें तेज हो जाती थी और उसकी एक जलक पाने के लिए निगाहें उसकी दुकान का कोना कोना टटोलती थी। बेकरारी ही तो थी जो समय के साथ ऐसे बढ़ती जा रही रही थी कि पूछो ही मत।

अब बहाने से सखियों के साथ,भाभियों के साथ कहो तो सभी पहचानवाली महिलाओं के साथ जा कर उसकी दुकान की मुलाकातें बढ़ती ही जा रही थी। और एकदिन उसने भी मेरे प्यार को प्रतिभाव दे ही दिया, उस मुस्कुराहट को कभी भी भूल नहीं पाई थी मैं। भरे-भरे होठों की हल्की-

सी हलचल जो मूछों के नीचे से झांकती थी और मेरे एहसास को जकड़ोर ने का काम कर रही थी। और आँखें जैसे अनकहे बोलों को वाचा दे रही थी। मेरे पूरे अस्ति त्व को हिला के रख दिया था उस वाकये ने।

उसकी दुकान के बाहर तो जाना ही था क्योंकि भाभी ने रकम चुकता कर ही दी थी। और कई दिनों तक उस मुस्कान और आंखों ,दोनों ने मेरे मन को आंदोलित रखा और एकदिन मैं बस की राह देख कर बस स्टैंड पर खड़ी थी और उसकी बाइक न जाने कहाँ से आया और सामने खड़ा हो गया। मैं तो अवाक सी उसे देखती रही लेकिन उसकी आवाज सुन मुझे वास्तविकता का एहसास हुआ। वह पूछ रहा था कि वह मुझे कही छोड़ दे सकता था। और बिना कुछ सोचे उसके पीछे बैठ गई और उसने बाइक चला दी। स्वर्ग सा एहसास लिए उस पर पूरा भरोसा लिए मैं जैसे उड़ी जा रही थी प्यार के हिलोरें लेती हवा के जुलों में जुलती पतंग की तरह। उसने एक रेस्टोरेंट के पास बाइक खड़ी कर पूछा था कुछ और बिना सुने ही हामी में सर हिला दिया था मैंने ,अंदर जा के एक कोने वाली टेबल पर बैठ उसने पूछा था कि मैं क्या लूंगी पर मैंने उसकी पसंद को अपनी पसंद बताई और उसने ऑर्डर भी दे दिया। और कितनी देर हम वहाँ बैठे ये भी याद नहीं हैं मुझे, बस समय को ठहर जाने की इल्तज़ा करती हुई उसके सानिध्य

जयश्री बिरमी

अंग्रेजी और गृहविज्ञान की शिक्षिका रह चुकी जयश्री बिरमी जन सामान्य के भावबोधों को अभिव्यक्त करने वाली सशक्त हस्ताक्षर हैं।

संपर्क : अहमदाबाद, गुजरात

ईमेल : **jbirmiin@gmail.com**

का आनंद लेती रही। जो स्वप्न सा समा था उसे तो पूरा होना ही था और हो गया।

मैं घर पहुंच अपनी मस्ती में अपने कमरे में जा उन्ही लम्हों को फिर से जीने की कोशिश करते करते सो गई। माँ को खाना नहीं खाने की सूचना मैंने आते ही दे दी थी। बस अब तो मिलाकातों का सिलसिला ऐसा चला कि पूछो ही मत। रोज ही घोड़े पर सवार आते हुए अपने राजकुमार को मिलने परी-सी सजके निकल पड़ती थी। अब तो न कॉलेज की फिक्र थी और न ही पढ़ाई की। प्यार के अविरत झरने में बहती जा रही थी। कब साल निकल गया पता ही नहीं चला।

इम्तिहान हो गए, द्वितीय दर्जे में उत्तीर्ण होने का कोई मलाल नहीं था। अपने प्रथम दर्जे को अपनी प्रीति के लिए कुर्बान कर चुकी थी मैं। लेकिन घरवालों से ये बदलाव को नहीं छुपा सकी थी मैं। एक रविवार जब सभी घर में थे तो माँ ने बात छेड़ दी कि मामीजी के भाई का बेटा बड़ा ही लायक था। एमबीए कर अच्छी नौकरी लग गई थी तो मेरे रिश्ते की बात चलानी चाहिए। और पापा, भैया-भाभी सभी ने भी हामी भर दी, लेकिन मेंरी राय पूछना जरूरी नहीं समझा। उन्होंने मामीजी को फोन लगाया और बात आगे बढाने के लिए बोल दिया।

मैं मन ही मन कुढ़ती हुई अपने बिस्तर पर जा लेट तो गई, लेकिन नींद कोसों दूर थी। अपने प्यार के भविष्य के बारे में सोचती हुई छत पर नजरें टिकाए पड़ी रही थी। अपने प्यार के एहसासों को किसी अजनबी से सांझा करने की बात सोच कर ही बदन में थरथराहट सी आ जाती थी। अपने हमसफर के रूप में जहाँ मोनू को पदानवित किया था वहाँ कैसे किसी और को विराजित कर पाऊंगी, यही प्रश्न बार बार खाए जा रहा था मुझे। कब सुबह हुई उसका पता ही नहीं चला। लेकिन सारी रात जागते हुए निकलने की वजह से सर दर्द से फटा जा रहा था। बाथरूम में जा फ्रेश होने की सोची और चल दी बाथरूम की और तो एक चक्कर-सा आ गया लेकिन दीवार का सहारा ले संभल तो गई लेकिन एक और चीज भी समझ में आ गई कि ये जो हो रहा था उसे सहना बहुत ही मुश्किल होगा। बाथरूम में गई तो अपना चेहरा देख हैरान सी रह गई, लाल सूजी हुई आँखें और पीला पड़ गया चेहरा। लग रहा था सारी रात रोने में ही काटी थी मैंने।

फ्रेश हो चाय-नाश्ते के लिए माँ ने पुकारा तो चली गई, लेकिन न ही चाय अच्छी लगी और न ही नाश्ते का स्वाद आया। चुप चाप उठ 11 बजने के इंतजार में अखबार में मुंह गाड़े बैठी रही। कसम हैं अगर अखबार का एक शब्द भी पढ़ा हो। अपने अतीत की यादें जकजोर रही थी और दिलों दिमाग में एक भावनात्मक असुरक्षा की भावना उमड़ रही थी। समय इतना हौले चल रहा था कि 11 बजने में युग बिता दिए थे। मोनू का घर तो देखा नहीं था सिर्फ दुकान ही देखी थी तो वहीं जा के मिलना था।

ग्यारह बजते ही बहाने से घर से निकल मोनू की दुकान पर पहुंची तो उसी मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया। लेकिन उस मुस्कान के जादू का असर नहीं हुआ था। कुछ औरतों को वह अपनी कला में निपुण-सा अपनी बिक्री कला को आजमा रहा था तो मैं एक और पड़ी कुर्सी पर बैठ गई और उसका काम खत्म होने का बेसब्री से इंतजार करने लगी। जब वे महिलाएं गई तो उठके उसके नजदीक गई तो उसे भी मेंरी हालत देख कर चिंता हुई और पूछ लिया कि क्या हुआ था मुझे। और जो सब्र का बांध बांधे इतनी देर से बैठी थी वह भरभरा के टूट गया और फफक-फफक के रोने लगी तो मोनू भी थोड़ा घबरा उठा और जब मैंने मेरी शादी के बारे में बताया तो उसे जरा भी धक्का नहीं लगा, सामान्य भाव से बोला कि अगर लड़का अच्छा है तो मुझे रिश्ते को स्वीकार लेना चाहिए।

सुनकर मेरी हालत तो और खराब हो गई। कैसे कह सकता था ये बात वह। परेशान-सी उसकी और डरी हुई हिरानी सी मैं देख रही थी और वह मुझे स्थितप्रज्ञता से देख रहा था। फर्क समझ आया मुझे मेरे प्यार और उसके व्यवहार के बीच का और मैंने उसे सालभर के साथ और मुलाकातों का, इश्क के उन लम्हों का भी वास्ता दिया तब उसके मुंह से जो शब्द निकले वह जानलेवा ही थे। उसने कहा कि उसने कभी भी अपने मुंह से शादी का वादा किया नहीं कहा था। ये तो सिर्फ दोस्ती का रिश्ता था, वह खुद बताने वाला था कि उसके लिए भी रिश्ते आ रहे थे और एक लड़की उसे पसंद भी आ गई थी। वैसे उसने 7-8 लड़कियों से मुलाकात भी की थी।

ये सब मेरे लिए चौकाने वाली बातें थी। मुझे उसके इरादों के सही मायने समझ आ गए थे। सिर्फ खेल रहा था मेरे जज्बातों से और मेरे शरीर से भी। टूटी हुई सी मैं उठी अपनी गलती की सजा भुगत ने के लिए अपने

आप को तैयार कर उसकी दुकान से नीचे उतर गई। ठगा-सा महसूस कर रही थी मैं अपने आपको। घर पहुंचने पर मैंने भी निर्णय ले लिया था कि जैसी भी हो अब मोनू के बिना जिंदगी बितानी ही होगी। शायद इसी में बेहतरी थी, अगर आगे जाके बेवफाई करता तो जिंदगी नर्क बन कर रह जानी थी। शायद ईश्वर कृपा और बड़ों के आशीर्वाद से वह बहुत बड़ी बर्बादी से बच गई थी। प्यार का जो जूठा फितूर उसके सर पर था वह उत्तर गया था। घर आके वह नहाने चली गई और अपने तन को मल-मल के, रगड़-रगड़ कर उसने उस फरेबी प्यार की छुअन को धो डाला।

जब एक घंटे के बाद मैं बाथरूम से निकली तो माँ ने पूछ ही लिया कि बहुत देर लगी बाथरूम में। मैंने बहुत ही मार्मिक जवाब दिया था, कि बहुत दिनों के मैल को धोने में देर तो लगती ही हैं ना! माँ कुछ समझी नहीं थी लेकिन सर हिला कर रसोई में चली गई। अब मैं अपने आप को मुक्त महसूस कर रही थी।

जब मुझे प्रस्तावित लड़के को मिलने जाना था तो एकदम हल्के मूड में गई थी। और प्रस्तावित लड़का नमन मुझे पसंद भी आया। वह एक अच्छे व्यक्तित्व का धनी और संस्कारी भी था। अनायास मोनू की हर बात में की गई जोहुकमी से तुलना कर बैठी और नमन से मिलने की खुशी हुई। घर आकर मैंने अपना सकारात्मक जवाब अपनी माँ को दिया और बात आगे बढ़ी। कुछ महीनों में मैं शादी कर अपने मनभावन के घर चली गई। कटी पतंग जिम्मेवार हाथों में आकर सुरक्षित हो गई थी।

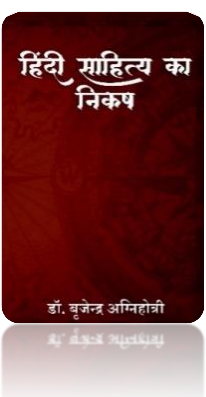

हिंदी साहित्य का निकष

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

आईएसबीएन : 978-93-90548-81-1 संस्करण : 2020, मूल्य : 299/-

लघुकथा

समझौता एक्सप्रेस

परिवार वालों की सम्मति से विनीत और सोनल की सगाई हुई। फुर्सत का समय मिलने पर दोनों के बीच घंटों तक मोबाइल पर बातचीत करने का सिलसिला शुरू हो गया। कभी-कभी व्हाट्सप्प पर मेसेज का आदान-प्रदान भी होने लगा। अत्यधिक संपर्क के परिणाम स्वरूप दोनों के बीच वैचारिक मतभेद होने लगा। अंततः मतभेद मनभेद में परिणत हो गया। दोनों ने अपने परिवार वालों को सगाई तोड़ देने का फ़ैसला सुना दिया। उनके माता-पिता पर जैसे पहाड़ टूट पड़ा।

विनीत और सोनल के माता-पिता को चिंता इस बात की थी कि यदि सगाई टूट गई तो समाज में दोनों परिवारों की इज्जत की धज्जियां उड़ जाएगी। इसलिए बिगड़ी बात को बनाने की जिम्मेदारी उन्होंने 'ॐ' आश्रम की सन्यासिनी वसुंधरा जी को सौप दी।

सन्यासिनी वसुंधरा जी ने दोनों को आश्रम पर बुलाकर पूछा- "आप दोनों क्यों अलग होना चाहते हैं?"

दोनों ने एक साथ कहा- "दोनों के विचारों में एक मत नहीं है। जब विचारों में सामंजस्य ही न हो तो जीवन-नैया कैसे पार उतरेगी?"

वसुंधरा देवी- "क्या इस दुनिया में कोई ऐसे पति-पत्नी होंगे

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

जिनके विचार एक-समान हों और जिनके बीच कभी मनमुटाव ही न हुआ हो? हर पति-पत्नी में किसी न किसी बात में तो विभिन्नता होगी ही। दोनों में कुछ बातें ऐसी भी होगी जो दोनों को पसंद न आती हो। दोनों में असमानता होते हुए भी सायुज्य स्थापित करने का नाम ही है ज़िंदगी।"

विनीत और सोनल ने एक साथ कहा- "वसुंधरा जी अब कुछ-कुछ समझ में आने लगा है।"

वसुंधरा देवी- "जब गाड़ी पटरी बदलती है तब कीचुड- कीचुड की आवाज़ आती ही है। आप दोनों की गाड़ी भी अब पटरी बदल रही है तो आवाज़ तो आएगी ही। विनीत, तुम अपने आपको सोनल के अनुसार थोड़ा बदलने का प्रयत्न करो और सोनल, तुम भी विनीत के विचारों के साथ एडजस्ट होने का प्रयत्न करो। बिना समझौते जीवन-नैया पार नहीं उतरेगी। सांसारिक जीवन में पदार्पण करने वाले हरेक पति-पत्नी को समझौता करना ही पड़ता है।"

समीर उपाध्याय 'ललित'
मनहर पार्क, 96/ए, चोटिला: 363520,
सुरेंद्रनगर, गुजरात
मो. 92657 17398
s.l.upadhyay1975@gmail.com

वसुंधरा देवी की बात अब विनीत और सोनल की समझ में आने लगी। दोनों एक-दूसरे के सामने देखकर आत्म-चिंतन करने लगे। वसुंधरा देवी ने पूछा- "अरे! तुम दोनों किस सोच में पड़ गएं?"

विनीत और सोनल के चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी और एक स्वर में कहा- "बस, अब हमें आशीर्वाद दीजिए कि हमारी यात्रा सफ़ल हो। हम दोनों यात्रा का टीकट बुक करवाने के लिए जा रहे हैं।"

वसुंधरा देवी- "कौन-सी यात्रा में जा रहे हो तुम दोनों?"

विनीत और सोनल ने हँसते हुए कहा- "संसार यात्रा।"

वसुंधरा देवी- "सफ़र किसमें करोगे?"

दोनों ने खिलखिलाते चेहरे के साथ जवाब दिया- "समझौता एक्सप्रेस में।"

फार्म – 4

समाचार–पत्र पंजीयन केन्द्रीय कानून 1956 के आठवें नियम के अन्तर्गत **'मधुराक्षर' त्रैमासिक पत्रिका** से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का आवश्यक विवरण–

1. प्रकाशन का स्थान	:	जिला कारागार के पीछे, 9 ब, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212601
2. प्रकाशन की आवर्तिता	:	त्रैमासिक
3. प्रकाशक/मुद्रक का नाम	:	बृजेंद्र अग्निहोत्री
4. राष्ट्रीयता	:	भारतीय
5. सम्पादक का नाम	:	बृजेंद्र अग्निहोत्री
6. राष्ट्रीयता	:	भारतीय
7. पूरा पता	:	जिला कारागार के पीछे, 9 ब, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212601
8. कुल पूंजी का 1 प्रतिशत से अधिक शेयर वाले भागीदारों का नाम व पता	:	स्वत्वाधिकारी बृजेंद्र अग्निहोत्री

*''मैं **बृजेन्द्र अग्निहोत्री** घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त सभी विवरण सत्य हैं।''*

–बृजेंद्र अग्निहोत्री

लघुकथा

सौदा

"मुझे ये सब कुछ ठीक नहीं लग रहा है ? " जग्गू बाबू ने निर्विकार भाव से निर्लिप्त होकर जैसे अपने आप से कहा। लेकिन, पता नहीं कैसे ये बात प्रमोद बाबू के कानों में चली गई थी। वो बैठक से बाहर जा रहे थे। शायद किचेन से प्लेट लेने। और तभी जग्गू बाबू की बात प्रमोद बाबू के कानों में पड़ी थी।

आज प्रमोद के बड़े बेटे प्रयाग की शादी की बात चल रही थी। और लड़की वाले आज प्रयाग के फैमिली से मिलने आये थे। ऋचा नोएड़ा में किसी बड़ी मल्टीनेशनल कंपनी में काम करती है। वैसे प्रमोद बाबू का बेटा प्रयाग भी साफ्टवेयर इंजीनियर है, मुंबई में। चौबीस लाख का सालाना पैकेज मिलता है। शादी के बाद प्रयाग, ऋचा को लेकर मुंबई में रहेगा। एक बड़ा फ्लैट खरीदा है, उसने मुंबई में। साढ़े चार करोड़ का।

"नहीं, कुछ नहीं। ऐसे ही।" जग्गू बाबू टालने की गरज से बोले।

लेकिन, प्रमोद ने अपने पिता के मन को टटोला- "ठीक है, आप मुझे अपना नहीं समझते तो मत बताईये।"

"अरे, नहीं- नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। तुम बैठो मेरे पास।"

और जग्गू बाबू ने प्रमोद का हाथ खींचकर वहीं सोफे पर अपने पास बिठा लिया और बोले- "तुम जानते हो मुझे, सबसे खराब बात क्या लगी की लड़की वालों ने प्रयाग को सैलरी सीट दिखाने को कहा। क्या उनको हमारी बात पर विश्वास नहीं था ? और प्रयाग को देखो उसने भी अपनी सैलरी सीट तपाक से दिखा दिया। पुराने समय में लोग लड़के का खानदान, गुण-दोष, चाल-चरित्र देखते थे। अभी के समय में लोग सैलरी सीट देखने लगे हैं। आदमी में लाख ऐब हों। सब तनख्वाह छुपा लेती है। आखिर, ये कैसा समय आ गया है ? जब हम सौदा करने लगे हैं, रिश्ते नहीं।"

"अरे पापा, आप भी किन पुराने ख्यालातों में गुम रहने वाले इंसानों में से हैं। अभी जमाना बदल गया है। लोग शान से दिखावा करते हैं। ऋचा के माँ- बाप ने भी तो ऋचा की सैलरी सीट दिखाई थी। ऋचा का सालाना पैकेज बारह लाख का है। जब लड़की वाले होकर सैलरी सीट दिखा सकते हैं। तो हम लड़के वाले होकर सैलरी सीट क्यों ना दिखायें ? आखिर हम उनसे कम हैं क्या किसी बात में।" प्रमोद बाबू ने गर्व के साथ सीना तानकर कहा था। "और, आजकल हर जगह ऐसा ही हो रहा है। सब लोग ऐसा ही कर रहें हैं।" इतना कहकर वो उठने को हुए।

महेश कुमार केशरी
मेघदूत मार्केट फुसरो,
बोकारो, झारखंड 829144
मो-9031991875
keshrimahesh322@gmail.com

जग्गू बाबू ने प्रमोद को टोका- "अभी मेरी बात खत्म नहीं हुई है, बैठो।"

प्रमोद बाबू वहीं सोफे पर फिर बैठ गये।

जग्गू बाबू ने प्रमोद का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा- "बेटे, प्रमोद इसी लालच और दिखावे ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा है। अभी प्रयाग की शादी नहीं हुई है। और वो हमसे अलग एक फ्लैट खरीदकर रहने के लिये तैयारी कर रहा है। आखिर, इसी लालच और दिखावे ने आदमी को स्वार्थी और कमजोर बना दिया है। एकल परिवार की सोच बढ़ा दी है। पता

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

नहीं इतना पैसा लोग कमाकर क्या करेंगे ? जिसको देखो वही पैसे की पीछे भाग रहा है। एक मिनट रुककर साँस लेने की फुरसत भी नहीं है आज के आदमी के पास। दिनरात पैसा कमाते हैं। बच्चों को पढ़ाते हैं। बच्चे देश-विदेश में जाकर सेटल हो जाते हैं। फिर, वहीं के होकर रह जाते हैं। ना कभी आना ना कभी जाना। कभी गलती से दो दिनों के लिये आ भी गये। तो माँ- बाप से मिलने आने से पहले ही जाने का टिकट भी करवा लते हैं। दो दिन के लिये आते हैं तो अपनी व्यस्तता दिन भर गिनवाते रहते हैं। आज अलाने से मीटिंग कैंसल करनी पड़ी है। आज फलाने बच्चे का स्कूल मिस हो गया। कभी दो मिनट फोन पर ढँग से बात हो गई, तो हो गई। नहीं तो वो भी नहीं। इतनी आपा-धापी वाली जिंदगी हमें तो कभी रास नहीं आई बेटा। सही मायने में हमारा पुराना ग्रामीण ढाँचा वाला पारिवारिक जीवण ही अच्छा था। शादी में जाते थे, तो महीनों रहकर आते थे। गाँव में हँसी-कहकहे महीनों गूँजते रहते थे। संबंधो में एक तरह की मिठास थी, अपनापन था। वो सबकुछ अब नहीं बचा है। संयुक्त परिवार था। तब लोग साथ मिल-जुलकर रहते थें। खाते थे, पीते थे। आज की तरह एक-दूसरे को पछाड़कर आगे बढ़ने की होड़ तब हममें नहीं थी। आज कल शादी नहीं हो रही है, बेटा। सौदा हो रहा है सौदा। एक बात और मैं कहना चाहूँगा तुमसे। मेरा क्या है बेटा मैं तो कुछ दिनों का मेहमान हूँ। तुम अपना देख लो, अपनी पत्नी का देख लो। बूढ़ापा तुम्हें अकेले ही काटना है। अच्छा, अब चलता हूँ। चार बज गये हैं। थोड़ा घूमकर आता हूँ।" जग्गू बाबू सोफे की टेक लेकर खड़े हुए। और छड़ी खटखटाते हुए बाहर हवाखोरी के लिये निकल पड़े।

शेखर जोशी की कहानियों में
हाशिये का समाज
इबाहुन मॉन
आईएसबीएन : 978-81-945460-6-1
संस्करण : 2020, मूल्य : 200/-

लघुकथा

धूप का टुकड़ा

वृंदा के दिमाग़ की नसें फट रही थी जिनको वो अपने कह रही थी उन्होंने आज जता दिया की ये ज़माना बदल गया है, वो पुरानी हो गयी है। आज की नयी पीढ़ी खुद को मानसिक तौर पर कुछ ज़्यादा ही समझदार समझ रही है उनको लगता है माँ बाप पुराने ज़माने के है।

एक उम्र के बाद इनको कुछ काम शोभा नहीं देते उनको अपने शौक़ मार देने चाहिए, ये नहीं करना चाहिए, वो नहीं करना चाहिए, माँ का अकेलापन नहीं दिखता, अकेलापन दूर करने के तरीके खटक रहे है। जिन्होंने मुझसे सबकुछ सीखा, आज वो मुझे सिखाने निकले हैं।

वृंदा के घर में कदम रखते ही दो बेटे और दो बहुओं के चेहरे पर अजीब से भाव आ गए, जैसे वृंदा कोई गलत काम करके लौटी हो। वृंदा ने किसीको नोटिस नहीं किया तो उनकी अकुलाहट और बढ़ने लगी, वृंदा ने टीवी ऑन किया और नये गाने सुनने लगी, तो बड़े बेटे के दिमाग का पारा चढ़ गया। टीवी बंद करके वृंदा के सामने बैठ गया, 'मॉम ये सब क्या है? आप आज-कल कुछ ज़्यादा ही बिज़ी रहने लगी हो, घंटो मोबाइल में व्यस्त..! इतने सारे फ्रेन्डस, कभी कोई घर पर आ जाते है, कभी आप चली जाती हो और ये कपड़े, कुर्ती लेगइन तो कभी जीन्स-टॉप, ये क्या नये-नये शौक़ पाल रखे है ? उम्र का तो खयाल कीजिए।... और ये लिखना-विखना आपके बस की बात नहीं... फालतू में टाइम पास मत कीजिए! आपकी बहुएं भी शिकायत कर रही हैं कि सासु माँ सठिया गई है। भजन कीर्तन की उम्र में अब हमसे बराबरी कर रही है। आज भी आप सुबह से गायब थी, ना कुछ बताकर गई ना फोन उठा रही थी, आख़िर ये सब क्यूँ कर रही हो।... घर पर बैठकर दो टाइम खाना खाओ और आराम से भजन कीर्तन करो।"

बहुएं इतरा रही थी की देखो कैसे डांट पड़ी इस उम्र में! चली थी खुद का ग्रुमींग करने।

भावना ठाकर 'भावु' बेंगलोर

वृंदा ने गुस्से को कंट्रोल किया और इनविटेशन कार्ड आगे धर दिया और बोली, "आज मैं यहाँ गई थी, ये कार्ड मैंने सबको दिखाकर चार दिन पहले बोला था कि मेरी सोशल एक्टिविटी के सम्मान में हमारे राज्य के सीएम के हाथों मेरा सम्मान होने वाला है, हम सबको विद फैमिली जाना है। पर आप सबको मैं एक पुराने फर्नीचर-सी बेकार चीज़ ही लगती हूँ तो किसीने नोटिस तक नहीं किया। आप सबके लिये ये मामूली बात थी, पर मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि... आज भी तुम सबके चेहरे की खुशी से ज़्यादा मेरे लिए ओर कुछ नहीं, पर आज आप में से कोई मेरी खुशी का हिस्सा बनना नहीं चाहते... तो आज किसको बताकर जाती, और क्यूँ बताती ?" और बहुओं की तरफ देखे बिना ही वृंदा ने बोल दिया, "मुझे लगता है कुछ लोग तो 50 साल के होते ही संन्यास ही ले लेंगे।... क्या कुछ उम्र के बाद इंसान इंसान नहीं रहता, दिल दिल नहीं रहता, मन मन नहीं रहता, शौक़ और इच्छाएं मर जाते है? एक दिन तुम सबको इस उम्र का सामना करना है तो क्या तुम दो वक्त खाना खाकर सिर्फ़ भजन करोगे ? देखो बेटा पहले तो मुझे ये बताओ कि इस उम्र में मुझे क्या करना चाहिए क्या नहीं.... ये बताने वाले तुम होते कौन हो, और कौन से ग्रंथ ने उम्र की सीमा तय की है कि उम्र के एक पड़ाव पर कुछ काम नहीं करने चाहिए? रही बात मेरे मोबाइल में व्यस्त रहने की, तो ये बात तुम्हें सोचनी चाहिए कि क्यूँ आप सबके रहते मुझे आभासी लोगों का सहारा लेकर ज़िंदगी के लम्हें काटने पड़ रही है! अरे तुमसे तो वो सब दोस्त अच्छे हैं जो दिन में दस बार हाल पूछते हैं! दो दिन ना दिखूँ तो फिक्र करते है मेरी की दीदी कहाँ हो ? कैसी हो, ठीक तो हो। मेरी लिखी हुई रचना जैसी भी हो तारीफ़ करते है। मेरे अकेलेपन के साथी हैं सब।... दोस्त बनाने की कोई उम्र नहीं होती, कुछ सीखने की कोई उम्र नहीं होती, ज़िंदगी जीने की कोई उम्र नहीं होती। तुम्हारे पापा के जाने के बाद मैंने कुछ दिन कैसे काटे मेरा मन जानता है, किसी ने कभी पास बैठकर नहीं पूछा कि मॉम आप कैसी हो, कभी मेरे

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

साथ बैठकर खाना नहीं खाया, हमेशा उपेक्षित रही। मोबाइल जैसी छोटी-सी मशीन से जो अपनापन मिला वो अगर आप सबसे मिलता तो आज तुम्हे ये सब पूछने की नौबत ना आती।... ज़िंदगी की आख़िरी साँस तक इंसान इंसान ही रहता है, और एक मासूम बच्चा हर इंसान के भीतर ताउम्र जीता है, हर किसीको अपनी ज़िंदगी अपने तरीके से जीनेका पूरा हक है। तुम इतने भी बड़े नहीं हो गये कि अपनी माँ को सिखाओ की उसे कैसे जीना चाहिये!" वृंदा ने सबकी ओर देखकर बोल दिया, "अगर मेरा अपनी मर्ज़ी के मुताबिक जीना किसी को पसंद नहीं तो कल से अपना इंतज़ाम कहीं और कर लो! ये घर मेरे पति का है, ये ज़िंदगी मेरी खुद की है, पति की पैन्शन में गुजारा हो जाएगा। जब हाथ-पैर नहीं चलेंगे तो वृद्धाश्रम चली जाऊंगी, पर अब इस उम्र में अपने ही बच्चों की मोहताज होकर नहीं जीना।... माँ-बाप अगर नयी जनरेशन से कदम मिलाकर ना चले तो गँवार और पुराने ख़यालात के कहलाएँगे और अपनी मर्जी से जवाँ कदमों से ताल मिलाते हैं तो शोभा नहीं देता। इससे अच्छा है बेटा तुम लोग अपनी ज़िंदगी अपने तरीके से जियो, मुझे अपने तरीके से जीने दो।... अपनों के बीच भी अकेली ही हूँ! अकेलेपन की आदी हो चुकी हूँ, रह लूँगी।"

बाज़ी उल्टी पड़ रही देख बहुएं काम पर लग गईं, और बेटे अपनी गलती पर नतमस्तक। आज वृंदा ने एक खिड़की खोल दी थी, जहाँ से धूप का एक टुकड़ा उसकी जिंदगी को रोशन करता झाँक रहा था।

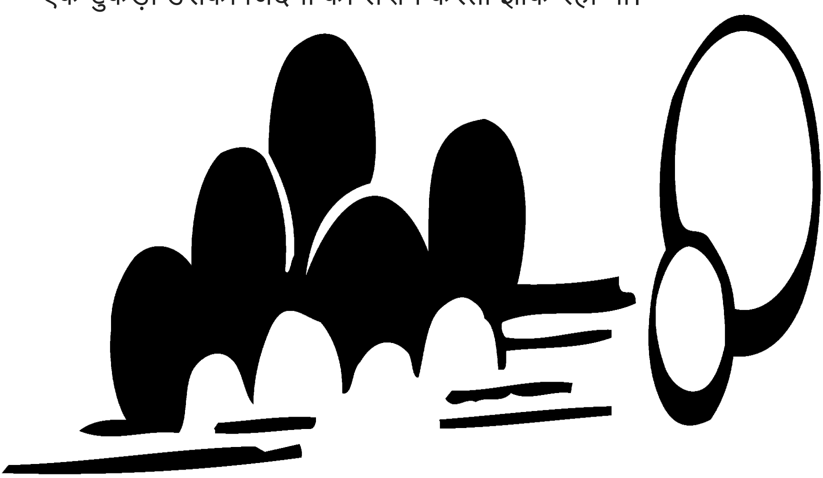

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

शोध लेख

राजनीतिक संचार में फेसबुक और ट्वीटर
राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों की विचारधारा और लोकप्रियता

पूनम
शोधार्थी, संचार प्रबंधन और तकनीकी विभाग
गुरु जंभेश्वर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार
प्रो. विक्रम कौशिक
प्रोफेसर, संचार प्रबंधन और तकनीकी विभाग
गुरु जंभेश्वर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

राजनीतिक संचार के लिए मीडिया का प्रयोग लंबे समय से होता रहा है। कई सिद्धांतकारों ने इंगित किया है कि मीडिया लोगों को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। राजनीतिक पार्टियां मीडिया की इसी क्षमता का दोहन अपनी राजनीतिक विचारधारा के प्रचार–प्रसार के लिए करती हैं। सोशल मीडिया के उदगम के बाद तो राजनीतिक संचार में मीडिया की उपयोगिता और बढ़ गई है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह जानना है कि भारत की राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियां फेसबुक और ट्विटर के माध्यम से अपनी विचारधारा का प्रदर्शन करती हैं या नहीं। इसके साथ ही राजनीतिक पार्टियों के विचार फेसबुक और ट्विटर पर कितने लोकप्रिय हैं। शोध के लिए राजनीतिक पार्टियों के आधिकारिक ट्वीट और फेसबुक पोस्ट की अंतर्वस्तु का विश्लेषण किया गया है। परिणाम से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों अपनी विचारधारा के समर्थन में पोस्ट और ट्वीट करती है। भारतीय जनता पार्टी के ट्वीट और फेसबुक पोस्ट सबसे ज्यादा लाकप्रिय पाए गए हैं। कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस के पोस्ट और ट्वीट भी पसंद किए जाते हैं। हालांकि देश की सबसे पुराने

राजनीतिक दलों में शुमार कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के पोस्ट और ट्वीट अपेक्षाकृत सबसे कम लोकप्रिय हैं।

बीज शब्द : *सोशल मीडिया, राजनीतिक संचार, डिजिटल मीडिया, दक्षिणपंथ और वामपंथ*

1.परिचय

सोशल मीडिया हमारे जीवन के हर एक पहलू को प्रभावित कर रहा है। वेब के विकास के साथ विकसित हुआ यह माध्यम परंपरागत जनमाध्यमों से कई मामलों में भिन्न है। यह टीवी, समाचारपत्र और रेडियो जैसे परंपरागत माध्यमों की तुलना में अपने विचारों को साझा करने में ज्यादा सहज है। यह अपने उपभोक्ताओं को विषय–वस्तु बनाने और उसे साझा करने की आजादी देता है। इसके जरिये किसी भी घटना या खबर पर लोग अपनी राय प्रस्तुत कर सकते हैं। इसने ऑडियंस को सक्रिय संदेश निर्माता के तौर पर स्थापित कर दिया। वेब 3.0 के आने के बाद से तो यह और भी ज्यादा परस्पर संवादात्मक हो गया है। आज का सोशल मीडिया पहले की तुलना में ज्यादा स्थानीय है क्योंकि आज हम सिमेंटिक वेब की दुनिया में जी रहे हैं। साल 2000 के पहले का इन्टरनेट सिर्फ अंग्रेजी ही समझता था परन्तु आज का गूगल हमें हिंदी, बांग्ला, भोजपुरी और अन्य स्थानीय भाषाओं में भी विषय वस्तु प्रदान कर रहा है।

सोशल मीडिया एक इंटरनेट आधारित जनमाध्यम है। प्रसिध्द मीडिया वैज्ञानिक मैके पिट और कुआन दृ हॉस ने सोशल मीडिया को कुछ इस तरह से परिभाषित किया है। ‘‘सोशल मीडिया वेब–आधारित सेवाएं हैं जो व्यक्तियों, समुदायों और संगठनों को सहयोग करने, कनेक्ट करने, बातचीत करने और समुदाय को बनाने, सह–निर्माण, संशोधित करने, साझा करने और आसानी से सुलभ होने वाली उपयोगकर्ता–जनित सामग्री के साथ संलग्न करने की अनुमति देती हैं” (हॉपकिंस, 2019)’’। इस परिभाषा के आधार पर हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया की मदद उपभोक्ता आधारित विषय वस्तु बनाई जा सकती है, यानी की जिसका जैसा स्वाद, वैसा उसे परोसो, उसे यह आजादी दो कि वह बता सके कि उसे वह कितना पसंद आया साथ ही अपने पसंद को वह लोगों से साझा भी करे। सोशल

मीडिया की इसी खासियत में इसे वस्तु, सेवा एवं विचार का प्रचार–प्रसार का एक उपयुक्त माध्यम बना दिया। आज यह मार्केटिंग संचार और राजनीतिक संचार का एक प्रमुख उपकरण है। इंटरनेट माध्यमों के जरिए हम अपने विचार साझा करे और लोगों से संचार कर सकें उन्हें हम सोशल नेटवर्किंग साइट्स के नाम से जानते हैं। वैसे एक इंटरनेट उपभोक्ता के पास प्रयोग करने हेतु कई सोशल साइट्स उपलब्ध हैं, परन्तु इनमें सर्वाधिक लोकप्रिय फेसबुक और ट्विट्टर ही हैं। फेसबुक एक सोशल नेटवर्किंग साइट है जबकि ट्विटर एक माइक्रोब्लॉग्गिंग साइट है। हमारे देश भारत में 290 लाख से ज्यादा फेसबुक उपभोक्ता है। यह दुनिया के किसी भी किसी भी देश में फेसबुक प्रयोग करने वाली जनसंख्या का सर्वाधिक है। एक सर्वे के अनुसार भारत में ट्विटर प्रयोग करने वालों की संख्या 24.45 लाख है। भारत में स्मार्टफोन उपभोक्ता की वृद्धि के साथ सोशल मीडिया उपभोक्ताओं की संख्या तेज़ी से बढ़ी है। इंडियन सेलुलर और मोबाइल एसोसिएशन तथा केपीएमजी के सर्वेक्षण में आंकड़ों के अनुसार साल 2022 तक ग्रामीण स्मार्टफोन उपभोक्ताओं की संख्या 35 प्रतिशत तक बढ़ेगी। यह दर्शाता है कि भारत में सोशल मीडिया की पहुंच दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है.

इस प्रभावी जनमाध्यम की ताकत को देश के विभिन्न राजनीतिक दलों ने बखूबी समझा है और अपने प्रचार–प्रसार के लिए वे इसका प्रमुखता से उपयोग कर रहे हैं। आज देश की तमाम पार्टियों के अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स मौजूद हैं। यह राजनीतिक संचार का एक अभिन्न अंग बन चुका है। चुनावी प्रचार के दौरान राजनीतिक दल, उपभोक्ता आधारित कंटेंट एवं लोगों के बीच फ़ैल सके ऐसे संदेश (टाप डाउन मैसेज), फेसबुक, ट्विटर या अन्य माध्यमों से साझा करते हैं। एक तरफ उपभोक्ता आधारित विषय वस्तु का उद्देश्य लोगों के बीच कमेंट वार छेड़ने का होता है तो टॉप डाउन संदेश इसलिए बनाये जाते हैं ताकि उसे पढने वाला उसको बिना किसी बदलाव के साझा कर सके। सोशल मीडिया ने आम जनता को मुफ्त में काम करने डिजिटल पोलिटिकल मजदूर बना दिया है। राजनीतिक दल हमें कोई पैसे नहीं देते और हम मुफ्त में ही उनके प्रचार तंत्र का हिस्सा बन जाते हैं।

इस शोधपत्र में विभिन्न विधानसभा चुनावों के दौरान भारत के राजनीतिक दलों द्वारा राजनीतिक संचार के लिए फेसबुक और सोशल मीडिया के प्रयोग का अध्ययन किया जाना है। राजनीतिक संचार का आशय राजनीतिक विचारधारा, चुनावी वादे और अन्य राजनीतिक गतिविधियों को जनता के बीच विभिन्न माध्यमों के जरिए पहुंचाने से है।

2.0 साहित्य पुनरावलोकन

साहित्य पुनरावलोकन के दौरान शोधार्थी ने पूर्व में किए गए अध्ययनों से चुनाव प्रचार में सोशल मीडिया की भूमिका का पता लगाया हे। कुछ शोध अध्ययन की समीक्षा नीचे अंकित की जा रही है।

अमेरिका, भारत सहित अन्य लोकतान्त्रिक देशों में सोशल मीडिया चुनाव प्रचार का एक अभिन्न अंग बन चुका है। असम विधानसभा चुनाव 2016 में, भाजपा के जीत में सोशल मीडिया की प्रमुख भूमिका रही। अधिक ग्रामीण आबादी होने के बावजूद भी सोशल मीडिया, चुनाव प्रचार का एक प्रभावी उपकरण साबित हुआ, (शर्मा और महापात्रा, 2020)।

मेक्सिको में 2017 में चुनावी प्रचार के दौरान फेसबुक पर विजेता पार्टी की छवि लोगों के नज़र में बहुत बुरी थी। बुरी छवि के बावजूद भी पार्टी जीतने में सफल रही। हारने वाली पार्टी ने फेसबुक पर भावनात्मक रूप से ज्यादा मानवीय पोस्ट किए थे। यह दर्शाता है कि फेसबुक पर नकारात्मक प्रचार भी चुनावी सफलता दिलाने में मददगार है, (अलमाजान और वैलीकुर्ज, 2018)।

साल 2014 के भारतीय आम चुनाव में ट्विटर की भूमिका का अध्ययन करते हुए शोधार्थियों ने यह पाया कि ट्विटर पर ज्यादा सक्रियता लोगों की जोड़े रखने और चुनाव जीतने में राजनीतिक दल के लिए मददगार है, (अहमद, जैदका और चो, 2016)।

3.0 शोध पद्धति

शोध के इस भाग में शोध की आवश्यकता, शोध के उद्देश्य और शोध विधि का वर्णन किया गया है।

3.1 शोध की आवश्यकता : प्रस्तुत शोध यह पता लगाने के लिए एक कड़ी का काम करहेगा कि राज्यों के प्रमुख राजनीतिक दल फेसबुक

और सोशल मीडिया पर किस तरह से चुनावी प्रचार कर रहे हैं? उनके फेसबुक पोस्ट और ट्वीट सोशल मीडिया उपभोक्ताओं के बीच कितने लोकप्रिय हैं? राजनीतिक दल अपनी विचारधारा का सोशल मीडिया पर किस प्रकार प्रचार करते हैं?

3.2 **शोध के उद्देश्य : शोध के उद्देश्य निम्न हैं।**

1. यह जानना कि भारत की कौन सी राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टी के आधिकारिक ट्वीट और फेसबुक अधिक लोकप्रिय हैं।
2. यह पता लगाना कि भारत की राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियां अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल और फेसबुक पेज से अपनी राजनीतिक विचारधारा को किस प्रकार प्रचारित–प्रसारित करती हैं।

3.3 शोध विधि : प्रस्तुत शोध विवरणात्मक प्रकृति का है और आंकड़ों के संकलन के लिए संख्यात्मक उपागम (अप्रोच) को अपनाया गया हैं। अंतर्वस्तु विश्लेषण यानी कंटेंट एनालिसिस शोध विधि से भारत की प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों के आधिकारिक फेसबुक और ट्विटर हैंडल से किए गए पोस्ट और ट्वीट का विश्लेषण किया गया है। कंटेंट एनालिसिस के लिए कोडबुक को शोध तकनीक के रूप में अपनाया गया है। उद्देश्यपरक निदर्शन (सैंपलिंग) तकनीक का प्रयोग फेसबुक पोस्ट और ट्वीट का चयन करने के लिए किया गया है। केवल उन्हीं फेसबुक पोस्ट और ट्वीट को बतौर सैंपल चुना गया है जिन्हें भारत की प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से ट्वीट और फेसबुक पेज पर पोस्ट किया गया है। इस दौरान 600 से अधिक फेसबुक पोस्ट और करीब इतने ही ट्वीट को बतौर सैंपल एकत्र किया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण साधारण प्रतिशतता विधि से किया गया है। आंकड़ों के प्रस्तुतीकरण के लिए बार चार्ट बनाए गए हैं। शोध के दौरान मीडिया निर्भरता सिद्धांत को सैद्धांतिक अवधारणा के रूप में अपनाया गया है।

4.0 आंकड़ों का विश्लेषण : प्रस्तुत शोध में साधारण प्रतिशतता विधि से फेसबुक और ट्विटर के पोस्ट का विश्लेषण किया गया है।

4.1 : भारत की प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों के रि–ट्वीट की प्रकृति का अध्ययन

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

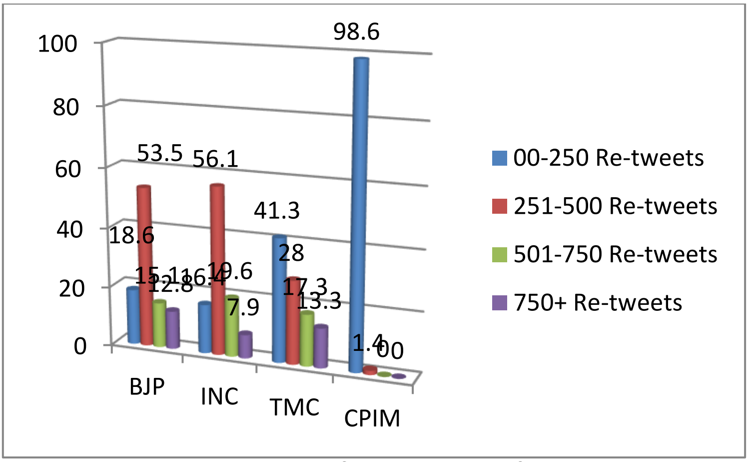

ग्राफ क्रमांक 4.1 : रि–ट्वीट की प्रकृति का अध्ययन

रि–ट्वीट से सीधा तात्पर्य ट्वीट की लोकप्रियता से है। ट्वीट के अधिक रि–ट्वीट से यह पता चलता है कि ट्वीट आम लोगों के बीच चर्चा का विषय बना है और उसे लेकर लोग सक्रिय रूप से विमर्श में लगे हैं। रि–ट्वीट का अध्ययन ट्वीट करने के 48 घंटे बाद से किया गया है। ग्राफ क्रमांक 4.1 से स्पष्ट है कि विश्व के सबसे अधिक पाटी सदस्य का दावा करने वाली भारतीय जनता पार्टी के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से किए गए सर्वाधिक 53.5 प्रतिशत ट्वीट 251–500 बार रि–ट्वीट किए गए हैं। 15.1 प्रतिशत ट्वीट 501–750 बार तो 12.8 प्रतिशत ट्वीट 750 से अधिक बार रि–ट्वीट किए गए हैं। केवल 18.6 प्रतिशत ट्वीट 250 से कम रि–ट्वीट किए गए हैं। देश के दूसरे बड़े विपक्षी दल कांग्रेस के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से किए गए सर्वाधिक 56.1 प्रतिशत ट्वीट 251–500 बार रि–ट्वीट किए गए हैं। 19.6 प्रतिशत ट्वीट 501–750 बार तो 7.9 प्रतिशत ट्वीट 750 से अधिक बार रि–ट्वीट किए गए हैं। केवल 16.4 प्रतिशत ट्वीट 250 से कम रि–ट्वीट किए गए हैं। देश की एक लोकप्रिय राष्ट्रीय पार्टी तृणमूल कांग्रेस के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से किए गए 28.0 प्रतिशत ट्वीट 251–500 बार रि–ट्वीट किए गए हैं। 17.3 प्रतिशत ट्वीट 501–750 बार तो 13.3 प्रतिशत ट्वीट 750 से अधिक बार रि–ट्वीट किए गए हैं। सर्वाधिक 41.3 प्रतिशत ट्वीट 250 से कम रि–ट्वीट किए गए हैं। देश के एक पुराने दल कम्युनिस्ट पार्टी

आफ इंडिया (मार्क्सवादी) के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से किए गए सर्वाधिक 98.6 प्रतिशत ट्वीट 250 से कम रि–ट्वीट किए गए हैं।

4.2 : राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों को ट्वीट पर मिले लाइक्स का अध्ययन

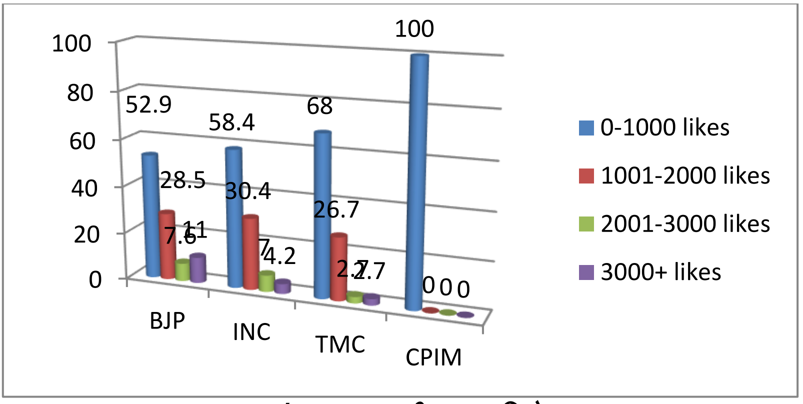

ग्राफ क्रमांक 4.2 : ट्वीट पर मिले लाइक

सोशल मीडिया पर ट्वीट के लाइक यह बताने के लिए काफी हैं कि राजनीतिक पार्टी के विचार को आमजन कितना पसंद कर रहे हैं। ट्वीट के लाइक्स को ट्वीट करने के 48 घंटे बाद गिना गया है। ग्राफ क्रमांक 4.2 से स्पष्ट है कि भारतीय जनता पार्टी के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से किए गए सर्वाधिक 52.9 प्रतिशत ट्वीट को 1000 तक लाइक्स मिले हैं। 28.5 प्रतिशत ट्वीट को 1001–2000 तक लाइक्स मिले हैं तो 7.6 प्रतिशत ट्वीट को 2001–3000 लाइक्स मिले हैं। वहीं, 11.0 प्रतिशत ट्वीट को 3000 से अधिक लाइक्स मिले हैं। कांग्रेस के ट्विटर हैंडल से किए गए 30.4 प्रतिशत ट्वीट को 1001–2000 तक लाइक्स मिले हैं तो 7.0 प्रतिशत ट्वीट को 2001–3000 तक लाइक्स मिले हैं। केवल 4.2 प्रतिशत ट्वीट को 3000 से अधिक लाइक्स मिले हैं। तृणमूल कांग्रेस के 26.7 प्रतिशत ट्वीट को 1001–2000 तक लाइक्स मिले हैं तो 2.7 प्रतिशत ट्वीट को 2001–3000 तक लाइक्स मिले हैं। महज 2.7 प्रतिशत ही ट्वीट को 3000 से अधिक लाइक्स मिले हैं। कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया

(मार्क्सवादी) के सभी 100.0 प्रतिशत ट्वीट को 01–1000 तक ही लाइक्स मिले हैं।

4.3 : राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों के फेसबुक पोस्ट को शेयर करने की प्रकृति का अध्ययन

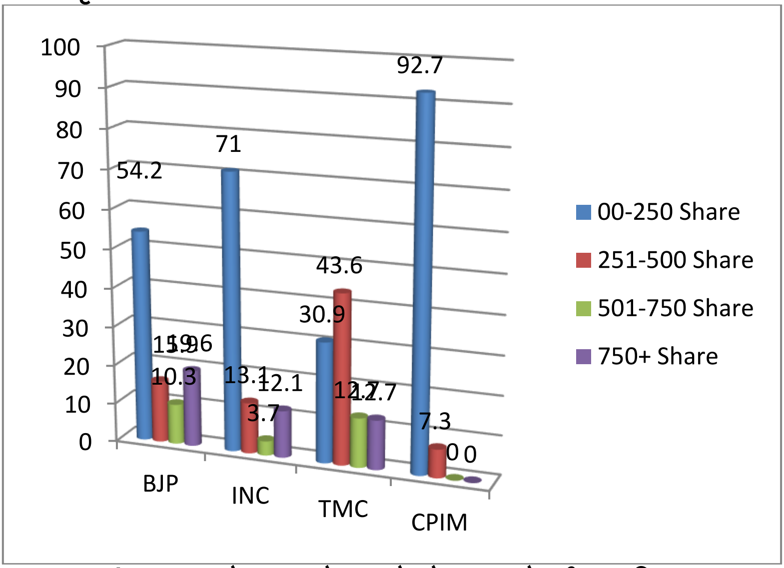

ग्राफ क्रमांक 4.3 : फेसबुक पोस्ट को शेयर करने की प्रकृति का अध्ययन

फेसबुक पोस्ट के अधिक शेयर यह बताते हैं कि पोस्ट में प्रस्तुत विचार लोगों के बीच खूब लोकप्रिय है। पोस्ट को शेयर करने की प्रकृति का अध्ययन पोस्ट के 48 घंटे बाद किया गया है। ग्राफ 4.3 से स्पष्ट है कि भारतीय जनता पार्टी के आधिकारिक पेज से 15. 9 फीसदी पोस्ट 251–500 बार तो 19.6 फीसद पोस्ट 750 बार से ज्यादा शेयर किए गए हैं। कांग्रेस के पेज से 13.1 फीसदी पोस्ट 251–500 बार तक शेयर किए गए। 12.1 फीसदी पोस्ट 750 बार से ज्यादा शेयर किए गए। तृणमूल कांग्रेस के पेज से सर्वाधिक 43.6 फीसदी पोस्ट 251–500 बार तक शेयर किए गए हैं। 12.7 फीसदी पोस्ट 750 बार से ज्यादा शेयर किए गए। सीपीआई (एम) के पेज से 7.3 फीसदी पोस्ट 251–500 बार तक शेयर किए गए। कोई भी पोस्ट 500 से ज्यादा बार शेयर नहीं किया गया है।

4.4 : राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों को फेसबुक पोस्ट पर मिले लाइक्स का अध्ययन

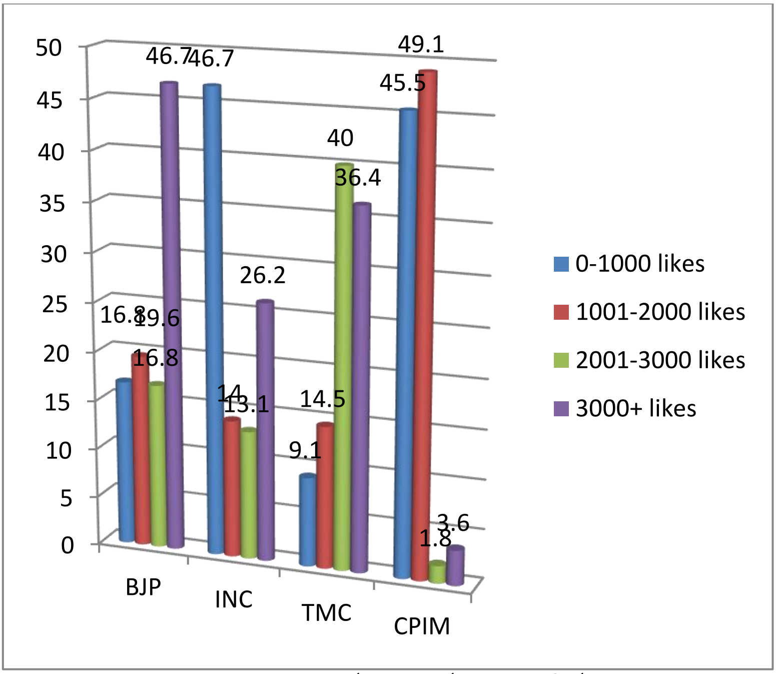

ग्राफ क्रमांक 4.4 : फेसबुक पोस्ट पर मिले लाइक

फेसबुक पर मिले लाइक्स राजनीतिक दल के विचार के समर्थन के प्रत्यक्ष गवाह हैं। ग्राफ नंबर 4.4 से स्पष्ट है कि भाजपा के 46.7 फीसदी फेसबुक पोस्ट को 3000+ लाइक्स मिले हैं। 16.8 फीसदी पोस्ट को 2001–3000 लाइक्स मिले हैं। कांग्रेस के 26.2 फीसदी फेसबुक पोस्ट को 3000+ लाइक्स मिले हैं। 13.1 फीसदी पोस्ट को 2001–3000 लाइक्स मिले। तृणमूल कांग्रेस के 36.4 फीसदी फेसबुक पोस्ट को 3000+ लाइक्स मिले हैं। 40 फीसदी पोस्ट को 2001–3000 लाइक्स मिले। सीपीआई (एम) के 3.6 फीसदी फेसबुक पोस्ट को 3000+ लाइक्स मिले हैं। 1.8 फीसदी पोस्ट को 2001–3000 लाइक्स मिले।

4.5 : राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों के ट्वीट में राजनीतिक विचारधारा का प्रतिबिंबन

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

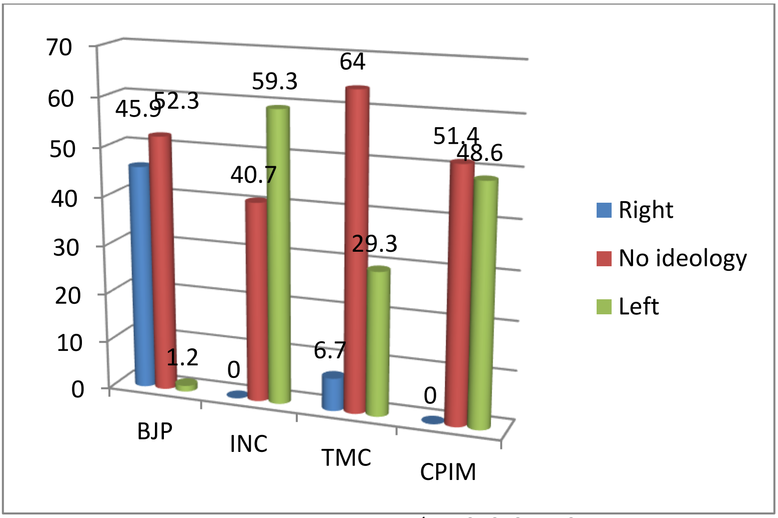

ग्राफ क्रमांक 4.5 : ट्वीट में प्रतिबिंबित विचारधारा

वर्तमान में देश की राजनीति दो विचारधाराओं में बंटी है, ये हैं राइट विंग यानी दक्षिणपंथ और दूसरा है लेफ्ट विंग यानी वामपंथ। ग्राफ क्रमांक 4.5 के अनुसार भारतीय जनता पार्टी के ट्विटर हैंडल से किए गए सर्वाधिक 52.3 प्रतिशत ट्वीट में कोई राजनीतिक विचारधारा प्रतिबिंबित नहीं हो रही है। हालांकि 45.9 प्रतिशत ट्वीट में दक्षिणपंथी राजनीतिक विचारधारा प्रतिबिंबित हो रही है। कांग्रेस के ट्विटर हैंडल से किए गए सर्वाधिक 59.3 प्रतिशत ट्वीट में वामपंथी विचारधारा प्रतिबिंबित नहीं हो रही है, वहीं 40.7 प्रतिशत ट्वीट में काई भी राजनीतिक विचारधारा प्रतिबिंबित नहीं हो रही है। तृणमूल कांग्रेस के ट्विटर हैंडल से किए गए सर्वाधिक सर्वाधिक 64.0 प्रतिशत ट्वीट में कोई राजनीतिक विचारधारा प्रतिबिंबित नहीं हो रही है। 29.3 प्रतिशत ट्वीट में वामपंथी विचारधारा का प्रभाव दिखा। केवल 6.7 प्रतिशत ट्वीट में दक्षिणपंथी विचारधारा का प्रभाव रहा है। कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया (मार्क्सवादी) के ट्विटर हैंडल से किए गए सर्वाधिक 51.4 प्रतिशत ट्वीट में कोई राजनीतिक विचारधारा प्रतिबिंबित नहीं हो रही है। 48.6 प्रतिशत ट्वीट में वामपंथी विचारधारा का प्रभाव दिखा।

4.6 : राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियों के फेसबुक पोस्ट में राजनीतिक विचारधारा का प्रतिबिंबन

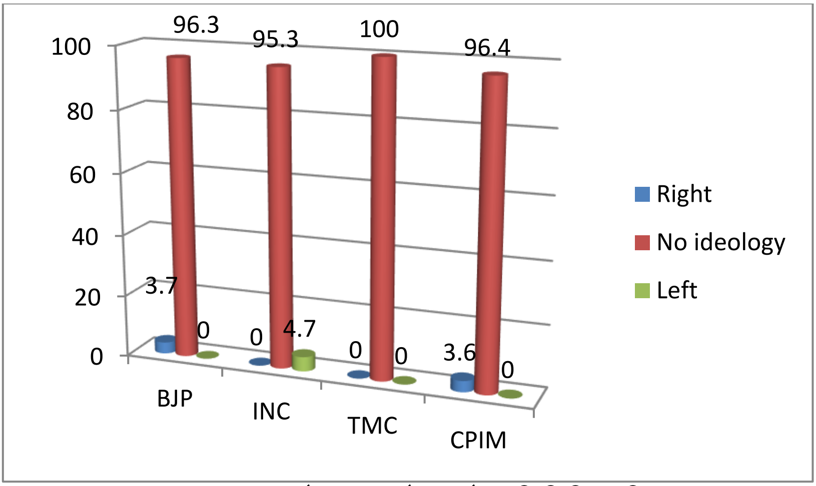

ग्राफ क्रमांक 4.6 : फेसबुक पोस्ट में प्रतिबिंबित विचारधारा

ट्विटर की तरह ही फेसबुक पोस्ट में भी राजनीतिक पार्टियां अपनी विचारधारा का समर्थन करने वाले विचार प्रचारित–प्रसारित करती हैं। ग्राफ क्रमांक 4.6 से स्पष्ट है कि भाजपा के आधिकारिक फेसबुक पेज से 96.3 प्रतिशत पोस्ट में कोई विचारधारा प्रदर्शित नहीं होती। हालांकि शेष बचे 3.7 प्रतिशत पोस्ट में दक्षिणपंथी विचारधारा का प्रभाव दिखा। कांग्रेस के फेसबुक पेज की 4.7 फीसदी पोस्ट में ही वामपंथी विचारधारा प्रदर्शित होती है। टीएमसी के आधिकारिक फेसबुक पेज की 100 फीसदी पोस्ट में कोई विचारधारा प्रतिबिंबित नहीं होती है। सीपीआई(एम) के फेसबुक पेज की 96.4 फीसदी पोस्ट में कोई विचारधारा प्रदर्शित नहीं होती। हालांकि आश्चर्यजनक रूप से 3.6 फीसदी पोस्ट दक्षिणपंथी विचारधारा को दर्शाते हैं।

5.0 परिणाम और निष्कर्ष

1. सदस्यता के मामले में देश की सबसे बड़े दल भारतीय जनता पार्टी के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से अन्य राष्ट्रीय दलों की अपेक्षा ट्वीट बार रि–ट्वीट किए जाते हैं। केवल 18.6 प्रतिशत ट्वीट ही 250 से कम रि–ट्वीट किए गए हैं। वहीं, देश के दूसरे बड़े विपक्षी दल कांग्रेस के भी ट्वीट रि–ट्वीट

के आधार पर काफी लोकप्रिय हैं लेकिन भाजपा जैसी लोकप्रियता अभी नहीं मिली है। यहां भी केवल 16.4 प्रतिशत ट्वीट 250 से कम रि–ट्वीट किए गए हैं। पूरे देश में अपनी पैठ बनाने में लगी तृणमूल कांग्रेस के ट्वीट अपेक्षाकृत कम रि–ट्वीट किए जाते हैं। इसके 41.3 प्रतिशत ट्वीट 250 से कम रि–ट्वीट किए गए हैं। देश के एक पुराने दल कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया (मार्क्सवादी) के ट्वीट बेहद कम रि–ट्वीट किए गए हैं। इससे स्पष्ट है कि देश के दोनों प्रमुख दल जमीन के साथ सोशल मीडिया पर भी राजनीतिक जुबानी जंग लड़ रहे हैं। हालांकि भारतीय जनता पार्टी सोशल मीडिया पर काफी लोकप्रिय है तो कम्युनिस्ट पार्टी सबसे कम।

2. भारतीय जनता पार्टी के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से किए गए ट्वीट को सबसे अधिक लाइक्स मिलते हैं। पार्टी के 11. 0 प्रतिशत ट्वीट को 3000 से अधिक लाइक्स मिले हैं। कांग्रेस भी ट्विटर पर लोकप्रिय है लेकिन भारतीय जनता पार्टी की तुलना में थोड़ा पीछे है। कांग्रेस के 4.2 प्रतिशत ट्वीट को 3000 से अधिक लाइक्स मिले हैं। तृणमूल कांग्रेस ट्विटर पर लोकप्रियता के मामले में काफी पीछे हैं शायद इसका कारण पार्टी का पूरे देश में पहुंच नहीं होना है। तृणमूल कांग्रेस के महज 2.7 प्रतिशत ट्वीट को ही 3000 से अधिक लाइक्स मिले हैं। कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया (मार्क्सवादी) ट्वीटर पर अन्य पार्टियों की तुलना में बेहद कम लोकप्रिय है। पार्टी का एक प्रतिशत भी ट्वीट एक हजार के आंकड़े को नहीं छू पाया है।
3. भारतीय जनता पार्टी के आधिकारिक पेज से किए गए पोस्ट सबसे अधिक लोकप्रिय पाए गए हैं। इसके बाद क्रमशः तृणमूल कांग्रेस और कांग्रेस अधिक लोकप्रिय हैं। सीपीआई(एम) फेसबुक पर सबसे कम लोकप्रिय है। भाजपा के 19.6 फीसदी पोस्ट तो 750 से ज्यादा बार शेयर किए गए हैं। कांग्रेस के भी 12.1 फीसदी पोस्ट 750 बार से ज्यादा तो तृणमूल कांग्रेस के 12.7 फीसदी पोस्ट 750 बार से ज्यादा शेयर किए गए

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

हैं। सीपीआई(एम) का कोई भी पोस्ट 500 से ज्यादा बार शेयर नहीं किया गया है।

4. भारतीय जनता पार्टी और तृणमूल कांग्रेस दोनों दल फेसबुक पर काफी पसंद किए जा रहे हैं। हालांकि भाजपा के पोस्ट अपेक्षाकृत अधिक पसंद किए जाते हैं। देश के दोनों सबसे पुराने दल कांग्रेस और सीपीआई(एम) के पोस्ट काफी कम लोकप्रिय हैं। भाजपा के 46.7 फीसदी फेसबुक पोस्ट को 3000+ लाइक्स मिले हैं। कांग्रेस के 26.2 फीसदी फेसबुक पोस्ट को 3000+ लाइक्स मिले हैं। तृणमूल कांग्रेस के 36.4 फीसदी फेसबुक पोस्ट को 3000+ लाइक्स मिले हैं। सीपीआई (एम) के 3.6 फीसदी फेसबुक पोस्ट को 3000+ लाइक्स मिले हैं।

5. भारत देश की राजनीति विचारधाराओं पर केंद्रित रही है। भारतीय जनता पार्टी के ट्विटर हैंडल से किए गए ट्वीट से स्पष्ट है कि इसके ट्वीट दक्षिणपंथ का समर्थन करते हैं। पार्टी के 45.9 प्रतिशत ट्वीट में दक्षिणपंथी राजनीतिक विचारधारा प्रतिबिंबित हो रही है। राजनीतिक विशेषज्ञ कांग्रेस के लेफ्ट–सेंट्रल पार्टी का दर्जा देते हैं लेकिन पार्टी के पोस्ट वामपंथ से प्रभावित हैं। कांग्रेस के 59.3 प्रतिशत ट्वीट में वामपंथी विचारधारा प्रतिबिंबित नहीं हो रही है। तृणमूल कांग्रेस एक ऐसा दल है जो वामपंथ और दक्षिणपंथ दोनों विचारधाराओं की नाव पर सवार है। तृणमूल कांग्रेस के 29. 3 प्रतिशत ट्वीट में वामपंथी विचारधारा का प्रभाव दिखा तो 6.7 प्रतिशत ट्वीट में दक्षिणपंथी विचारधारा का प्रभाव रहा। कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया (मार्क्सवादी) अपनी प्रकृति के अनुसार वामपंथी विचारधारा के समर्थन में पोस्ट करती है। पार्टी के 48.6 प्रतिशत ट्वीट में वामपंथी विचारधारा दृष्टिगोचर हो रहा है।

6. भारत में विचारधारा ही राजनीतिक दल की आत्मा है। हालांकि कई राजनीतिक दल अपनी विचारधारा के विपरीत भी फेसबुक पर पोस्ट कर रहे हैं। अपनी विचारधारा के अनुरूप भाजपा दक्षिणपंथ का समर्थन करते हुए पोस्ट करती है लेकिन इनकी संख्या काफी कम है। कांग्रेस भी बेहद कम

स्तर पर ही सही लेकिन वामपंथ का समर्थन करने वाले पोस्ट करती है। सीपीआई(एम) की ओर से वामपंथ के बजाए दक्षिणपंथ केंद्रित पोस्ट किए गए हैं। भाजपा के 3.7 प्रतिशत पोस्ट में दक्षिणपंथी विचारधारा का प्रभाव दिखा। कांग्रेस के 4.7 प्रतिशत पोस्ट वामपंथ से प्रभावित दिखे। टीएमसी के पोस्ट में स्पष्ट रूप से कोई विचारधारा नहीं दिखी। सीपीआई(एम) के 3.6 फीसदी फेसबुक पोस्ट में आश्चर्यजनक रूप से दक्षिणपंथ का प्रभाव दिखा।

6.0 सन्दर्भ सूची

1. Ahmed, S., Jaidka, K., & Cho, J. (2016, March). The 2014 Indian Election on Twitter: A compariosn of camapign strategies of political parties.
2. Almazan, R. S., & Valle-Cruz, D. (2018). Facebook Impact and Sentiment Analysis on Political Campaigns. 19th Annual International Conference .
3. Hopkins , J. (2019, 10 19). Juian Hopkins, PhD, How to Define a Social Media . Retrieved from www.julianhopkins.com: www.julianhopkins.com
4. Sharma, A., & Goyal, A. (2018). Tweet, Truth and Fake News: A Study of BJP's Official Tweeter Handle. Journal of Content, Community & Communication, 8 (4), 22, 28.
5. Sarmah, R., & Mohapatra, D. (2020). Role of Social Media in Election Campainging in India with Special Reference to Assam. World Journal of Social Science Research.

गले पड़ी गंगा

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-7-8

संस्करण : 2020, मूल्य : 200/-

सत्ता के विकासात्मक आईने में मातृसत्ता का रूप

डॉ. अंकित अभिषेक
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), सी.वी.एस.कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
मो. 8750937458

सत्ता शब्द का प्रयोग आम बोलचाल की भाषा में या दैनिक व्यवहार में किसी पद विशेष के लिए किया जाता है। राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, धार्मिक इन सब की सत्ता होती है और विशेष रूप से सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं की संकल्पना को साकार करने के लिए जो व्यवस्था को चलाने वाला तंत्र होता है उसे सत्ता कहा जा सकता है। आदिम काल से ही पूरे दुनिया में सभ्यता के विकास का इतिहास स्त्री के दमन एवं शोषण का भी इतिहास माना जा सकता है। पूरी दुनिया में स्त्री वर्ग का शोषण कहीं ना कहीं आदिकाल से ही देखने को मिलता है। वर्तमान में भी स्त्री अपने अधिकारों के लिए कहीं न कहीं इस शोषण से लड़ती हुई दिखाई दे रही है। मानव सभ्यता के आरंभ से ही इंसान समूह में रहना पसंद करता है उस समय घर का कार्य जैसी कोई अलग से व्यवस्था नहीं थी। प्रारंभ में पुरुष और स्त्री मिलकर शिकार करते थे और मछली पकड़ना, भोजन इकट्ठा करने जैसे कार्य सिम्मलित रूप से किया करते थे। यद्यपि सभ्यता के आरंभ से ही स्त्रियां अक्सर शिकार पर जाती थी। किंतु गर्भधारण करने के दौरान वह बच्चे के बड़े होने तक वह काफी लंबे समय तक घर में रहने को विवश होते थे। ऐसे समय में भी वे अपने आसपास के इलाकों से खाना इकट्ठा करने में खुद को व्यस्त रखते थे और बाद में जानवरों को पालतू बनाने की कला सीखने के बाद उन्होंने कृषि और मवेशी पालन जैसे महत्वपूर्ण खोज की। आदिम समाज में लिंग के आधार पर यह पहला प्राकृतिक श्रम विभाजन देखने को मिलता है। प्रस्तुत संदर्भ में आशारानी वोहरा के अनुसार “कभी स्त्री-पुरुष संबंधों में खुली छूट रही होगी दोनों के बीच लाड़ होगा तो लड़ाई भी। प्यार में क्रूरता निकली होगी। पर मनुष्य सब भोगता और खेलता था, प्रश्न नहीं उठाता था। प्रकृति के हाथों आसानी से

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

खेलता रह सकता था। पर प्रकृति पर्याप्त ना हो सकी उसके लिए, ना वन्य जीवन। समाज बनाना आवश्यक हुआ। भूख और भूख के अतिरिक्त भी नाना प्रकार के परस्पर आदान-प्रदान की सृष्टि हुई। सुविधा के लिए पैसा जन्मा और बीच में शासन संस्था आवश्यक हुई। यहीं से स्त्री-पुरुष संबंधों में पेंच पड़ने शुरू हुए। पुरुष के हाथों स्त्री पिट लेती थी पर इस कारण प्रश्न उपस्थित नहीं होता था। ना इसे समस्या समझा जाता था।"(वोहरा, आशारानी,नारी शोषण:आईने और आयाम, पृ.8)

सत्ता की अवधारणा अत्यंत प्राचीन है। सभ्यता की शुरुआत से ही सत्ता का स्वरूप बनना आरंभ हो गया था किंतु हम यह नहीं कह सकते हैं कि सत्ता का स्वरूप किस काल विशेष और स्थान विशेष से बनना आरंभ हुआ। यह अनुमान सहज ही किया जा सकता है कि सभ्यता निर्माण के पूर्व सत्ता का कोई परिपक्व स्वरूप ना होकर मात्र शक्ति प्रदर्शन ही उपस्थित रहा होगा। शक्ति प्रदर्शन एवं प्रयोग के नियम-कानून नहीं होते। शक्ति में स्थायित्व नहीं है क्योंकि जैसे ही एक शक्ति से बड़ी दूसरी शक्ति अस्तित्व में आती है तो वह पहली शक्ति को स्थानांतरित कर देती है। इसलिए व्यक्ति अपने विकास के साथ ही सत्ता की ओर अग्रसर होता है। सत्ता में शक्ति है लेकिन इसके साथ-साथ नियम और कानून का बंधन भी है। इस प्रकार सत्ता से अभिप्राय एक ऐसी शक्ति से है जो समाज, परिवार, संस्था, राजनीति आदि को नियामक एवं नियांतता के रूप में नियंत्रित करने में सक्षम है।

सत्ता परिवर्तनशील होती है। जब जब सत्ता बदलती है तब-तब प्रायः उसके नियम भी परिवर्तित हो सकते हैं। किंतु यह आवश्यक नहीं है कि यह नियम सदैव ही परिवर्तित होते रहे। जैसे भारत में पहले राजशाही थी। सत्ता नियमन के उनके अपने नियम एवं कानून थे। कालांतर में सत्ता परिवर्तन होता है और ब्रिटिश साम्राज्य भारत में स्थापित हो जाता है। ब्रिटिशों ने अपनी सुविधानुसार और समाज की आधुनिकता को ध्यान में रखते हुए निरंतर नए-नए नियम और कानून बनाते रहे। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात एक बार फिर सत्ता परिवर्तन होता है और भारतीय गणराज्य की स्थापना होती है। भारतीय जनमानस के अधिकारों को ध्यान में रखते हुए नए संविधान का निर्माण किया गया और अधिक से अधिक समाजोन्मुख नियम कानून बनाए गए। इससे यह स्पष्ट है कि सत्ता परिवर्तन के साथ-साथ प्रायः नए नियम- कानूनों का भी निर्माण होता है। यह भी ध्यातव्य है

कि समय के विकास के साथ-साथ नियम कानून अधिक से अधिक समाजोन्मुख होते जाते हैं। मनुष्य नागरिक के रूप में अपने अधिकारों के प्रति जितना अधिक सजग होता जाता है नियम-कानून और सत्ता उसी क्रम में समाजोन्मुख होते जाते हैं।

सत्ता के विभिन्न रूप होते हैं सामाजिक सत्ता, राजनैतिक सत्ता, पारिवारिक सत्ता, सांस्कृतिक सत्ता, धार्मिक सत्ता, जातीय सत्ता और आर्थिक सत्ता। चुकी भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज है इसलिए उपर्युक्त सभी संस्थाओं का सत्ता संचालन पुरुष वर्ग के द्वारा ही किया जाता रहा है। जैसे समाज को जब भी सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, धार्मिक, जातीय एवं आर्थिक स्तर पर जो भी निर्णय लेने होते हैं वह निर्णय पुरुष वर्ग ही अमूमन लेता है। यद्यपि यह सभी निर्णय आपसी सहमति और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत लिए जाते हैं। परिवार के निर्णय भी पुरुष ही लेता है लेकिन यह निर्णय लोकतांत्रिक नहीं होता क्योंकि परिवार का मुखिया कहीं ना कहीं अधिक सशक्त होता है और जो भी सदस्य उसके निर्णय की अवहेलना करता है वह उस सदस्य को परिवार से बेदखल कर देते हैं। सत्ता अपने विभिन्न रूपों में अंततः समाज और सामाजिक संस्थाओं को व्यवस्थित रखने का प्रयास करती रहती है। यद्यपि आधुनिक विचारों को में प्रायः सत्ता को दमनकारी स्वीकार किया और सामाजिक एवं सामाजिक संस्थाओं की सत्ता को ध्वस्त करने में अपना विश्वास जताया है। प्रस्तुत संदर्भ में ओम प्रकाश गाबा ने सत्ता को परिभाषित करते हुए कहा है कि "सत्ता किसी व्यक्ति संस्था नियम या आदेश का ऐसा गुण या क्षमता है जिसके कारण उसे सही या प्रमाणिक मानकर स्वेच्छा से उसके निर्देशों का पालन किया जाता है। सत्ता के प्रयोग के कारण ही अधिकारी नीतियां, नियम और निर्णय समाज में स्वीकार किए जाते हैं और प्रभावशाली ढंग से लागू किए जाते हैं।"(गाबा, ओम प्रकाश, विवेचनत्मक राजनीति,विज्ञान कोश, पृ.23)

मानव सभ्यता के आरंभ में जब आदिमानव जंगलों और गुफाओं में रहते थे और कंदमूल फल फूल आदि खा कर अपना जीवन यापन करते थे तब उनके लिए ईश्वर या धर्म का कोई अस्तित्व नहीं दिखाई देता था। तत्पश्चात मानव जाति आगे चलकर आग के अविष्कार के साथ पशु पक्षियों को भूनकर खाना प्रारंभ किया। उसने पत्थरों से तेज धार वाले यारों का

निर्माण करना प्रारंभ कर दिया जिससे उन्हें शिकार करने में आसानी होती थी। हम कह सकते हैं कि इस काल तक मानव समाज में पारिवारिक संबंधों का निर्माण अभी तक नहीं हुआ था। इस काल तक स्त्रियों को कोई रोक-टोक नहीं थी और वे स्वतंत्र रहकर भोग विलास की आशा में स्वतंत्रतापूर्वक जीवन यापन कर रही थी। प्रस्तुत संदर्भ में श्रीधरम के अनुसार "वन्य युग की स्त्रियां इसी स्वतंत्रता की तरफ इशारा करती है। आगे चलकर मानव ने कुल्हाड़ी बनाई, बर्तनों का निर्माण करना सिखा। बांस और घास से झोपड़ी बनाना सीखा और पशुपालन के साथ कबीलों में रहने लगा। इस काल में प्रकृति से भयभीत मानव ने सर्वप्रथम पेड़ों, बांबियों और पत्थरों की पूजा प्रारंभ की। मातृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण पेड़ों और पत्थरों की जगह आदिमानव देवियों की पूजा करने लगे। इस समय बच्चों को मां के बारे में जानकारी तो थी लेकिन यह जानकारी नहीं होती थी कि उसके पिता कौन हैं इसलिए स्त्री आधारित रक्त संबंध होता था और सारे अधिकार एवं प्रतिष्ठा भी स्त्रियों को ही प्राप्त थे।"(श्रीधरम, स्त्री:संघर्ष और सृजन, पृ.11)

मानव समाज में पितृसत्ता के उदय का कारण एंगेल्स व्यक्तिगत संपत्ति की अवधारणा को मानते हैं। एंगेल्स अपनी पुस्तक 'परिवार, व्यक्तिगत संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' के माध्यम से समाज के सामने यह मत प्रस्तुत करते हैं कि समाज का मातृसत्ता से पितृसत्ता में परिवर्तन हुआ है। इनके अनुसार पाषाण काल में खेती का अधिकारी पूरा कबीला होता था और स्त्रियां बागवानी संभालती थी। आदिम समाज में श्रम के इस विभाजन के आधार पर स्त्री और पुरुष समाज को संगठित करने का कार्य कर रहे थे। अधिक श्रम वाला कार्य अपेक्षाकृत पुरुष अधिक कर रहा था और स्त्रियों के लिए हल्के कामों का प्रावधान था। अधिक श्रम वाले कार्य को करने के कारण पुरुष के अंदर अहंकार की भावना पनपने लगी। व्यक्तिगत संपत्ति को लेकर अधिक लालच की वजह से पुरुष में अहंकार की भावना का निरंतर विकास होता चला गया। प्रस्तुत संदर्भ में श्रीधरम के अनुसार "धातुओं के संबंध में जानकारी बढ़ने के साथ विकास की संभावनाएं अधिक व्यापक हुई। व्यक्तिगत संपत्ति के लोभ से पुरुष में स्वामित्व की भावना विकसित हुई। वह जमीन का मालिक था, गुलामों का मालिक था और अब स्त्री का भी मालिक बन गया। यहीं से औरत की गुलामी की कहानी शुरू होती है जिस स्थिति में घरेलू कामकाज संभालने

के कारण औरत को परिवार में सर्वोच्च सत्ता के सिंहासन पर बिठाया था वहीं अब औरत की गुलामी का आधार बन गई।"(श्रीधरम, स्त्री:संघर्ष और सृजन, पृ.12)। आदिमानव समाज अब धीरे-धीरे विकसित होने लगी थी और यह समाज धीरे-धीरे शिकारी एवं संग्रहकर्ता से आगे बढ़कर कृषि कार्यों में संलिप्त होने लगे थे। कृषि काल में आकर यह आदिम समाज पूर्ण रूप से पितृसत्तात्मक होने लगा था। पितृसत्तात्मकता के विकास होने से अब धीरे-धीरे पशु और गुलाम के साथ-साथ स्त्री भी इस शोषण का शिकार होना प्रारंभ हो गई थी। धर्म भी धीरे-धीरे संहिताकरण के रूप में परिवर्तित होने लगा था। जिस आदिम समाज में स्त्री की स्थिति सबसे ऊंचे पायदान पर थी अब उसकी कीमत गांव के पशु और नौकर की भांति रह गई थी। उस समय भी दलित और स्त्री दोनों को शिक्षा से वंचित रखा गया था ताकि उन पर आसानी से शासन कर सके एवं उनका शोषण कर सके। पितृसत्तात्मक समाज ने पीढ़ी दर पीढ़ी शासन के द्वारा उनमें गुलामी की मानसिकता का निर्माण किया और उन्हें यह अच्छे से समझाया कि यही तुम्हारा धर्म है। स्त्री और पुरुष के बीच आदिकाल से ही श्रम का विभाजन तो था ही जिसमें पुरुष के जिम्मे में शिकार पर जाना और स्त्रियों के जिम्मे में बच्चे की देखभाल व खाद्यान्न इकट्ठा करना था। तत्पश्चात इनके बीच के संबंध का सत्ता के संबंध में परिवर्तित होना इसी श्रम विभाजन का परिणाम माना जाता है। कुछ स्त्रीवादी विद्वानों का यह मत है कि शिकार खाद्यान्न संग्रह युग के समाज में भोजन का 60% कंदमूल, मछली व फल होते थे जिन्हें संग्रहित करने का कार्य मुख्य रूप से स्त्री और बच्चे करते थे। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि स्त्रियों का कार्य पुरुषों की तुलना में कतई हीनतर नहीं था। इस इस संदर्भ में उमा चक्रवर्ती के कथनानुसार “बड़े आखेटों में पुरुषों के साथ स्त्रियों के शरीक होने के चित्रण मध्य भारत में प्राप्त हुए। ईसा पूर्व 5000 (मध्यपाषाणकालीन) भीमबेटका की गुफाओं के पेंटिंग में देखने को मिले हैं। पेंटिंग में स्त्रियां फल और अन्य खाद्य पदार्थ बटोरने के साथ-साथ टोकरी और जाल द्वारा छोटे-मोटे आखेट करते हुए दर्शाई गई है। पेंटिंग में एक स्त्री के कंधे से टुकड़ी लटक रही है जिसमें दो बच्चे हैं और उसके सिर पर एक पशु लदा हुआ है यानी एक साथ मां और संग्रहकर्ता की भूमिका निभाती स्त्री। एक अन्य स्त्री हिरन का सींग पकड़ कर खींच रही है तो एक अन्य मछली पकड़ रही है। टोकरी लिए हुए स्त्रियों

को प्रायः गर्भवती ही चित्रित किया गया है। सामूहिक शिकार दृश्यों में स्त्रियां भी शामिल दिखाई गई है।"(चक्रवर्ती, उमा, जाति समाज में पितृसत्ता, पृ.45)

पुरातात्विक सर्वेक्षणों के आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप के आरंभिक प्रागैतिहासिक समाज में औजार मिट्टी के बर्तन आवास के आधार पर इनका खाका खींचा जाता है। लेकिन इस बात के अभी तक कोई प्रमाण नहीं मिला है कि समाज के गठन का स्वरूप कैसा था और स्त्री पुरुष के बीच सत्ता संबंध था या नहीं था। किंतु प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मानव सभ्यता के अपने आरंभिक समय में लिंग आधारित भेदभाव ना के बराबर था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी प्रकार का निश्चित श्रम विभाजन समाज में नहीं था स्त्रियों का आर्थिक योगदान पुरुषों से ज्यादा नहीं तो कम भी नहीं माना जा सकता है। स्त्री का उसके प्रजनन क्षमता के आधार पर उसकी भूमिका पुरुषों के मुकाबले अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा सकता है। गर्भवती स्त्री का चित्रण, मां की भूमिका निभाती हुई स्त्री का चित्रण, यहां तक कि संतानोत्पत्ती का चित्रण उस समय के समाज में स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाने के लिए पर्याप्त कहा जा सकता है। यही कारण है कि संतानोत्पत्ति करती स्त्री के चित्र को मातृ देवी माना गया। प्राचीन संस्कृति के साक्ष्य स्थलों पर भी स्त्री का मातृ देवी के रूप का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत संदर्भ में कुसुम त्रिपाठी का मत है कि "यह जल्दी ही साबित हो गया कि श्रम विभाजन पर लगा पुरुषों का ठप्पा प्राकृतिक नहीं बल्कि सामाजिक रूप से बनाया गया था। लेकिन जैसे ही युद्ध खत्म हुए और पुरुष मोर्चे पर से वापस आ गए महिलाओं ने इन पुरुष के नौकरियों को छोड़ दिया और अपने महिला क्षेत्रों में वापस चली गई। लेकिन इसने एक चीज साबित कर दी कि महिलाएं वह सारे कार्य कर सकती है जिसके लिए पुरुष दावा करते हैं कि सामाजिक स्तर पर केवल वे ही सक्षम है। इस तरह पुरुषों और महिलाओं के काम में फर्क चाहे किसी भी कसौटी पर आधारित हो शारीरिक ताकत जैसे सामंतवाद कहता है या दक्षता जैसी पूंजीवाद कहता है पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रह के अलावा कुछ नहीं है।(त्रिपाठी, कुसुम, स्त्री संघर्ष के सौ वर्ष, पृ.49)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विवेचनत्मक राजनीति,विज्ञान कोश- गाबा, ओम प्रकाश
2. नारी शोषण:आईने और आयाम- वोहरा, आशारानी
3. स्त्री:संघर्ष और सृजन- श्रीधरम
4. जाति समाज में पितृसत्ता- चक्रवर्ती, उमा,
5. स्त्री संघर्ष के सौ वर्ष- त्रिपाठी, कुसुम

लेख

हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथा लेखन

भारतीय संस्कृति में मानव निर्माण के साथ दो जातियों का निर्माण हुआ। स्त्री एवं पुरुष। पूर्व में स्त्री पुरुष के समान अधिकार युक्त थी। काल के गर्भ से प्रणीत सत्य धीरे-धीरे स्त्री को कई सारे बंधनों में बांधता चला गया। भारतीय स्त्री जो उच्चतम संस्कृति की वाहक थी उसे पदच्युत कर दिया गया। खैर लंबे समय के इतिहास के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में क्षरण के कई अध्याय सन्निहित है। मैं इसके विस्तार में नहीं जाकर मध्यकाल एवं परिवर्तित काल में स्त्री के स्थान में हुए निरंतर बदलाव एवं मानवी से इसके वस्तु या धन के रूप में परिवर्तित स्वरूप की ओर अपनी सोच को मोड़ती हूं तो पाती हूं कि एक-एक सीढ़ियां उतरते हुए स्त्री अपने पूर्व स्थापित सत्ता खोने लगी। इस बीच बाह्य आक्रमणों एवं बल प्रयोग ने अपनी मान्यताओं एवं बर्बरताओं के कारण हमारी सांस्कृतिक विरासत को चोट पहुंचाया। हम घूंघट, पर्दा, धर्म (स्त्री धर्म) के रूप में मानने एवं अपनाने हेतु बाध्य हुए। हम कोमलता, ममता, एवं शारीरिक क्षमता के आधार पर मूल्यांकित किए जाने लगे। इससे हमारा आत्मविश्वास कम हुआ और हमारा साहस टूटा। हमारा शौर्य क्षतिग्रस्त हुआ। हम गुलामी एवं पराधीनता के ग्रास बनने लगे। हमारा जीवन, हमारे भरण-पोषण के अधिकारी पुरुष के हाथों में पहुंचा और अपने लिए किसी तरह के निर्णय के अधिकारी नहीं रहे। मात्र कठपुतली बन कर रह गये।

मनुस्मृति के अनुसार भाई, पिता या पुत्र के संरक्षण में वयनुरूप जीने के लिए स्त्रियाँ सीमाबद्ध की गई। स्वाभाविक है इस पोंगापंथी विचारधारा में स्त्री का स्वतंत्र अस्तित्व कहाँ विकसित हो पाता। कोई भी स्त्री अपनी आत्मकथा कैसे लिख पाती। यह सोच भी उसके अंदर नहीं पनप सकता था। वैदिक काल के पश्चात् पौराणिक युग कथा कहानियों का युग रहा है। कई स्त्रियों की गाथाएं रची गई। साहस की कथा गाथा लिखी

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

गई। पंचकन्या से लेकर दुर्गा स्वरूप की कहानी बनी लेकिन यह औरों के द्वारा लिखी गई। कोई स्त्री यह संरचना या आत्मलेखन की ओर शायद ही प्रवृत्त हुई हो। सर्वप्रथम आधुनिक युग के आरंभ में कहीं यह विचारधारा पनपती नजर आती हैं। स्त्रियां बहुत बाद में अपनी आत्मकथा लेखन में रुचि दिखाने की साहस कर पाई है। पुरुष आत्मकथा लेखन की भरमार के बीच स्त्री आत्मकथा लेखन का स्रोत कहीं दूर तक दिखाई नहीं देती है। बहुत खोज के बाद मुझे जानकी बजाज द्वारा लिखित 'मेरी जीवन यात्रा' (सन् 1956) के रूप में पहली स्त्री आत्मकथा के दर्शन हुए। वर्षों से कैद और सहिष्णुता पूर्वक जीवन जीने वाली स्त्रियां कलम पकड़ने के पश्चात् भी अपनी आत्मकथा लिखने से परहेज करती रहीं कि उनके मिजाज का निजत्व इस लेखन से सार्वजनिक हो जाएगा। इससे उन्हें पारिवारिक एवं सामाजिक क्षति उठानी पड़ेगी। धीरे-धीरे पुरानी मान्यताएं टूटती गईं। नए सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं का निर्माण हुआ। इससे साहस संजोकर स्त्रियों के द्वारा आत्मकथा लेखन आरंभ हुआ और असूर्यपश्या सात-सात अवगुणों से आबद्ध, चूल्हे चौके के संग दुख-सुख का बंधन बांधने वाली, पति की मृत्यु पर सती हो जाने वाली, भीरू स्त्री इस परिवर्तित मूल्य बोध के प्रति जागरूक हुई और आधुनिक काल में अपने जीवन के संघर्ष को चित्रित करने लगी। मान्यताओं के टूटने पर महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सजग होने लगीं। समाज की रूढ़िवादी मान्यताओं, रीति-रिवाजों और परंपराओं के बंधन से निकलने के लिए छटपटाहट बढ़ी। इन्होंने कलम को हथियार बनाया। बहुत सारी स्त्रियाँ कई क्षेत्र में कलम चलाने लगी।

डॉ. अहिल्या मिश्रा
मोबाइल - 9849742803
mishra.ahilya1609@gmail.com

अपने आत्मसंघर्ष को अपनी आत्मकथा में चित्रित करना भी आरंभ किया। मराठी, पंजाबी, बंगला आदि भारतीय भाषा में लिखित आत्मकथाओं से प्रभावित होकर हिंदी की लेखिकाएं भी आत्मकथा लेखन में प्रवृत्त हुईं। इस प्रकार आत्मकथा लेखन में कौशल्या बैसंत्री 'दोहरा अभिशाप' (1999),

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

मैत्रेई पुष्पा 'कंस्तूरी कुंडलि बसै' (2002) एवं 'गुड़िया भीतर गुड़िया' (2008), प्रभा खेतान 'अन्या से अनन्या' (2007), रमणिका गुप्ता 'हादसे' (2005), सुशीला राय 'एक अनपढ़ कहानी' (2005), अनीता राकेश 'संतरें और संतरें' (2002), मन्नू भंडारी 'एक कहानी यह भी' (2007), कृष्णा अग्निहोत्री 'लगता नहीं है दिल मेरा' (2010) एवं 'और.. और.. औरत' (2011), सुशीला टाकभौरे 'शिकंजे का दर्द' (2011), 'मेरी क़लम मेरी कहानी' (2014), अमृता प्रीतम 'रसीदी टिकट', शिवानी कृत 'सुनौ: तात यह गत मोरी', पद्मा सचदेव कृत 'बूंद बावरी', चंद्रकिरण सौनरेक्सा कृत 'पिंजरे की मैना', रमणिका गुप्ता कृत 'अपहुदरी', निर्मला जैन कृत 'जमाने से' आदि आत्मकथाओं के माध्यम से महिलाओं ने अपनी करुणा व्यथा मानसिक घुटन एवं संघर्ष आदि को व्यक्त किया है।

इसी कड़ी में डॉ. अहिल्या मिश्र कृत 'दरकती दीवारों से झांकती जिंदगी' सन 2021 में प्रकाशित हुई है। उपरोक्त उल्लेखित सभी नाम की आत्मकथा लेखिकाओं ने आत्म संघर्ष को पाठकों के समक्ष रखी है तो दूसरी ओर अन्य महिलाओं की जो समाज में अत्याचारों को सहकर भी चुप रहती है, अस्मिता को जगाती है, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करती हैं। अहिल्या मिश्र की आत्मकथा के साथ एक बात लीक से हटकर हुई है कि यह अपने में औपन्यासिक तत्व को समाहृत किए हुए है। इसमें आत्मकथा के प्रमुख तत्वों के साथ उपन्यास के सभी तत्व भी समाहृत है। लेखिका का बचपन, गांव, सामाजिक जीवन, पारिवारिक परिवेश एवं संघर्ष से शक्ति प्राप्ति अंकित है। जीवन के सुख-दुख, विकास की दिशा में बढ़ते कदम पारंपरिक स्त्री संघर्ष, विरोध के स्वर, पिता-पुत्र-पति के साथ तारतम्य, उनका योगदान तथा बदलते परिवेश के साथ किए गए समझौतों का सत्य एवं तथ्यपरक चिंतन उकेरा गया है। वास्तव में आत्मकथा लेखन स्वयं के भीतर छिपे अदृश्य संसार को अपने संपूर्ण व्यक्तित्व के साथ उससे जुड़े समाज, सांस्कृतिक परिवेश सहित वस्तुनिष्ठ रूप से पूरी ईमानदारी के साथ पाठकों के समक्ष उद्‌घाटित करने की एक साहित्यिक विधा है।

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक समाज एवं पुरुष वर्चस्ववादी रहा है। तदानुसार ही इसकी सामाजिक संहिताएं निर्मित है। महिला कथाकारों के अनुसार पुरुष वर्ग को हमारे सभी धर्म ग्रंथों में अपने पूर्ण स्वतंत्रता एवं सुविधानुरूप जीवन व्यतीत करने की आजादी प्रदान की गई है, वहीं स्त्रियों को पुरुषों के आदेशानुसार उनके प्रति पूर्ण समर्पण कर परतंत्रता

की भावना को आत्मसात करते हुए जीवन यापन का निर्देश दिया गया है। इन नियमों के पालन हेतु स्त्रियों को बचपन से ही सहनशील होने की शिक्षा दी जाती है। इसके साथ ही उसे मानसिक रूप से पुरुषों द्वारा प्रत्येक शोषण को अपना भाग्य मानकर स्वीकारने तथा बिना शिकायत किए हुए जीने की सीख दी जाती है। यह तथ्य है जिसके कारण महिला सर्जनकारों में आत्मकथा लेखन में संकोच बना रहा। 20वीं सदी में तो कोई लेखन हुआ नहीं। स्वतंत्रता पश्चात भारत में केवल राजनैतिक स्तर पर ही नहीं सामाजिक सांस्कृतिक स्तर पर भी विस्तृत रूप से बदलाव की आंधी चली। आधुनिक शिक्षायुक्त समाज का एक बड़ा वर्ग विशेष रूप से युवा वर्ग ने सदियों से प्रचलित सड़ी गली मानसिकता के जर्जर नियम तथा रूढ़ियों के विरुद्ध अपनी लेखनी चलायी। इससे दबे-कुचले वर्ग को वाणी मिली तथा इसका साहित्य पर भी प्रभाव पड़ा। एक व्यापक स्तर पर महिला लेखिकाओं द्वारा सामाजिक वर्जनाओं को अनदेखा कर बिना किसी लाग लपेट के आपबीती को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की पहल एक सामाजिक क्रांति के रूप में साहसिक पहल थी। इसके माध्यम से समाज, संस्कृति तथा धर्म के नाम पर किए जाने वाले अत्याचारों का पर्दाफाश तो हुआ ही साथ ही एवं सुसंस्कृत कहे जाने वाले लोगों के चेहरे से मुखौटा भी उतरा। निम्न वर्ग में व्याप्त रिश्तों का दुरुपयोग तो अशिक्षा के कारण बाहर आ जाता था। किन्तु मध्यम वर्गीय तथा उच्च वर्गीय समाज अपने आप में सीमित रहने के कारण ढक-तोपकर आगे बढ़ जाता है। स्त्रियों ने पूर्ण साहस से सत्य को उद्‌घाटित किया।

21वीं शताब्दी के आरंभ में स्त्री विमर्श साहित्य के केंद्र में रहा तथा इसका प्रभाव साहित्य की एक विधा पर दृष्टिगत हुआ। विशेषत: आत्मकथा लेखन पर। साहित्य के प्रत्येक विधा के साथ इस गहन विमर्श ने स्त्रियों को स्वयं की पहचान करवाई। समाज में उनके होने एवं अपने अस्तित्व से परिचित करवाया। पूर्व में स्त्री केवल मां, पत्नी, बेटी, भाभी, मौसी, चाची आदि संबोधनों से जानी जाती रही है। सिमोन द बाउवर की पुस्तक 'द सेकंड सेक्स' का उल्लेख यहाँ उचित होगा कि "औरत पैदा नहीं होती बना दी जाती है।" उसे दोयम दर्जे का माना जाता है। आधुनिक शिक्षा से पूरित आत्मनिर्भर स्त्रियों ने इन तथ्यों को गहनता पूर्वक समझा। अपनी आवाज बुलंद करने का साहस दिखाते हुए भोगे हुए यथार्थ का उसकी

समूची पृष्ठभूमि एवं उत्तरदायी कारणों (सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक) को ईमानदारी तथा तटस्थता सहित पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, प्रो. निर्मला जैन, शीला झुनझुनवाला, अजीत कौर, रमणिका गुप्ता, कृष्णा अग्निहोत्री, कौशल्या बैसंत्री, चंद्रकिरण सौनरिक्शा, डॉ. अहिल्या मिश्र आदि कुछ ऐसी लेखिका हैं जिनकी आत्मकथा में उपरोक्त तथ्यों के साथ-साथ नारी अस्मिता निज से वाद-विवाद, यौन सूचिता आदि प्रश्नों पर गहन विवेचन-विश्लेषण प्राप्त होता है।

विवेच्य लेखिकाओं की आत्मकथा में चित्रित नारी जीवन में पर्याप्त भिन्नता पाया गया है। स्वाभाविक है कि उनके जीवन का विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक परिवेश से उनका संबंध है कुछ का जन्म ग्रामीण परिवेश में तो कुछ का जन्म कस्बों में तथा कुछ का महानगरों में हुआ। संबंधित परिवेश की विविधता एवं इससे संबंधित प्रभाव जीवन एवं लेखन में परिलक्षित होता है। साथ ही कुछ लेखिकाओं की आत्मकथा में पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता का भी व्यौरा मिलता है। यह उनके विदेश यात्राओं का प्रभाव है। निर्विवाद सत्य है कि सामाजिक आचार-विचार के साथ प्रत्येक देश, राज्य तथा क्षेत्र विशेष की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति होती है जो उसकी पहचान होती है एवं वही समाज उससे जुड़ी संस्कृति के साथ व्यक्ति के जीवन को प्रभावित तो करता ही है साथ ही उसकी मानसिकता को भी गहन रूप से प्रभावित करता है। सामाजिक तथ्यों के साथ उपरोक्त लेखिकाओं की आत्मकथा में एक तथ्य विशेष रूप से उभर कर सामने आया है - नारी शोषण। नारी अपने बाल्यावस्था में हो, किशोरावस्था में हो, युवावस्था में हो,अधेड़वास्था में हो या वृद्धावस्था में, पुरुष सत्तात्मक समाज हर स्थिति में उसके विविध आयामों में उसे शोषित करता रहता है। शारीरिक स्तर से लेकर मानसिक एवं भावनात्मक रूप से शोषण प्रमुख है।

उपरोक्त लेखिकाओं की आत्मकथाओं में नारियों के शोषण के दोनों रूप शारीरिक एवं मानसिक शोषण के साथ भावनात्मक शोषण का भी अति सूक्ष्मता पूर्वक चित्रण हुआ है । ऐसे शोषण का शारीरिक कोई लक्षण दिखाई नहीं देती है किंतु मन मस्तिष्क पर इसका गहन प्रभाव पड़ता है। मन्नू भंडारी की आत्मकथा "एक कहानी ऐसी भी" इसका जीवंत एवं

साक्षात् उदाहरण है। सुप्रसिद्ध लेखक स्व राजेंद्र यादव से उनका प्रेम विवाह असफल सिद्ध हुआ। अपने पति से उन्हें जीवन पर्यंत बेवफ़ाई, तिरस्कार तथा अवहेलना मिला। प्रेम विवाह एक खोखला विवाह संस्कार बन गया। प्रेम हवा-हवाई होकर मात्र विवाह शेष रह गया था। दाम्पत्य जीवन के आरम्भ में ही उन्हें 'समानांतर जीवन का सूत्र' सिखा दिया गया। यानी कि छत एक ही होगा परंतु दोनों के अधिकार के क्षेत्र एक अलग अलग होंगे। मन्नू लिखती हैं - "प्रथम रात्रि को राजेंद्र जब मेरे पास आए तो उनके रंगों में लहू नहीं अपने किए का अपराध बोध था..... बिलकुल ठंढे और निरुत्साहित। और फिर यह ठंडापन हमारे सम्बंधों के बीच स्थायी बनकर जम गया।"

मन्नू जी पैंतीस वर्षों तक इस निर्जीव रिश्ते को ढोती रहीं। निरंतर तनाव ग्रस्त रहने के कारण उन्हें न्युरोलॉजिया के दर्दनाक दौड़े पड़ने लगे। ऐसी स्थिति में भी राजेंद्र यादव उनकी दर्द और तकलीफ़ को अनदेखा कर अपने मित्र एवं उसकी पत्नी के साथ एक गोष्ठी में जहाँ मन्नू जी भी आमंत्रित थीं जाने का कार्यक्रम बना लिए। उनकी असम्वेदनशीलता को उजागर करते हुए मन्नू जी लिखती हैं कि राजेंद्र जी उनसे कहने लगे "मन्नू नहीं जा रही है तो क्या हुआ.... मैं तो हूँ, देखिए तो क्या मौज करवाता हूँ .. और खूब मस्ती मारेंगे.. आप अपना कार्यक्रम बिलकुल कैंसिल नहीं करेंगी... मेरे छटपटाते मन पर मौज करेंगे, मस्ती मारेंगे जैसे शब्द खुदते चल रहे थे। और उससे उपजी तकलीफ़ आंसुओं में बहती चली जा रही थी। मन्नू जी प्रेरणा प्रोत्साहन के अभाव में कहानी लिखती हैं। वह कहानी छप जाती है। तब लेखिका मन्नू भंडारी को अपना एक अलग अस्तित्व नज़र आती है। 'महाभोज' और 'आपका बंटी' के लेखक से अपना अलग अस्तित्व का कर्म कर पाईं। इसी तरह की मानसिक त्रासदी से अजित कौर को भी दो चार होना पड़ा। एक सुशिक्षित पति जो कि पेशे से डॉ. है उसका व्यवहार उनके प्रति असम्वेदनशील रहा है। अपने चरित्रहीन पति और ससुराल वालों को प्रसन्न करने का हर संभव प्रयत्न किया। किन्तु उनके व्यवहार में कोई अंतर नहीं आ पाया।

पति का घर त्यागने के पश्चात् कृष्णा अग्निहोत्री को महाविद्यालय में नौकरी मिली। वहाँ की महिला प्राचार्या उनकी नियुक्ति का आदेश देखते

ही बोली- "तुम यहाँ क्यों आई? तुम्हें और कोई जगह नहीं मिली? इसी में अभी भी तुम्हारी भलाई है कि किसी और जगह चली जाओ।"

इसी तरह 'पिंजरे की मैना' में चंदकिरण सोनरिक्शा सास द्वारा एक अल्पायु बालिका वधू के शोषण को उद्‌घाटित करती हुई कहती हैं कि घर में बहू के आते ही सास ने उससे सौतेलेपन का व्यवहार शुरू कर दिया। मिसरानी छुड़ा दी गई। पाँच-छह व्यक्तियों का खाना वह बारह-तेरह वर्ष की बालिका बना लेती पर जो गाँव से समय-असमय आने वाले मेहमान थे उनके लिए सेरों आटे की रोटियाँ सेंकना उसके लिए कठिन हो जाता था। एक अन्य स्थान पर चंद्र किरण लिखती हैं कि उनके रिश्ते की एक बाल विधवा का पुनर्विवाह कराया गया। किन्तु उसके प्रति व्यवहार अति द्वेषपूर्ण रहा। वह हरदम उसे नीचा दिखाने के बहाने ढूँढती रहती। यहाँ तक कि बच्चों से उनकी जासूसी करवाती। उन्हें स्कूल तक जाने नहीं देती। इसी संबंध में बच्चा अपने पिता से क़हता है कि बाबूजी दादी ने मुझे चौकीदार बना दिया है मैं स्कूल का नागा कब तक करूँगा.... नई माँ दूध में पानी तो नहीं मिला रही है। मलाई छिपा कर तो नहीं रखती।" यहाँ यह सच सिद्ध होता है कि केवल पुरुष ही कटघरे में खड़े नहीं किये गये हैं। कई स्त्रियाँ भी भी इस घेरे में में आती हैं। आत्मकथा के विभिन्न प्रसंगों के बीच रिश्तों का विरोधी स्वरूप एवं स्त्री का स्त्री के प्रति द्वेष भी सामने आता है।

मैत्रेयी पुष्पा अपने कॉलेज के समय की एक घटना स्मरण करती हुई बताती हैं कि "गरीब एवं गाँव से संबंधित होने के कारण कॉलेज में पढ़ने वाली अमीर घराने की लड़कियाँ उन्हें नीचा दिखाकर उनका आत्मविश्वास तोड़ने एवं दुख पहुँचाने के बहाने ढूंढती थी। एक दिन तो उनलोगों ने एक बेहद शर्मनाक घटना की रचना रच दी कि मैत्रेयी को अपने लड़की होने पर शर्म हुआ हुआ साथ ही रोना आया। वे रोती हुई उस कुर्सी के पास ठहर गई जहाँ से ये दाग लगे थे। किसी क्रूर लड़की ने कुर्सी पर लाल रंग ही उड़ेल कर लड़की होने का मज़ाक़ उड़ाया था"- कस्तूरी कुंडल बसै- मैत्रेयी पुष्पा।

कस्तूरी मैत्रेयी जी के माँ का नाम है। वास्तव में 'कस्तूरी कुंडल बसै' आत्म कथा उन्हीं के संघर्षों का लेखा जोखा है। कस्तूरी के पति का देहाँत होने के बाद एक बाल विधवा द्वारा गोदी की बच्ची को पालना पहाड़ पर चढ़ने के समान था। समाज में पुरुषों की नज़र से अपने को बचाते हुए

तथा बच्ची की रक्षा करते हुए, उसे शिक्षित करते हुए आत्म निर्भर बनाने के लिए किए जानेवाले प्रयास एवं संघर्ष की एक लम्बी श्रृंखला है जो कभी न ख़त्म होने वाले रास्ते पर जाती है।

कस्तूरी ने छोटी उम्र में जो दुःख झेले जीवन के कठिनतम परिस्थितियों ने उन्हें लड़ना सिखा दिया। उनका कथन है कि एक नारी तभी सम्मान प्राप्त करती है जब वह शिक्षित एवं आत्मनिर्भर हो। लेखिका का मानना है कि नारी का पढ़ा लिखा होने के साथ साथ गृहस्थ जीवन में संतुलन भी बनाने आना चाहिए।उसमें आत्म निर्भरता भी होना चाहिए जिसके आधार पर जीवन का निर्णय वह स्वयं ले सके। इनका मानना है कि पारिवारिक जीवन में जिम्मदारियों को निभाते हुए विकास करना ही जीवन की सफलता है। मनमानी करना नहीं।

मैत्रेयी जी ने अपने दूसरे उपन्यास 'गुड़िया भीतर गुड़िया' में अपने संपूर्ण जीवन को खोलकर इसके सभी पन्नों पर फैला दिया है। अलीगढ़ की भंटी बहू से लेकर मिसेज़ शर्मा से होते हुए मैत्रेयी पुष्पा बनने तक की कहानी है यह आत्मकथा। विवाह के पच्चीस वर्ष बाद लेखिका की पहली कहानी 'आक्षेप' साप्ताहिक में छपी तो मिसेज़ शर्मा से पूर्व मैत्रेयी पुष्पा का नाम पुनः सूर्य की भाँति चमकने लगा। फिर शुरू हुआ लेखिका का लेखन संघर्ष एवं अस्तित्व की तलाश। मैत्रेयी जी ने आत्मकथा में स्पष्ट किया कि चाक, अल्मा कबूतरी, अगन पक्षी, इदन्नमम जैसे उपन्यास क्यों लिखे। 'कहे इश्वरी फाग' लिखने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई। लेखिका के अनुसार "विवाह स्त्री के सुरक्षा का गढ़, संरक्षण का क़िला, शांति के नाम पर निश्चिंतता की सन्नाटे भरी गुफा और ग़ुलामी का आनंद।" लेखिका को पति सत्ता के क़िले में रहते हुए अपना लेखन कार्य छिपा कर करना पड़ता है। अस्तित्व की इस लड़ाई की खोज में पारिवारिक कलह के समक्ष अडिग अपने स्वत्व की खोज में लेखिका मानती है कि स्त्रियों का जन्म एक ऐसे पौधे के रूप में होता है जिन्हें हिलाने-डुलाने और विकसित करने के लिए हवा ज़रूरी है। लेकिन हमारे माली बने लोग कहते हैं बौनसायी रहा करते नहीं तो बढ़कर अपनी ख़ूबसूरती खो देते हैं।" लेखिका के अनुरूप भारतीय समाज में गृहस्थों के संस्कार जन्म से लेकर मृत्यु व पिंडदान तक पुत्रों से बंधा होता है। तीन पुत्रियों की माँ बनने के साथ अपमान एवं सन्नाटा का हृदय विदारक वर्णन लेखिका ने किया है।

रमणिका गुप्ता की आत्मकथा 'कोयला खदानों,' राजनीति तथा सड़क पर मजदूरी करने वाली स्त्रियों की दैहिक तथा मानसिक शोषण को उजागर करती है। निर्मला जैन की आत्मकथा पढ़े लिखे लोगों की सामाजिक विडंबना को सबके सामने लाती है साथ ही शिक्षण संस्थानों में चल रहे शिक्षकों एवं प्रशासन के आपसी घात-प्रतिघात से पाठक को रूबरू करवाती है। एक उच्च शिक्षा प्राप्त स्वाबलंबी स्त्री होने के उपरांत भी उनके जीवन में गुटबाजी एवं घटिया राजनीति के कारण चारित्रिक लांक्षण का सामना करना पड़ता है। उनके चरित्रहरण का प्रयास किया जाता है। तब उन्हें तत्कालीन कुलपति से सहायता हेतु प्रार्थना करती करनी पड़ती है। उन्हीं के शब्दों में - "भर्राई आवाज में इतना ही कह पाई, मुनीस भाई मेरी इज्जत बचाने के लिए आप क्या कर सकते हैं।" कहते हुए मेरी आंखें भर आईं।

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में स्त्रियों पर होने वाले यौन शोषण के कई उदाहरण मिलते हैं। बचपन में उसकी विधवा माता ग्राम सेविका की नौकरी के चलते उन्हें अपने पास न रखकर परिचित तथा संभ्रांत परिवारों में रखती है। उद्देश्य होता है कि वह वहाँ रहकर सुरक्षित रहेगी एवं शिक्षा प्राप्त कर सकेगी। किंतु उसका विश्वास तब खंडित होता है जब मैत्रेयी उन्हें अपनी आपबीती मर्मांतक शब्दों में लिखती है - "माता जी, वह मुझे रात भर सोने नहीं देता....मैं यहाँ नहीं रहूंगी। गांव भाग जाऊंगी। शहर के लोग कैसे हैं।" इसके पश्चात मैत्रेयी की माताजी उसे किसी दूसरे घर में रखती हैं। वहाँ इस घर का वृद्ध व्यक्ति उससे बलात्कार का प्रयास करता है किंतु उसके विरोध में कहीं से कोई आवाज नहीं उठाई जाती है। वास्तव में ऐसे बहुत सारे लोग मनुष्य के रूप में छुपे हुए भेड़िए हैं जो दोमुहा जीवन जीते हैं। बाह्य रूप से यह सभ्य तथा आदर्शवादिता स्वर निकालते हैं किंतु वास्तविक रूप से रक्षक ही भक्षक बनते हैं। बाल्यावस्था से ही शारीरिक शोषण का शिकार हुई रमणिका गुप्ता लिखती हैं कि उनका दैहिक शोषण बाहर वालों ने नहीं अपितु घर में रहने वालों ने तथा काम करने वालों ने किया। अभिजात्य परिवार में पली-बढ़ी रमणिका जी के माता-पिता अति व्यस्त जीवन जीते थे। बच्चों को नौकरी एवं अभिभावकों के सहारे छोड़ दिया गया। एक विश्वसनीय आर्य समाजी मास्टर को अपनी बेटियों की शिक्षा के लिए के पिता ने रखा किंतु वही रामणिका का शील

हरण करने लगा। उन्हीं के शब्दों में देखें- "पापा जी और बिबी जी का कमरा अलग था। उन्हें मास्टर जी पर इतना विश्वास था कि देर रात तक उसे मेरे कमरे में रहने पर एतराज नहीं करते थे। मास्टर सारी रात मेरे कच्चे शरीर से खिलवाड़ करता रहा । मैं इतनी भयभीत थी न बोल सकती थी न रो सकती थी। मैं वही करती गई जो मास्टर कहता गया। फिर यह रोज का किस्सा हो गया।" प्रभा खेतान अन्या से अनन्या में लिखती हैं कि वे यहाँ 9 वर्ष की आयु में अपने ही घर में स्वयं अपने भाई द्वारा यौन शोषण का शिकार हुईं। विडंबना यह है कि दुष्कर्म कर्ता को सजा मिलने की जगह उन्हें ही चुप रहने की नसीहत दी गई। देखें उनके शब्दों में - "जब मैं 9 साल की थी तब घर में.... मैं एकदम चुप हो गई.... उस दिन दाई मां ने भी तो यही कहा था "काहू से न कहियो बिटिया, अपने पति से भी नहीं।" पर क्यों? उत्पीड़न के बावजूद औरत को खामोश रहने को कहा जाता है।

पुरुषों द्वारा नारी को मात्र भोग्या समझने या सामग्री समझने की मानसिकता सदियों से चली आ रही है। जन्म से ही उसे लड़के की तुलना में हेय समझा जाता है। उसकी अवहेलना की जाती है। बेटा के जन्म पर खुशी बेटी के जन्म पर दुख मात्र अनपढ़ लोगों का ही पूर्वाग्रह नहीं समाज का उच्च शिक्षित वर्ग भी इसी संकीर्ण मानसिकता का शिकार पाया जाता है। केवल पुरुष ही भारी शोषण के दोषी नहीं स्त्रियां भी उत्तरदायी होती हैं। कौशल्या बैसन्त्री अपनी मां का उदाहरण देते हुए कहती हैं कि उन्हें बेटा का बड़ा शौक था। हर प्रसूति के समय पुत्र की लालसा रहती थी। संतान लड़की पैदा होने पर मां बहुत उदास हो जाती। वे कहती थीं कि "जाओ उसे कूड़े में फेंक आओ" प्रभा खेतान लिखती हैं कि "अम्मा ने मुझे कभी गोद में लेकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घंटों उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती। शायद अम्मा जी मुझे भीतर बुला लें। शायद अपनी रजाई में सुला लें। मगर नहीं। एक शाश्वत दूरी बनी रही हम दोनों के बीच।" कौशल्या बैसंत्री ने भी अपनी मां की कठोरता का वर्णन किया है। वे बात-बात पर बैसंत्री को पीटती थीं। एक बार तो इतना पीटा की पांव का अंगूठा घायल हो गया और अस्पताल ले जाना पड़ा। यहाँ निर्मला जैन के लेखकीय क्षेत्र के एक अनुभव के माध्यम से पुरुष सम्पादकों की मानसिकता का उदाहरण प्रस्तुत है। हंस के सम्पादक राजेंद्र यादव अपने अहं तुष्टि के लिए जाने जाते हैं। उनकी ऐसी हरकतों पर मन्नू जी से गाहे-बगाहे उनकी कहा सुनी तो होती ही रहती थी। उन्होंने अपनी इन हरकतों से कई लोगों से नाराज़गी

मोल ले ली थी। डॉ. नगेंद्र उनमें से एक थे। नतीजा यह हुआ कि डॉ. साहब भी उन्हें नाम से नहीं, अपशब्दों से नवाज़ा करते थे।

ऐसे ही एक प्रसंग में, मैंने हंस में कभी न लिखने की प्रतिज्ञा की थी। हुआ यह कि एक बार मैं और जैनेंद्र जी एक सेमिनार के लिए जम्मू विश्वविद्यालय में आमंत्रित किए गए। साथ में जैनेंद्र जी के साहबजादे प्रदीप जी भी थे। उस यात्रा के दौरान दो-तीन दिन लगातार उनका साथ बना रहा। उस बीच मेरे मन में उनके बारे में यह धरना और पुष्ट हो गई कि उनके व्यक्तित्व की बनावट ख़ासी जटिल है जिसे समग्रता में समझना आसान नहीं होता।

वापिस लौटकर मैंने उस अनुभव से प्रेरित होकर एक लेख लिखा जिसका शीर्षक था- 'सिरा कहाँ है?' राजेंद्र यादव बड़े उत्साह से उसे छापने के लिए तैयार हो गए। लेख छप गया। मैंने देखा, पर पढ़ने की ज़हमत नहीं उठाई। अंक मिलने के दो तीन दिन बाद अचानक राज़ी सेठ का फ़ोन आया। लेख उन्होंने खुद तो पढ़ ही लिया था, मुझसे बात करने के पहले अज्ञेय जी को भी पढ़वा दिया था। अज्ञेय जी की प्रतिक्रिया हुई थी: "ये तो कोई बहुत अच्छा काम नहीं किया निर्मला ने!" कुछ ऐसा ही महसूस किया था राज़ी ने भी। अज्ञेय जी से पुष्टि हो गई तो हिम्मत करके मुझे फ़ोन मिलाया। शुरुआत कुछ इधर- उधर की बातों से करके जैसे वे साहस जुटाती रहीं और फिर धीरे से बोलीं: आपका लेख पढ़ा 'हंस' में.." एक क्षण की चुप्पी के बाद जोड़ा उन्होंने : "वैसे आपने हिम्मत बहुत की।" मेरा चौंकना स्वाभाविक था। "ऐसी हिम्मत वाली क्या बात है उसमें।" मुझे जैसा लगा मैंने लिख दिया।" बात आगे बढ़ी: " फिर भी हर कोई तो इस तरह लिखने का साहस नहीं कर सकता। अज्ञेय जी भी ताज्जुब कर रहे थे।" इस बार मेरा माथा ठनका। मैंने बात वहीं रोककर कहा कि "मैंने तो छपने के बाद पढ़ा ही नहीं है। एक बार पढ़के देखती हूँ, फिर तुमसे बात करूँगी।" संवाद वहीं ठप्प।

मैंने तुरंत हंस की 'प्रति' उठाई। लेख पढ़ते ही मेरे पाँव के तले की ज़मीन खिसक गई। राजेंद्र जी ने दो-तीन जगह कलम चला कर उसे ख़ासा कटखना और आपत्तिजनक बना दिया था। मैंने तुरंत फ़ोन मिलाकर जवाबतलबी की तो ठहाका लगाकर बोले: "अरे आपने क्या लिखा था, गुडी गुडी मज़ा तो अब आएगा जब लोग पढ़ेंगे। इतना अधिकार तो सम्पादक

का होता ही है।" मैं फ़ट पड़ी: छापने या न छापने का अधिकार होता है। लेखक के बिना सहमति के कलम चलाकर तरमीम करने का नहीं। और जहाँ तक मज़ा आने का सवाल है, वह तो आना शुरू हो गया है। मेरी भर्त्सना शुरू हो गई है।" और मैंने उन्हें राज़ी अज्ञेय का प्रसंग सुना दिया। उनपर कोई असर नहीं हुआ इसका। वे उसी तरह ठहाका लगाते रहे। उनका ख़याल था कि पत्रकारिता में यह सब तो होता ही रहता है। इसमें इतना परेशान होने की कोई बात है ही नहीं।

संयोग से उन्हीं दिनों जैनेंद्र अस्वस्थ होकर अस्पताल पहुँच गए। मेरी अगली चिंता यह थी कि बीमारी की हालत में अगर किसी शुभचिंतक ने यह बात उन तक पहुँचा दी या स्वस्थ होने पर उन्होंने 'हंस पढ़ लिया तो वे कितने आहत होंगे! मैंने अगला फ़ोन प्रदीप को मिलाकर उन्हें इस कांड से अवगत कराते हुए अनुरोध किया कि वे हंस की प्रति जैनेंद्र जी के हाथ न आने दें। मैंने राज़ी को भी इस स्थिति की जानकारी देकर अनुरोध किया की वे अज्ञेय जी को भी इस स्थिति से अवगत करा दें। ज़ाहिर है अज्ञेय जी ने अपनी मितभाषी स्वभाव के अनुरूप इतना ही कहा : "तो फिर इसमें निर्मला का क्या क़सूर है? पर राजेंद्र यादव को ऐसा करना नहीं चाहिए था।"

बात इतने पर ख़त्म नहीं हुई। मैंने राजेंद्र जी को इस प्रसंग पर एक लम्बा पत्र लिखा, यह इसरार करते हुए कि वे इसे 'हंस' में छापें, अन्यथा मैं पूरे ब्यौरे के साथ किसी और पत्रिका में छपवा दूँगी। पत्र की एक प्रति मैंने प्रदीप के पास भेज दी।

पत्र मिलते ही राजेंद्र जी के होश-फ़ाख्ता हो गए। वे स्वप्न में भी ऐसी पत्रिका की उम्मीद नहीं कर पा रहे थे। अपनी सम्पादकीय दादागिरी भुलाकर उन्होंने मुझसे मिलकर बात करने का आग्रह किया।?घर आए। देर तक मुझे इस बात के लिए क़ायल करने की कोशिश करते रहे कि मैं उस पत्र को छापने का इसरार न करूँ। जब तर्क-युक्ति से काम नहीं चला तो अपनी आदत के अनुरूप उन्होंने ठहाका लगाते हुए फ़रमाया : "अरे यार बस भी करो! अब हो गई गलती, तो क्या जान ही ले लोगी! लो पकड़ लिए तुम्हारे पैर। अब तो बख़्श दो। मैं अपने ढंग से छाप दूँगा। गलती का सुधार करते हुए" और यह कहते हुए उन्होंने सचमुच हाथ बढ़ाकर मेरे पाँव पकड़ लिये। ज़ाहिर है, इसके बाद कहने-सुनने लायक़ कुछ बचा ही नहीं। मैंने भरोसा किया, पर उन्होंने वायदे की औपचारिकता पूर्ति में जो दो

पंक्तियाँ छापीं, उनका कोई अर्थ नहीं था। बस नतीजा यह हुआ कि मैंने 'हंस' में लिखना छोड़ दिया। (आत्मकथा पुस्तक से यह अंश उद्धृत किया गया है)

उपेक्षा का यह चक्र ही नहीं रुकता। जीवनपर्यंत गतिशील रहता है। हाँ रूप बदलते रहते हैं। नारी के शोषण दमन के विरुद्ध सबसे सशक्त शस्त्र शिक्षा को ही माना गया है। शिक्षा ही वह शस्त्र है जिसके माध्यम से नारी स्वाबलंबी, अपने अधिकारों के प्रति सजग तथा शोषण के विरुद्ध आवाज उठा सकती है। विवेच्य आत्मकथाओं के अनुशीलन के पश्चात चौंका देने वाले तत्वों का उद्घाटन होता है। यह सारे तथ्य वास्तव में गहन विश्लेषण की मांग करते हैं। इन पर विमर्श आवश्यक है। प्रभा खेतान ने 'अन्या से अनन्या तक' अपनी आत्मकथा में अपने जीवन सत्य का कठोर सामाजिक एवं पारंपरिक वर्जनाओं के भीतर पली-बढ़ी एक साधारण सी लड़की अपने बल पर एक सफल उद्योगपति तथा कलकत्ता चेंबर ऑफ कॉमर्स की प्रथम महिला अध्यक्ष बनती है। आर्थिक रूप से एक सफल एवं सशक्त स्त्री होते हुए भी वह भावनात्मक स्तर पर कमजोर साबित होती हैं। अपने जीवन के एकाकीपन को दूर करने हेतु डॉ. सर्राफ के साथ तथा उनके परिवार के साथ 25 वर्षों के रिश्तों के पश्चात इस बेनाम रिश्ते से वे मात्र तिरस्कार बटोर पाती हैं। वे लिखती हैं कि "मैं अकेली थी। इतनी अकेली कि मैं किसी का रोल मॉडल नहीं बन सकी। कोई लड़की मेरे जैसी नहीं होना चाहिए। मेरी तमाम सफलताएं सामाजिक कसौटी पर पछार खाने लगती हैं। सारी उपलब्धियां अपनी चमक खो देतीं ..। जहाँ तनाव अधिक था कभी न खुलनेवाली गांठें थीं। डॉ.क्टर सर्राफ पर उनकी निर्भरता आत्ममानसिक रुग्णता बनने लगी। इसे वह सुरक्षा स्वरूप लेने लगी। डॉ.क्टर सर्राफ प्रेमी से अभिभावक बन गए। आय, व्यय बचत आदि का लेखा-जोखा बच्चों की तरह लेने और रखने लगे। किंतु इनको शक की नजरों से देखते हुए इनपर निगरानी भी रखने लगे। इस प्रकार वह स्वावलंबी होकर भी परावलंबी बनी रही। कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा से भी यह स्पष्ट होता है कि एक अच्छे परिवार की सुशिक्षित तथा आत्मनिर्भर नारी परायों के साथ-साथ अपनों द्वारा भी छली जाती है। उनका अपना भाई उन्हें पैतृक अधिकार से वंचित करता है। अपने चरित्रहीन आई पी एस पति द्वारा अमानवीय व्यवहार का शिकार बनती है। उच्च शिक्षा ग्रहण कर अपने

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

पैरों पर खड़ी होने के पश्चात कार्यस्थल पर तिरस्कृत होना पड़ता है। पति से अलग रहने तथा जवान व सुंदर होने के कारण उन्हें स्वच्छंद प्रवृत्ति का माना जाता है और चारों ओर उपस्थित पुरुषों को लगता है कि वे सहज उपलब्ध होने वाली स्त्री है। 60 वर्ष की आयु में गोवा के रोहिताश्व चतुर्वेदी को अपना उपन्यास प्रकाशन हेतु देना था। उसने उनके सामने गोवा आकर अकेले में मिलने का प्रस्ताव रखा- "मेरी पत्नी यहाँ नहीं रहती है। गोवा में मैं बहुत अकेला हूं। इस उम्र में हम कुछ कर तो नहीं सकते पर साथ तो चाहिए।" यह उन्हीं का लेखन है। यानी स्त्री मात्र देह और दर्शनीय वस्तु भर है। पुरुष अकेली स्त्री को देखकर सभी सीमाएँ लांघने को उद्दत हो उठता है। इसे उजागर किया गया है।

पुरुषों द्वारा नारी को मात्र भोग्या या भोग की वस्तु समझे जाने के विषय में कृष्णा जी कहती हैं कि "सेक्स के अतिरिक्त भी स्त्री के सामने कई चुनौतियां रहती हैं। उसमें भी वह भागीदारी चाहती है। इसकी पूर्ति एक योग्य भाई, पति, बेटा या मित्र कर सकता है।" विवेच्य आत्मकथा में नारियों के शारीरिक शोषण के अलावा मानसिक शोषण का भी सूक्ष्मता पूर्वक चित्रण हुआ है। ऐसे शोषण का शरीर पर कोई चिह्न नहीं होता है या दिखाई देता है किंतु मन मस्तिष्क पर यह प्रभाव पड़ता है। मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी ऐसी भी' इसका जीवंत उदाहरण है। राजेंद्र यादव से परिवार के विरोध के बावजूद भी प्रेम विवाह एवं इसकी असफलता के कारण पति की बेवफाई, तिरस्कार एवं अवहेलना की प्राप्ति होती है। प्रेम

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

विवाह मात्र खोखला संस्कार सिद्ध होता है। इसमें प्रेम कहीं नहीं रहता।

अजीत कौर को भी मानसिक त्रासदी से गुजरना पड़ा है। एक सुशिक्षित डॉ.क्टर पति का व्यवहार उनके प्रति अति असंवेदनशील रहा है। अपने चरित्रहीन पति तथा ससुराल वालों को प्रसन्न रखने का उन्होंने हर संभव प्रयास किया। किंतु उनके प्रति उनके व्यवहार में कोई अंतर नहीं आता। एक बार वे बहुत बीमार हो जाती है। अपने पति से कहती है कि "मुझे संतरे ला दो या संतरे के लिए पैसे ही दे दो। डॉ.क्टर ने जूस पीने को कहा है।" बीमारी में उनसे सहानुभूति जताने के बजाय उनके पति ने कहा "जा अपने बाप के घर अगर संतरे चाहिए तो।" 'पिंजरे की मैना' में चंद्र किरण किरण सोन रिक्शा सास द्वारा एक अल्पायु बालिका वधू के शोषण को उद्घाटित करती हैं । ऊपर संदर्भित स्थिति में एक बालिका पर ढाए जानेवाले जुर्म एवं मानसिक त्रासद का विशद विवरण देती हैं। इसी में आगे के विवेचन को भी देखा जाना चाहिय। ऐसे कई पंक्तियों के बीच वे एक स्थान पर वह कहती हैं कि एक बाल विधवा का विवाह या पुनर्विवाह रचा गया किंतु उसकी सास का उसके प्रति बहुत ही दोषपूर्ण व्यवहार रहा। वह हर दम उसे नीचा दिखाने का बहाना ढूंढती रहती। यहाँ तक कि बच्चों द्वारा उसकी जासूसी करवाती। उन्हें स्कूल तक नहीं जाने देती। एक बच्चा अपने पिता से कहता है कि "बाबूजी दादी ने मुझे चौकीदार बना दिया है।" इन पंक्तियों को दुबारा रखने में मेरा मक़सद है कि स्त्री विमर्शों के इस भाव के द्वारा स्त्रियों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार का उल्लेख लगभग सभी आत्मकथाकारों ने किया है। पारिवारिक क्लेश की बात करें तो सर्वप्रथम सास-बहू, ननद-भाभी, देवरानी-जेठानी के रिश्तों पर उंगली उठती है। दांपत्य जीवन में दरारें औरत ही डालती है। वैसे भी ससुराल मैके के बीच आधिपत्य का दंश भी बहू को ही झेलना पड़ता है। ससुराल में मैके से जुड़ी स्त्री को कई बार सास एवं अन्य रिश्तेदारों के ताने झेलने या सुनने पड़ते हैं। स्त्री का अपना कोई व्यक्तित्व गिना ही नहीं जाता। यह भी कुछ आत्मकथाओं में पढ़ने को मिला। इससे उनके कोमल मन पर एक अतिरिक्त दवाब बनता है और वह बेचैन हो उठती है।

21वीं सदी के उत्तरार्ध के पश्चात उत्तर एवं पूर्वकालिक समय में एक आत्मकथा आई है। जिस पर पिछले कुछ समय से चर्चा चल रही है। डॉ.क्टर अहिल्या मिश्र कृत 'दरकती दीवारों से झांकती जिंदगी'। यह

आत्मकथा अभिव्यक्ति की सादगी, जीवन के प्रतिफल में जीया गया अनुभवों का खाड़ापन सार्वजनिकता और उत्तर देने की ताकत एवं साहस सार्थक अर्थों को प्रतिपादित करने की क्षमता भावों की संप्रेषनियता के साथ मानवीय मूल्यों को जीने की ललक सहित विभिन्न स्तरों पर संघर्ष, सामाजिक मान्यताओं को तोंड़कर नई स्थापना की शक्ति से लबालब, जीवंत एवं जोश से भरी आज की स्त्री का चित्रण है। परिवार, समाज एवं रिश्तों में बलिदान देने के बजाय रिश्तों की नई परिभाषागढ़ना ही इस उत्साही स्त्री की कहानी है। स्त्री शोषण, जमींदारी प्रथा, सीमाओं का बंधन तोड़ते हुए विकास के रास्ते पर बढ़ना यही लक्ष्य है उस स्त्री का। वर्ग भेद एवं इनके सामाजिक आचरण के साथ स्त्री शिक्षा को सर्वोच्च मान्यता देने वाली स्त्री की कहानी जीती एक स्त्री है। इस आत्मकथा में पितृसत्तात्मक समाज से उलझती अहिल्या संघर्षरत है। स्त्री स्वाभिमान हेतु संघर्ष के चरम भी दिखाई देता है। आत्मनिर्भरता का पाठ ही साहस एवं सफलता की कुंजी है। पति के साथ अनजान प्रदेश की यात्रा का साहस अदम्य है। पुनः साहित्यिक क्षेत्र में पुरुष वर्चस्व के बीच पहचान का संघर्ष एवं पुरुष साहित्यकारों की पिछलग्गू नहीं बनने पर उनके द्वारा दी गई संत्रास एवं दबाव को झेलने की क्षमता दिखाना आदि कई स्वरूप उभरकर सामने आए हैं। इस आत्मकथा के माध्यम से हम अहिल्या के मजबूत इरादे के साथ स्त्री उत्थान एवं दृढ़ता से सत्य कहने के साहस का संचार स्त्री के बीच फैलाते हुए पाते हैं। बहुत ही सकारात्मक भाव बनता दिखाई देता है। हाँ स्त्री का एक नया स्वरूप कहानी में दिखता है। भोजन बनाने की अक्षमता पुरुष सहयोग स्वसुर के रूप में तथा निडरता का व्यापक चित्रण मिलता है। एक वाक्य नारी के परिवर्तित मानसिकता का चित्रण करती है- "खोल अपनी धोती ले अपनी साड़ी आज से तेरा मेरा रिश्ता खत्म।" वह स्त्री इसके साथ ही मायका प्रस्थान कर जाती है। इस प्रकार शोषण के विरोधी स्वर एक स्तम्भ सा सामने खड़ा दिखाई पड़ता है। अभी इस आत्मकथा पर कई टिप्पणियां आ रही हैं। पाठक की रुचि बनी हुई है।

स्त्रियों द्वारा स्त्रियों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार का उल्लेख प्रायः सभी आत्मकथाओं में उभर कर आया है। नारी जीवन का विविधा पूर्ण चित्रण करती विवेच्य लेखिकाओं की आत्मकथाओं में एक तथ्य समान रूप से दृष्टिगोचर होता है वह है शोषण का प्रतिकार। देर अवश्य हुआ किंतु अब

आधुनिक समय की स्त्रियों ने यह दिखा दिया है कि वे अब शोषण नहीं सहेंगीं। कौशल्या बैसंत्री ने 61 वर्ष की आयु में अपने पति को तलाक देकर जीना शुरु किया। कृष्णा अग्निहोत्री ने अपनी पुत्री सहित पति का घर त्याग दिया। अजीत कौर ने भी पति की अवहेलना के प्रतिउत्तर में अपनीदोनों बेटियों के साथ अलग जीवन जीने लगी। रमणिका गुप्ता अपनी शर्तों पर जीवन जीती रही। प्रभा खेतान विवाह संस्कार को खतरा बताते हुए अपने प्रेम को वरणकर जीवन जीती रहीं। निर्मला जैन भी राजनीति से उभर कर अपनी स्व पहचान बनाने में सक्षम रही। अहिल्या मिश्र अनजान स्थान पर अपने अस्मिता की स्थापना कर एक नई पहचान बना पाई है। उपरोक्त सभी आत्मकथाओं से गुज़रते हुए यह स्पष्ट होता है कि पुरुष वर्चस्व के क़ैद में जकड़ी स्त्री अपने स्वत्व के लिए अपने मान-सम्मान के लिए अपने अंतर्मन के स्त्री को प्रबल, सबल करती है। एवं उनका आत्मविश्वास एवं साहस उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि 21वीं एवं 22 वी सदी के आरंभिक दशकों में नारी आत्मकथाओं के बीच स्त्री के सफल एवं सशक्त रूप उभर कर एक नई स्थापना करने में सफल एवं सक्षम हुए हैं। ये सभी नारियां अपने अधिकारों के प्रति जागरूक एवं अपनी अस्मिता के लिए बड़ी चुनौती का सामना सामना करने से नहीं हिचकिचाती है। सभी स्वतंत्रता, स्वावलम्बन आत्मनिर्भरता एवं नारी अस्मिता को शिक्षा के साथ अर्थायित करती है।

संदर्भः-

1. सभी विवेच्य आत्मकथाएँ
2. प्रभा खेतान - अन्या से अनन्या तक
3. मन्नू भंडारी - एक कहानी यह भी
4. मैत्रेयी पुष्पा - कस्तूरी कुंडल बसै, गुड़िया भीतर गुड़िया
5. निर्मला जैन - जमाने से हम
6. रमणिका गुप्ता - अपहुदरी
7. कौशल्या बैसंत्री - दोहरे अभिशाप
8. कृष्णा अग्निहोत्री - लगता नहीं है दिल मेरा
9. अजीत कौर - कूड़ा कबाड़
10. चंद्रकिरण सौनरेक्शा - पिंजरे की मैना
11. डॉ. अहिल्या मिश्र - दरकती दीवारों से झांकती ज़िंदगी

कृति–चर्चा

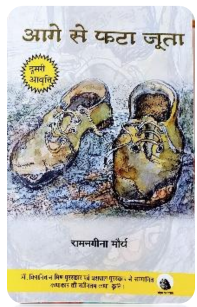

भावनाओं, संवेदनाओं और दार्शनिकता का सम्मिश्रण

आगे से फटा जूता (कहानी-संग्रह), राम नगीना मौर्य, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ

अंजनी श्रीवास्तव

ए-223, मोरया हॉउस, वीरा इंडस्ट्रियल एस्टेट, ऑफ न्यू लिंक रोड, अंधेरी वेस्ट, मुंबई- 400053
मो. 9819343822

आपको सड़क के किनारे और कूड़े करकट की ढेर में पड़ा हुआ नजर आ सकता है। संवेदनशील व्यक्ति के अलावा कोई उसे तवज्जो नहीं देता, क्योंकि वह आदमी के संघर्ष का चश्मदीद गवाह होता है। वह एक लंबे समय तक आपके पांवों से लिपटा उनकी सुरक्षा करता रहता है। जीर्ण-शीर्ण अवस्था को प्राप्त होते ही आप उसे त्याज्य बना देते हैं। एक प्रबुद्ध लेखक उसकी दुरावस्था देखकर व्यथित हो जाता है और उसे उसमें भी बहुत कुछ दिखाई पड़ने लगता है ।अपना लेखन धर्म निभाने के लिए राम नगीना मौर्य ने 'आगे से फटा जूता' को कथा -संग्रह में मौजूद बाकी कहानियों का नेतृत्व सौंपकर अपनी ईमानदारी का परिचय दिया है। श्री राम नगीना मौर्य की इसके पूर्व भी कुछ कहानी- संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। अब तक उन्होंने अच्छी -खासी ख्याति भी अर्जित कर ली है और कई

महत्वपूर्ण पुरस्कार भी हासिल किए हैं। कथा संग्रह 'आगे से फटा जूता' अपने सटीक नामकरण के जरिए लेखक की संवेदनशीलता और बौद्धिकता का परिचायक बनने का महती कार्य कर जाता है। नजाकत और नफासत के शहर लखनऊ में रहते हुए भी कथाकार उस मुकद्दस मिट्टी के सीधे संपर्क में हैं, जिसे हम गांव छोड़ते ही भूल जाते हैं।
इस कथा संग्रह में कुल ग्यारह कहानियां है ।संख्या ग्यारह को एक शुभ अंक माना जाता है ,जो इस संग्रह को अपार लोकप्रियता दिलाने का संकेत देता है।

जिंदगी के आईने में अपने अनुभवों का अक्स वो हर आदमी देखना चाहता है, जिसके अंदर दूसरों के दर्द से स्पंदित होने वाला एक नरम दिल होता है। इस संग्रह की हर कथा के पात्र अपनी सरलता, साफगोई और संदेशों के ईंट गारों से पाठकों के जेहन में अपना आशियाना बना लेते हैं। जिंदगी के सारे पेंचोखम इन कथाओं के जिस्म में आबाद हैं। 'ग्राहक देवता' में फल विक्रेता शकूर भाई की इंसानियत झलकती है, जो व्यवसाय करते हुए भी अपने ग्राहकों को किसी तरह का नुकसान होने देना नहीं चाहते। ग्राहक उनके लिए बड़े महत्वपूर्ण हैं। अगर वो किसी कारणवश दुकान में आकर लौट जाएं तो उन्हें बहुत दुख होता है। शकूर भाई अपनी महानता का स्तूप तब खड़ा कर देते हैं, जब उनका एक ग्राहक उनको हुए नुकसान की भरपाई हेतु अपनी जरूरत से ज्यादा फल खरीदना चाहता है। उन्हें इस बात की भी चिंता है कि ग्राहक द्वारा खरीदे गए फल खराब होकर ग्राहक का नुकसान न कर दें। वैसे अब दुनिया में ऐसे शकूर भाई होंगे भी कितने? एक को तो आखिर लेखक ने पकड़ ही लिया है। 'पंचराहे पर' कहानी में लेखक लोगों की भीड़, उनकी फितरत, मोलभाव करने की आदत और दूसरों की कमियों पर टिप्पणी करने के मानवीय स्वभाव का सजीव चित्रण किया है। ऐसा लगता है, जैसे पाठक उस पंचराहे पर खड़ा सब कुछ अपनी आंखों से देखता हुआ वहां मौजूद लोगों से गुफ्तगू कर रहा है। चौराहे से आगे पंचराहे की परिकल्पना भी लेखक की ही लगती है।

इस पुस्तक की तीसरी कहानी 'लिखने का सुख' यद्यपि लम्बी है, पर इसे पढ़ते हुए कवियों के बारे में प्रचलित जुमला 'जहां न जाए रवि वहां जाए कवि' बार-बार याद आने लगता है। यह जुमला लेखकों पर भी मौजूं बैठता है। राम नगीना जी ने मानव मन में चल रही हलचलों का सूक्ष्म और बहुत ही बेहतरीन विवेचन किया है। कहानी की घटनाएं एकदम सामान्य

हैं। स्कूटर का स्टैंड पर होना, सड़क पर चलना ,उसका बिगड़ना, उसकी मरम्मत ,टंकी में पेट्रोल न होना और दूसरों के घरों में झांकने के आदी लोगों को भी लेखक ने बहुत करीब से पहचाना है। अभिव्यक्ति की बारीकियां देखने के लिए इस किताब को पढ़ना जरूरी है। 'सांझ सवेरा' जीवन के उतार-चढ़ाव और सुख -दुख की नैया खेता हुआ पाठकों से रूबरू होता है। आदमी की छोटी- मोटी इच्छाओं के जगने की आहट भी लेखक को मिल जाती है। लेखक इस अंदाज में पात्रों का चरित्र -चित्रण कर रहा है ,जैसे उनकी हर क्रिया लेखक के निर्देश पर ही संपादित होती हो। 'उठ मेरी जान' में लेखक ने अपने स्कूली दिनों की सहपाठिनी गौरी के माध्यम से उसके दुख और पीड़ा पर रोशनी डाली है। एक लंबे समय से वो मायके में पड़ी है। ससुराल वालों के अलग टंटे हैं। मायके वाले भीतर ही भीतर खौल रहे हैं। उनके अंदर भी ईगो है ,मगर गौरी की जिंदगी इस तरह तो बेमानी ही रह जाएगी। लेखक उसकी मनोव्यथा को बड़ी सफाई से उकेरता हुआ उसे जीवन में कुछ विशेष कर डालने की स्थिति में पहुंचा देता है।

ऐसा कुछ भी नहीं कि लेखक ने कहीं से कोई नीरस विषय उठाकर पन्ने रंग दिए हों। उन्होंने कुछ भी चमत्कारिक, नूतन या अनछुए विषय पर हाथ नहीं रखा। आप दिन -रात जो देखते रहते हैं, मगर पकड़ नहीं पाते। आपकी जगह लेखक ने मुद्दों को उठा लिया है। लेखक किसी वर्ग विशेष को अपना विषयवस्तु नहीं चुनता और सबके साथ न्याय करता है और सबसे बड़ी बात यह है कि जो सबको नहीं दिखता, वो लेखक देख लेता है। जो किसी को ढूंढे नहीं मिलता, उसे लेखक अपनी मुट्ठियों में कैद कर लेता है। कब, कहां उसे क्या दिख जाए, क्या पता ? 'ढाक के तीन पात' में लेखक ने दफ्तरों में काम करने वाले लोगों की आदतों एवं फितरतों को कैप्चर किया है। बॉस की दहशत, नौकरी का डर, फिर भी नौकरी के प्रति लापरवाही, किसी आगंतुक या सहकर्मियों के साथ व्यवहार का जो खाका खींचा गया है, उससे हम प्रायः रोज ही रूबरू होते रहते हैं, मगर उन्हें बटोर कर अपनी रचनात्मक झोली में रखने का काम इस पुस्तक का रचयिता बड़ी सफाई से कर लेता है। 'ग्राहक की दुविधा' ग्राहकों पर केंद्रित दूसरी कहानी है। 'ग्राहक देवता' में ग्राहकों के प्रति एक फल विक्रेता की ईमानदारी दिखती है तो प्रस्तुत कहानी में लेखक विक्रेताओं के अलग-अलग चरित्र से परिचित कराता है। इसमें सब्जी वाली, मोची आदि के अपने-अपने जलवे बिखेरते दिखते हैं। ग्राहक की दुविधा यह है कि वो

किससे खरीदे, मगर सही चीज खरीदे। इस दुविधा से हम रोज दो-चार होते रहते हैं। लेखक ने कल्पनिकता को कहानियों में तनिक भी प्रश्रय नहीं दिया। पाठक इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि ग्यारह की ग्यारह कहानियों में वही सब है, हम रोज जिससे रूबरू होते रहते हैं। 'ऑफ स्प्रिंग' में लेखक ने टॉयलेट, कमोड और पर्दे को जोड़कर एक अनूठे विषय पर ही अपनी लेखकीय हुनर दिखा दी है।

'गड्ढा' एक तरह से एक गढ़े की आत्मकथा ही है। गड्ढे से परेशान सभी हैं, मगर गड्ढा भरने के लिए कोई तैयार नहीं होता। लेखक ने इस कहानी में पगडंडियों, सड़क, डिवाइडर, एल-मोड़, स्पीड ब्रेकर सबको लपेटे में ले लिया है। आप इनमें से हर कहानी से और बड़ी आसानी से अपना सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। 'परसोना नॉन ग्राटा' का सामान्य अर्थ होता है- वह व्यक्ति जो स्वीकृत न हो। इस कहानी में लेखक ने मोबाइल के कीड़े लोगों, जिनको फोटो खींचने- खिंचवाने और सोशल मीडिया पर डालने का जुनून सा होता है, उन पर फोकस किया है और उनके क्रियाकलापों का वर्णन करते हुए अंततः उनकी इस लत को खारिज भी कर दिया है। अब बारी है 'आगे से फटा जूता' पर कुछ कहने की। यह कथा -संग्रह की सर्वाधिक लंबी और प्रतिनिधि कहानी है।अगर इसमें दम न होता तो किताब का उन्वान न बनता। 'आगे से फटा जूता' ने आदमी का सारा भार सहते हुए उसे लंबा सफर कराया है। उसके पांव की रक्षा की है। जीवन तो सबकी जानी है। जब हम जूते खरीदते हैं तो विक्रेता उसकी लाइफ कितनी हो सकती है, यह भी हमें बताता है ।यानी उसकी भी लाइफ होती है। कुछ लोग अपनी मजबूरियों की वजह से उसका परित्याग नहीं कर पाते। 'आगे से फटा जूता' सबके नसीब में होता भी कहां है ? आदमी कहां -कहां गया, यह जूते को ही पता होता है। दूसरों को लंबी सफर पर ले जाने वाले जूते का अंतिम सफर बतौर एक लावारिस पूरा होता है।

प्रस्तुत कहानी-संग्रह भावनाओं, संवेदनाओं और दार्शनिकता का सम्मिश्रण है। पुस्तक पहली फुरसत और एक बैठक में पढ़ी जाने योग्य है। विचारों के तिनकों को जोड़-जोड़ कर एक कहानी या पुस्तक का आकार देना कोई साधारण काम नहीं। पाठकों के लिए इसे पढ़ना इसलिए जरूरी है, क्योंकि इसकी ग्यारह की ग्यारह कहानियां आपकी ही हैं। अंततः वास्तविकताओं से वाबस्ता एक पठनीय और संग्रहनीय किताब।

साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे

वक्त की आंधियां आओ सह लें चलो
लड़खड़ाते कदम फिर संभल जाएंगे
आओ हम ही चलो आज झुक जाएंगे
टूटते रिश्ते फिर से संभल जाएंगे।।

रिश्तों के खेत में हो उपज प्रेम की
खुशियों के उर्वरक से ही हरियाली हो
काट लें आओ मिलकर फसल प्रेम की
मन के खलिहान फिर से संवर जाएंगे।।

जो कभी थे हमारे वो अब क्यों नहीं
प्रीति सच्ची थी पहले तो अब क्यों नहीं
आओ छोड़ो शिकायत ख़तम करते हैं
आज फिर पहले जैसे निखर जाएंगे।।

अपनों से खेद ज्यादा उचित भी नहीं
रख लो मत भेद मन भेद फिर भी नहीं
अपनों से जीत जाना भी इक हार है
हार मानो चलो एक हो जाएंगे।।

सच्ची निष्ठा प्रतिष्ठा सदा प्रेम से
जीवन में बस प्रगति अपनों के साथ से
एक जुटता से ही मिलता संबल सदा
साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे।।
साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे।।

विजय कनौजिया

काही, अम्बेडकर नगर- 224132, मो. 9818884701

समय साक्ष्य

(एक)

आजकल कानों में आवाज़ें बहुत आती हैं
इधर से चीखने, रोने, विलाप करने की,
उधर से धमकियाँ, और गालियाँ रंजिश से भरी
वहाँ से लूट लो, पकड़ो इसे, अब छोड़ना मत
यहाँ से मार दो, दफ़्ना दो, जला दो सब कुछ
कहीं से रख भी ले, संभाल ले, की खुसरफुसर
कहीं से वोट दो, लो जीत गये, के नारे
उस तरफ़ से कि, कल तुमको देख लेंगे हम
इस तरफ़ से कि ,हम सरकार हैं सबके मालिक
आजकल कानों में आवाज़े बहुत आती हैं।

(दो)

रात भर चीखता, चीत्कार करता है जंगल
पेड़ मुर्झाये हैं, तालाब पड़े हैं सूखे
फूल खिलते नहीं, बरसों से इधर घाटी में
बाघ और नीलगाय, दौड़ते नहीं दिखते
आते हैं गाड़ियाँ, लेकर बहुत शिकारी अब
ट्रकों में भरते हैं शीशम के कटे पेड़ों को
गाँवों कस्बों में आ रहे हैं जानवर सारे
रास्ते खो चुके, डामर की चिकनी सड़कों में
शिकारियों का है अड्डा कि, जो ये होटल है
रात भर चीखता, चीत्कार करता है जंगल।

(तीन)

सुबह के वक़्त, ये पर्वत विलाप करता है
निकाले जा चुके, पत्थर तमाम खानों से
कूटती टूटती हैं रोड़ियाँ, क्रेशर में रोज़
चल रही हैं मशीनें, यहाँ पे रात औ' दिन
शहर बसते हैं पहाड़ों को काट कर सारे

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

झरने अब प्यास बुझाते हैं पूँजीपतियों की
अब नहीं जाते, नौज़वान आदिवासी वहाँ
सिर्फ़ मज़दूर हैं सौ रुपया रोज़ के वे बस
मर चुका इश्क़, जो लोगों को पहाड़ों से था
सुबह के वक़्त ये पर्वत विलाप करता है।

(चार)
नदी की सिसकियाँ, सुनता हूँ दोपहर में मैं
हाय,वह सूख चुकी है, अतल में गहरे तक
कहीं नहीं है, अब जल-धारा का प्रवाह कोई
आर्द्रता तनिक भी, नहीं है जलती आँखों में
रेत है रेत, बस दहकती हुई चारों तरफ़
राहगीरों के कंठ, तर भी करे तो कैसे
खुद नदी जब कि, अपनी रूह तलक़ प्यासी है
बन रहा जैसे, मरूस्थल है दूर तक केवल
सुन रहे हैं कि यहाँ, शहर नया बसना है
नदी की सिसकियाँ सुनता हूँ दोपहर में मैं।

(पाँच)
गूँजता है रुदन, खेतों में उधर रह-रह के
हो चुकी है ज़मीं, बंजर विदेशी बीजों से
घर के उपवन से भी, आती हैं कराहें अक्सर
कैक्टस हैं हरे, पौधे सभी हैं ठूँठ वहाँ
जैसे हर ओर है वातावरण शोकाकुल-सा
पेड़ों से पंछियों के, घोंसले भी ग़ायब हैं
हवा के नाम पे, उठती हैं आँधियाँ एकदम
बारिशें जहर की, ढाती हैं कहर तूफ़ानी
किसान, खुदकशी करने लगे हैं गाँवों में
गूँजता है रूदन, खेतों में उधर रह-रह के।

(छह)
आहें आती हैं,गले घुट रहे हैं गलियों के
सडाँध मारती हैं, नालियाँ शहर भर की

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

सड़कों पे शोरोगुल, हड़कम्प, आपाधापी है
शहर की साँसों में है, चिमनियों का काला धुँआ
कचरे के ढ़ेर हैं हर ओर, सियासत की तरह
खून में लिथड़े, रास्तों पे आना-जाना है
भीड़ में लुप्त हैं, लाचार-से जन-पथ सारे
राज-पथ हरियाली, औ' रौशनी में डूबे हैं
स्वच्छता-मिशन के चर्चे हैं कागज़ों में बहुत
आहें आती हैं, गले घुट रहे थे गलियों के।

(सात)
हरेक दिशा से विकल, आर्तनाद आता है
धर्मोमज़हब हैं जैसे, सबसे बड़े आतंकी
सुन रहे हैं कि अब, ग्लोबल विलेज है दुनिया
किन्तु सब कुछ, सिमट रहा है स्मार्ट-सिटी में
काम होते हैं दफ़्तरों में, डिजिटल सारे
आदमी कार्ड और डिजिट में सिमटे जाते हैं
पूँजी और बाहुबल के, साथ मिला कर छल को
नाम खुशहाली का, लेते हुये शैतान सभी
सारी इन्सानियत, का क़त्ल किये जाते हैं
हरेक दिशा से विकल आर्तनाद आता है।

कैलाश मनहर
मनोहरपुर (जयपुर-राज.), 303104
मो. 9460757408

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

नवीन माथुर पंचोली की ग़ज़लें

जो बातों के सच्चे हैं।
चुप्पी साधे बैठे हैं।

बड़ बोली आदत वाले,
बिन सोचे सब कहते हैं।

ये बतलाना मुश्किल है,
ऐसे हैं या वैसे हैं।

धोखें हैं सब आँखों के,
जो राहों पर देखे हैं।

तन हैं भीगे-भीगे पर,
मन तो रीते-रीते हैं।

नीम चढ़े मीठे फ़ल भी,
लगते थोड़े कड़ुवे हैं।

दिखलावे और झुठलावे,
सबने उनसे सीखे हैं।

हमारा और उनका मामला है।
जहाँ नज़दीकियों में फ़ासला है।

बढ़ाकर हाथ अपना खींच लेना,
सलीका ये किसी का दोगला है।

जवाँ होकर चले बैसाखियों पर,
सफ़र ये रास्तों को भी खला है।

मिटाना है बनाया काम जिसका,
सुना फ़ितरत का कोई ज़लज़ला है।

नहीं है आँख जिसकी टकटकी पर,
निशाना दूर बस उसका टला है।

मिले तो राह में सब लोग लेकिन,
हमारे साथ कोई, कब चला है।

नवीन माथुर पंचोली
अमझेरा, धार, म.प्र.
मो. 9893119724

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

Project Report

SLUMS AND MALNUTRITION IN INDIA

Ashima[1], Abhishek Soni[1], Bontha Evangelin[2]
Dr. Brijendra Kumar Agnihotri[3]

1. Students of BA Hons (Political Science), Lovely Professional University, Punjab
2. Student of BA Hons (Psychology), Lovely Professional University, Punjab
3. Assistant Professor (Hindi), Lovely Professional University, Punjab

Abstract
This study examined the root causes of malnutrition in slums, in different areas and causes. Data collected from the secondary sources are newspapers, articles, books, journal and censuses (government publications), websites. The research methodology included qualitative approach. The conclusion was described on the basis of the studies. This resulted causes like poverty, hygiene, urbanization, various physical health issues and mental health conditions and several disturbances in their life-cycle and economic cycle. The aim of the paper is to examine the causes, to unfold the fixes and tackle the issues.

Keywords: Malnutrition, urbanization, mortality, slum-dwellers, poverty.

Introduction: The urban poor in cities are the engines of the economies.
A slum is a large populated area which consists of low quality of infrastructure with poverty -stricken people. And this

infrastructure comes under a kind of illegal which defines unhealthy, unsafe homes. People in slum areas have improper and unawareness of personal hygiene. Poverty and Urbanization are the main causes of slums. Most of the people are migrated to urban areas to earn their daily bread. As they can't afford the expenditure for the better living facilities in the urban locality. So, they were being pushed away to the edge of the city. Every sixth urban Indian lives in slums who is unfit for human habitation. Slums are common, occupying 65% of the Indian towns. These became the centers for disease causing, pollution and unhygienic conditions.

Before independence of India, birth and mortality rates were at the same level. After India's independence in 1947, there was a huge rise of slums with which population has tripled. Since 1966, Indian government neglected by not seeming this as a major problem. Health was ignored by the policy makers and the slums were increased rapidly and spread all over India. In 1980, slum- dwellers occupied half of the India's entire population. For the first time in the history, more

people live in cities than rural areas. India ranks Third in largest slums and one of the Asia's largest slums which is Dharavi. It was founded during British colonial era in 1884 due to expulsion of industries and residence from the peninsular city centers by the colonial government and migration of villagers.

People come to cities from the villages to run their living and do various works. With their small businesses they generate an annual turnover of about $1billion from only Dharavi slum in Mumbai. Villagers seeks jobs in urban areas for low wages with which they struggle to get their daily bread. Practices poor hygienic livelihood. Poverty is directly proportional to Malnutrition. Poverty produces conditions of malnutrition by reducing the economic potential of the people. Malnutrition has various causes like hunger, poverty, unawareness in dietary choices, illiteracy, difficult to get food, physical and mental conditions and unhygienic practices.

Food security is main lead for malnutrition which connected to low income, low income means low literacy in their family and low hygiene. Low hygiene leads to health issues may be chronic which also a lead to malnutrition. So, the causes of malnutrition inter linked with one another.

Food security indicates not having enough food to eat(quantity) and not having enough healthy food to eat(quality). And poor hygiene like water, food, home environment are all sources for malnutrition. Improper hygiene makes an individual targeted to chronic diseases which ends in damaging the intestine and harmful for body makes the body difficult to absorb nutrients. Poverty and unawareness of nutritious diet makes low nutritional level in an individual can lead to undernutrition. Could not afford the food quantity, medical expenses and right food due to poverty. Not maintaining a tidy environment results in diseases. Focusing on food and hygiene we can get the chance to resolve the problem of malnutrition.

Research Methodology

The methodology which is used in this paper is the most suitable approach considered. Data for this paper has been collected through secondary sources only. Secondary sources used includes various articles from scholarly, previous conducted research, and the data from government sources. All the resources are systematically used in the paper and are applied to fulfil the objectives of the paper.

Literature Review

As explained by the United Nations, slum conditions can be defined as inappropriate housing conditions, an insufficient area to live, un- clean water, lack of sanitation and basic services, and zero protection against forced evictions. (1, 2, 3). Worldwide, total population of 1 billion resides in slums

(4) and out of which India is a country with highly prevalent under nutrition strength (high- risk group) (5). Among India, half of the population of Mumbai city resides in slums in year 2011 (3). Statistics presented by Food and Agricultural Organization (FAO), indicates that sub- Saharan countries like Africa, has highest prevalence of hunger whereas India has highest number (one quarter) of undernourished (6) population in the world. The statistical data of undernourished population in India during year 2014- 2016 id 15% of India's total population or 194.6 million (3).

Hunger and under nourishment, being a one serious threat in themselves, also tends to cause several other problems. Across the globe nearly 155 million children (22.9%) are having stunted growth, whereas 52 million children (7.7%) are wasted (19). According to National Family Health Surveys (NFHS), in India in the year 2015- 2016 (7), approx. 38% (urban 31%; rural 41%) of children have stunted growth i.e., they have low height according to their age; 21% (urban 20%; rural 22%) of children are wasted i.e., low weight in accordance to their height; and 36% (urban 29%; 38%) of children are underweight. Further, it is noticed that 2% of children population were overweight in year 2006 (8), and 58% of children (urban 56%; rural 59%) are anemic between the age of 6 months to 59 months (9).

Goudet et Al. in a review stated that, accurate and effective understanding of variables that affects malnutrition is highly necessary to develop interventions and update practitioners and decision- makers (10). These variables could be distinguished in two different ways, first are early life determinants i.e., height, age, birth weight and second, current factors i.e., child's current age, income of family, illnesses, or family size (10). Several studies on sex-differences has shown differences in health and nutritional

status. The studies indicates that male children are at more risk of poor health outcomes, as compared to female children both in terms of metrics of poor growth (10) and immune functions (16).

The malnutrition causes several harmful effects on adults also. For instance, in the age group of 15- 49 years, body mass index (BMI) or ratio of weight for height of sizeable proportion of women (23%), and men (20%) is observed to be declining below the standard norms (7). The sudden need to address and resolve the issue of under nutrition is necessary as several evidences states that under nutrition could be a cause of serious problem like tuberculosis (11). Lack of iron in food, indicates the quality of food people in slums consume in accordance to nutrition, can cause anemia in population. 53% women and 23% men in age group of 15- 49 years are found to be anemic (12). It was also observed that approx. 21% of women and 19% of men are either overweight or obese (13). According to Siddiqui and Donato, points out to the dramatic fact that increase in the prevalence of obesity could lead to various non-communicable disease (NCB) such as diabetes and cardio vascular diseases (12). India has launched several nutritional programs to help those who are under- weight or over-weight. For instance, Integrated Child Development Service (ICDS) was launched to provide supplemental ration to 0- 6 years of children to improve their nutritional status in the slums of Mumbai (15), however, it was observed that conditions remained the same as before the scheme was launched (16).

Improved nutrition, proper education and eradicating inequality are the key factors required to minimize malnutrition and maximizing good health (19). The proper nutrition is necessary not only for physical health but also for

mental, emotional and cognitive health. Together, all these aspects made us a complete healthy and flourished being. Proper nutrition is needed for early life only. A child of one day also need diet rich in nutrients to grow healthily. Proper nutrition makes our immune system healthy which protects us from various diseases, without even our knowledge. As important the child's nutrition is, maternal nutrition is also highly important. As a healthy mother will give birth to a healthy child hence reducing the chances of obesity or under nutrition or other diseases in the child, hence ensuring a safe future for the child (21).

Objectives:

- To understand the effects of malnutrition
- To analyse the root cause of malnutrition
- To spread awareness on the food intake and nutrition levels.

Result & Discussion

From the above review of literature, it can be interpreted that people in the slum suffer due to inadequate amounts of food which leads to malnutrition. It can be observed that due to insufficient food, people tend to eat stale food which is not fresh and sometimes it is used for many days as a result of which many infectious diseases take place. The quality of the food people generally eat in slum regions is also terrible. As the houses in the slum region are very closely packed, it becomes the hub of diseases. The poor hygiene there leads to many deaths. Poor healthcare facilities and ignorance lead to a higher mortality rate. Lack of access to clean water, inadequate nutrition, unsafe food preparation practices such as cooking with open fires or using contaminated utensils, inadequate sanitation facilities that allow for contamination of food by feces, lack of education on proper nutrition and

hygiene practices including washing hands, etc., these all leads to malnourishment in the body, and it is home for many diseases. Women generally skip meals to provide food to others which causes malnutrition in their body and especially pregnant woman becomes vulnerable at this stage of life as a result, it affects their body severely. Due to the lack of awareness, they have normalized this system, but it affects their physical health drastically.

It has also been seen that children sleep hungry for many days due to lack of food and poverty. Malnutrition is more common among children as they are vulnerable to many diseases. As they are in the early developmental stage, they need proper food and nutrition to build their immune system. And when they don’t get proper meals then it leads to poor growth, stunted development, and low immunity which makes them vulnerable to diseases like Kwashiorkor, Marasmus, and Anemia. Malnutrition also causes stunting, which reduces the length and height of children by 2-3 inches. Stunted kids are less likely to be able to attend a school or work full time because they do not have enough energy to do so. And stunted kids are more likely to die before their fifth birthday according to the sources provided by WHO. It can also cause problems with brain development and make them prone to infections or illnesses such as diarrhea or pneumonia.

Almost every person in the slum region lacks basic nutrition and it leads to deficiency in their body. It affects their overall health and they become susceptible to various kinds of diseases. it can also be observed that women who are pregnant deficits proper nutrition which affects their health and their infant's health and that’s why the maternal mortality rate and infants’ mortality rate is so high, especially in India. Lack of awareness also leads to malnutrition as

people in this region are deprived of proper education due to poverty. Generally, as soon as the children hit puberty, they start working to earn money. Employment is also low in this area as the population is so high and day by day it increases due to unwanted pregnancy and many more. They are mostly daily wagers and the money they earn is not sufficient to manage the household. They are also unable to even afford the essentials due to the increase in rates as well as the sudden inflation caused by the ongoing global circumstances.

Conclusion

Malnutrition is a global problem. The most common form of malnutrition is underweight, which affects 3.6 billion people worldwide and accounts for more than half of all deaths in children under five years old (UNICEF). The main causes are poverty, poor diet, and less access to nutritious food. In slums, malnourishment often occurs because people do not have enough money to buy food and are forced to eat less nutritious foods. This causes their bodies to become weak and unable to fight off illnesses. the majority of slum children are malnourished. According to the World Health Organization (WHO), about 1 billion people are suffering from malnutrition worldwide. Mainstream media does not showcase these kinds of things due to corruption and politics, and they also are unable to make their way into these things as it is not reachable to them.

So, in order to eliminate malnourishment from the root, spreading awareness would be the first and foremost thing, immunization, right political schemes, a better health care system that needs to be done in society. Though the government has launched many schemes in order to provide nutritious food to the public, it can be seen that it is misused by society. Malnourishment is a very difficult thing to eradicate when people do not help in eradicating it. It is also

seen that packaged food is used more by the public as it is accessible, but it is harmful to the body. So, in order to eradicate it, spreading awareness about what kind of food people should intake, the causes of malnutrition, early treatment, aware of its effects is very important in the people.

Reference

1. UN-HABITAT. *The Challenge of Slums, Global Report on Human Settlements.* London and Sterling, VA: Earthscan Publications Ltd (2003).
2. Nolan LB. Slum definitions in Urban India: implications for the measurement of health inequalities. *Popul Dev Rev.* (2015) 41:59–84. doi: 10.1111/j.1728-4457.2015.000
3. Orgi. "Housing Stock, Amenities & Assets in Slums - Census 2011." *Census of India: Housing Stock, Amenities & Assets in Slums - Census 2011*, https://censusindia.gov.in/2011census/hlo/Slum_table/Slum_table.html.
4. "The Millennium Development Goals Report 2015." *Millennium Development Goals Report*, 2016, https://doi.org/10.18356/6cd11401-en.
5. WHO. *The Global Prevalence of Anaemia in 2011*. Geneva: World Health Organization (2015).
6. "Un Womenwatch | Rural Women - Facts & Figures: Rural Women and the Millennium Development Goals." *United Nations*, United Nations, https://www.un.org/womenwatch/feature/ruralwomen/facts-figures.html.

7. Bhatia, Neena, et al. "Analysis of Key Nutrition Indicators Based on National Family Health Survey, NFHS 4 (2015-16) and NFHS 5 (2019-2021)." 2022, https://doi.org/10.31219/osf.io/r9ybf. So far, four rounds of surveys have been conducted, i.e., NFHS-1

(1992-93), NFHS-2 (1998-99), NFHS-3 (2005-06) and NFHS-4 (2015-16).

8. Research Institute (IFPRI), International Food. “Global Nutrition Report 2015: Actions and Accountability to Advance Nutrition and Sustainable Development.” 2015, https://doi.org/10.2499/9780896298835.
9. Sharma, Himani, et al. “Socio-Economic Inequality and Spatial Heterogeneity in Anaemia among Children in India: Evidence from NFHS-4 (2015–16).” *Clinical Epidemiology and Global Health*, vol. 8, no. 4, 2020, pp. 1158–1171., https://doi.org/10.1016/j.cegh.2020.04.009.
10. Goudet, Sophie, et al. “Interventions to Tackle Malnutrition and Its Risk Factors in Children Living in Slums: A Scoping Review.” *Annals of Human Biology*, vol. 44, no. 1, 2016, pp. 1–10., https://doi.org/10.1080/03014460.2016.1205660.
11. Bhargava, Anurag. “Undernutrition, Nutritionally Acquired Immunodeficiency, and Tuberculosis Control.” *BMJ*, 2016, p. i5407., https://doi.org/10.1136/bmj.i5407.
12. Siddiqui, Md Zakaria, and Ronald Donato. “Overweight and Obesity in India: Policy Issues from an Exploratory Multi-Level Analysis.” *Health Policy and Planning*, vol. 31, no. 5, 2015, pp. 582–591., https://doi.org/10.1093/heapol/czv105.
13. “Role of ICDS Program in Delivery of Nutritional Services and Functional Integration between Anganwadi and Health Worker in North India.” *The Internet Journal of Nutrition and Wellness*, vol. 5, no. 2, 2008, https://doi.org/10.5580/415.
14. Huey, Samantha Lee, et al. “Prevalence and Correlates of Undernutrition in Young Children Living in Urban Slums of Mumbai, India: A Cross Sectional Study.” *Frontiers in Public Health*, vol. 7, 2019, https://doi.org/10.3389/fpubh.2019.00191.

15. Klein, S. L., et al. "Sex-Based Differences in Immune Function and Responses to Vaccination." *Transactions of the Royal Society of Tropical Medicine and Hygiene*, vol. 109, no. 1, 2015, pp. 9–15., https://doi.org/10.1093/trstmh/tru167.
16. "World Bank Group Joint Projects." 2017, https://doi.org/10.1596/27905.
17. Research Institute (IFPRI), International Food. "Global Nutrition Report 2016 from Promise to Impact Ending Malnutrition by 2030." 2016, https://doi.org/10.2499/9780896295841.
18. Desai, Vandana. "Dharavi, the Largest Slum in Asia." *Habitat International*, vol. 12, no. 2, 1988, pp. 67–74., https://doi.org/10.1016/0197-3975(88)90027-6.
19. Siddiqui, Faareha, et al. "The Intertwined Relationship between Malnutrition and Poverty." *Frontiers in Public Health*, vol. 8, 2020, https://doi.org/10.3389/fpubh.2020.00453.
20. Chaudhary, Pragati, and Mukta Agrawal. "Malnutrition and Associated Factors among Children below Five Years of Age Residing in Slum Area of Jaipur City, Rajasthan, India." *Asian Journal of Clinical Nutrition*, vol. 11, no. 1, 2018, pp. 1–8., https://doi.org/10.3923/ajcn.2019.1.8.
21. Huey, Samantha Lee, et al. "Prevalence and Correlates of Undernutrition in Young Children Living in Urban Slums of Mumbai, India: A Cross Sectional Study." *Frontiers in Public Health*, vol. 7, 2019, https://doi.org/10.3389/fpubh.2019.00191.
22. Aijaz, Rumi. "Preventing Hunger and Malnutrition in India." *ORF*, 24 Apr. 2018, https://www.orfonline.org/research/preventing-hunger-and-malnutrition-in-india/.
23. *(PDF) Nutritional Problems among Children in Urban Slum Area*. https://www.researchgate.net/publication/316430794_NutritioNal_Problems_amoNg_ChildreN_iN_urbaN_slum_area.

कृति-चर्चा

सहयोग आधार पर प्रकाश्य साझा पुस्तक समीक्षा संग्रह

सहयोग आधार पर प्रकाश्य साझा पुस्तक-समीक्षा संग्रह 'कृति-चर्चा' के लिए पुस्तक-समीक्षाएं आमंत्रित हैं। पुस्तक-समीक्षा किसी भी विषय-क्षेत्र से संबन्धित पुस्तकों की हो सकती हैं, किंतु उनकी भाषा हिंदी होनी चाहिए। पुस्तक समीक्षा की कोई निर्धारित शब्द-सीमा नहीं है, विषयानुसार वह छोटी-बड़ी हो सकती है।

प्रकाशन नियम-

1. सहयोग राशि 1000.00 रुपये है।

2. सहयोग राशि का भुगतान पुस्तक-समीक्षा के चयन के उपरांत करना है।

3. 'कृति-चर्चा' संग्रह का प्रकाशन सितंबर, 2022 माह में किया जाना प्रस्तावित हैं।

4. प्रत्येक लेखक को संग्रह की पाँच प्रति कोरियर/पंजीकृत डाक से प्रेषित की जाएंगी। यदि किसी लेखक को पाँच से अधिक प्रतियों की आवश्यकता हो तो वह अपनी सहयोग राशि में प्रति संग्रह 200.00 अतिरिक्त जोड़कर भुगतान करे।

5. पुस्तक-समीक्षा 31 अगस्त, 2022 तक ही स्वीकार की जाएगी।

6. प्रत्येक लेखक को पुस्तक-समीक्षा के चयन के पश्चात प्रकाशन सहयोग राशि 1000.00 रुपये का भुगतान करना होगा। इस भुगतान में लेखकों को प्रेषित करने पर लगने वाला डाकव्यय भी सम्मिलित है। यह भुगतान 'मधुराक्षर' के भारतीय स्टेट बैंक के खाता-क्रमांक 31807644508 (IFS Code SBIN0005396, MICRCode-212002004) में जमा करें। PayTM या GooglePay के माध्यम से भुगतान करने के लिए 9918-69-5656 मोबाइल नंबर को चुनें। भुगतान करने के पश्चात रसीद व्हाट्सप्प नंबर 9918-69-5656 पर प्रेषित करें।

- **किसी भी तरह का पत्र व्यवहार madhurakshar@gmail.com में करें, और विषय (Subject) में 'कृति-चर्चा' लिखना न भूलें।**